RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 फरवरी 2024
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 फरवरी 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 21
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 76
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

सुविचार

राम चमकते भानु समाना

छलांग लगाने वाला तोलता नहीं,
तोलने वाला छलांग लगाता नहीं।

प्रामाणिकता पर आगे बढ़ो।
अपने कार्यों के हजारों गवाह बनाने के बजाय
एक अपने मन को गवाह बनाओ।

धीमी गति अच्छी हो सकती है,
पर वह इतनी धीमी भी न हो कि
जीवन के अंत तक परिणाम ही न दे सके।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

हर समता शाखा हो महत्तम समता शाखा

सभी संघ/क्षेत्र यह सुनिश्चित करें कि हर समता शाखा शत-प्रतिशत उपस्थिति वाली हो। इसकी शुरुआत हमें रविवार 18 फरवरी 2024 की समता शाखा को महत्तम समता शाखा के रूप में मनाते हुए करनी है। इसी समता शाखा से महत्तम शिखर का आगाज हो। समय इस तरह से सुनियोजित हो कि आगे भी हर रविवार को होने वाली समता शाखा के साथ-साथ महत्तम शिखर की गतिविधियों पर विचार-विमर्श कर प्रत्येक संघ सदस्य, सकल जैन समाज व जैनेतर समाज को महत्तम शिखर के आयामों से जोड़ने का लक्ष्य प्राप्त कर सकें।

इसी के साथ स्थानीय संघ/क्षेत्र हर समता शाखा के बाद 15-20 मिनट समन्वय समिति की मीटिंग आयोजित कर साप्ताहिक प्रोग्रेस रिपोर्ट की समीक्षा कर आगे की कार्य योजना बनाएँ। महत्तम शिखर वर्ष में हर समता शाखा महत्तम समता शाखा हो, इसी विश्वास के साथ....

-राष्ट्रीय अध्यक्ष

।।आगमवाणी।।

चरणं हवइ सधम्मो धम्मो
सो हवइ अप्प समभावो।
सो राग रोस रहिओ जीवस्स
अणण्ण परिणामो।।

-मोक्ष पाहूड (50)

वास्तव में चारित्र ही सद्धर्म है। इस धर्म को आत्म-समभाव रूप कहा गया है। मोह व क्षोभ से रहित आत्मा का निर्मल परिणाम ही समता रूप है।

Actually, the Dharma is nothing but (right) conduct itself. It is reflected in the form of equanimity. Equanimity is nothing but the undeluded and undisturbed state of the soul.

सीयावेइ विहारं
सुहसीलगुणेहिं जो अबुद्धीओ।
सो नवरि लिंगधारी
संजमजोएण निस्सारो।।

-गच्छाचार (23)

जो सुखाकांक्षी अज्ञानी (मुनि) विचरण में शिथिलता वर्तता है, वह संयम बल से रहित केवल वेशधारी है।

The pleasure-loving monk, who is lax about his monastic tours (duties in general), is a sham of a monk - without monastic strength of character.

जहा सुणी पूइ-कण्णी,
णिक्कसिज्जइ सव्वसो।
एवं दुस्सील पडिणीए,
मुहरी निक्कसिज्जई।।

-उत्तराध्ययन (1/4)

जिस प्रकार सड़े हुए कानों वाली कुतिया जहाँ भी जाती है, वहाँ से निकाल दी जाती है, उसी प्रकार दु:शील, उद्दंड, मुखर और वाचाल मनुष्य भी सर्वत्र धक्के देकर निकाल दिया जाता है।

As a bitch with a festering ear is driven out from everywhere. So an unrighteous, roguish and voluble monk is driven out from everywhere.

कण-कुंडगं चइत्ताणं,
विट्ठं भुंजइ सूयरो।
एवं सीलं चइत्ताणं,
दुस्सीले रमई मिए।।

-उत्तराध्ययन (1/5)

जिस प्रकार चावलों का स्वादिष्ट भोजन छोड़कर शूकर विष्ठा खाता है, उसी प्रकार पशुवत् जीवन बिताने वाला अज्ञानी शील-सदाचार को छोड़कर दु:शील-दुराचार को पसंद करता है।

As s pig leaves the rice-husk and eats refuge, so does an ignorant monk with animal instincts leaves righteous conduct and revels in misconduct.

राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

धर्मदेशना

07 सच्चा मित्र
-आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.

12 संयम से विश्वास
-आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

14 परिवर्तन के पथ पर
-आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान सार

20 ऐसी वाणी बोलिए : मधुर वचन
-संकलित

23 श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला
-कंचन कांकरिया

25 श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र
-सरिता बैंगानी

संस्कार सौरभ

27 धर्ममूर्ति आनंदकुमारी -संकलित

34 धन की बेड़ियाँ तोड़ें तो
-आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

38 भावों का महासागर....
-डॉ. आभाकिरण गाँधी

40 ज्ञान व विनय के अभ्यास से....
-ऋषभ कुमार मुरड़िया

42 Historic Gathering in Jawad....
-Urja Mehta

44 जैन भागवती दीक्षा : एक अंतर्यात्रा
-श्रमणोपासक

47 ऊँचे-ऊँचे पाट पर गुरु सा विराजे
-श्रमणोपासिका

49 पतित पावन आचार्य
-सुरेश बोरदिया

भक्ति रस

11 आगमज्ञाता श्री रामेश
-लता बोथरा

41 अयोध्या हो या जावद....
-श्रमणोपासिका

52 अहो उल्लासित हैं दसों दिशाएँ
-संध्या धाड़ीवाल

विविध

31 बालमन में उपजे ज्ञान
-मोनिका जय ओस्तवाल

55 गुरुचरण विहार
-महेश नाहटा

चिंतन पराग

सम्मं भुयाइं पासओ

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

जिन व्यक्तियों को हम देख रहे हैं, उनमें अनेक विविधताएँ हैं। रंग-रूप, डील-डौल में तो अंतर है ही, ज्ञान व अनुभव भी सब के भिन्न-भिन्न हैं। इन सारी भिन्नताओं का कारण जीव द्वारा उपार्जित कर्म हैं। कर्मों के कारण जीव में विकार आया, भिन्नताएँ बन गईं। विकार दूर होते ही समग्र आत्माओं में समान रूप नजर आएगा और कोई भिन्नता नहीं रहेगी। यह ज्ञान-दृष्टि है। इस प्रकार का अनुभव ज्ञान-दृष्टि से ही संभव है। ज्ञान-दृष्टि तर्क से नहीं अनुभव से, अनुप्रेक्षा से प्रकट हो पाती है। ज्ञान-दृष्टि की पहचान है कि पहले स्वयं को जानना है। जो स्वयं का ज्ञाता बन गया, जिसने स्वयं को जान लिया, उससे दुनिया की समग्र आत्माएँ अनभिज्ञ नहीं रह सकतीं। उनके कर्म-विकार उससे अबूझ नहीं रह सकते। वह स्व-संवेदन के धरातल पर स्पष्ट जान पाएगा कि जैसे मेरे में कर्म विकार हैं, वैसे ही सभी संसारी आत्माएँ कर्म से अनुरंजित हैं। सभी में कर्म कार्य है। अधिकांशत: कर्म प्रेरित हैं। मुझे उनके कर्मों पर नहीं मूल स्वभाव पर ध्यान देना है। मूल रूप में देखने पर सबका सही स्वरूप ज्ञात हो पाएगा। यदि कर्मजन्य स्थितियों पर ही ध्यान बना रह गया तो आत्मा के मूल शुद्ध स्वरूप को जान पाना संभव नहीं होगा। स्वर्णाभूषणों में स्वर्ण है किंतु अभी उसका रूप आभूषणों के रूप में नजर आ रहा है। आभूषणों को आग आदि में तपाए जाने पर उनमें रहे हुए शुद्ध स्वर्ण को आसानी से जाना जा सकता है। जो स्वर्ण मिट्टी में पड़ा हुआ है, उसे भी शोधन प्रक्रिया से शुद्ध किया जाता है। मिट्टी अलग होते ही स्वर्ण शुद्ध हो जाता है। ऐसा ही स्वरूप कुछ कर्मों से बँधी हुई आत्माओं का है। कर्मों के कारण उनका रूप भिन्न-भिन्न बना हुआ है। कर्मों के अलग होते ही आत्मा अपने रूप में आ जाती है, जो सबका समान रूप है, कुछ भी अंतर नहीं है। यदि देहधारियों में हम उस रूप को देख सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं तो समझना चाहिए हम आत्म-ज्ञान को प्राप्त कर पाए हैं, अन्यथा अभी हमें उस ओर और प्रयत्न करने जरूरी हैं। 'सव्व-भुयप्प- भुयस्स, सम्मं भुयाइं पासओ' का रूप अपने अंतर् में जागृत करने का पुरुषार्थ करें।

कार्तिक कृष्ण 6, रविवार, 01-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर

SAMMAM BHUYAYIN PASAO

-Param Pujya Acharya Pravar 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

People we observe around us have diverse characteristics. Aside from variance in complexion, looks and body structure, there are differences in knowledge and experience too. The cause of these divergences is the 'karma' (say, impressions made on the soul in consequence of its thoughts and deeds) acquired by the soul. Thanks to 'karma', the soul became corrupted/distorted, and differences cropped up. Once the distortions are ironed out, all souls will appear alike. Differences would no longer endure. This is 'gyandrishti' (or, knowledge perception). Such experience is possible only via 'gyandrishti'. Now, 'gyandrishti' can arise not from logic but from experience, from meditation.

The touchstone of 'gyandrishti' is knowing oneself. One becoming the knower of oneself, one who has known oneself, cannot remain unacquainted with the gamut of mundane souls. Their deeds and distortions cannot be unbeknown to him. He would cognize clearly at the level of self-perception that, just as he is beset with twists of 'karma', all mundane souls are coloured by 'karma'. They all reflect 'karmic' action. They are all actuated by 'karma'. He has to bestow attention not on their actions but their basic nature.

Perceiving their basic aspect, their true nature will be known. With focus trained only on conditions of 'karma' and birth, it would not be possible to know the basic pristine nature of the soul. Gold is inherent in gold ornaments, but what is visible is gold in the form of ornaments. When the ornaments are heated and melted in fire, the resultant pure gold is easily discernible. Gold that is lying in gold-bearing ore can be extracted as pure gold through a refinement process. With the soil separated, gold becomes pure.

Similar is the nature of some souls bound up in 'karma'. Thanks to 'karmas' they appear diverse. Detached from 'karmas' all souls resume their self-nature, which is alike for all souls, with no difference at all.If we are able to discern that nature in embodied souls, and experience them in that manner, it may be supposed that we have attained to self-knowledge; else, further efforts are necessary towards that attainment. We ought to strive for awakening within us the following perspective.

"Savva-bhuyapp-bhuyass, sammam bhuyayin paasao"

(Or, one looking upon all creatures as akin to one's soul)

Sunday, 01-11-2015 **Courtesy- Brahmakshar**

धर्मदेशना

सच्चा मित्र

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

एक राजा का प्रधान था। राजा उसका खूब आदर-सत्कार करता था। प्रधान विवेकवान था। उसने विचार किया-

राजा जोगी अगन जल, इनकी उल्टी रीत।
बचते रहियो परसराम, थोड़ी पालो प्रीत।।

राजा, जोगी, अग्नि एवं जल से ज्यादा प्रीत नहीं रखनी चाहिए। ये जब नाराज हो जाते हैं तो अन्य कुछ विचार नहीं करते। ऐसा विचार कर प्रधान ने एक नित्य-मित्र बनाया। प्रधान अपने इस मित्र के संग खाता-पीता और रहता था। वह समझता था कि नित्य-प्रति मित्र मेरी आत्मा है। इस प्रकार प्रधान अपने मित्र को बड़े प्रेम से रखने लगा।

एक मित्र पर्याप्त नहीं है, ऐसा विचार कर प्रधान ने दूसरा मित्र भी बनाया। यह मित्र था पर्व-मित्र। किसी पर्व या त्योहार के दिन प्रधान उसे बुलाता, खिलाता-पिलाता और गपशप करता था। प्रधान ने एक तीसरा मित्र और बनाया जो सेन-जुहारी मित्र था। जब कभी अचानक मिल गया तो उससे जुहार कर लिया करता था। इस प्रकार प्रधान ने तीन मित्र बनाए।

समय ने पलटा खाया। कुछ चुगलखोरों ने राजा के कान भर दिए कि प्रधान ने अपना घर भर लिया है। राज्य को हानि पहुँचाई है। इन बातों से राजा प्रधान पर कुपित हो गया। राजा तो वैसे ही कान के कच्चे होते हैं। उसने सैनिकों को हुक्म दिया कि प्रधान के घर पर पहरा लगा दो और प्रात:काल होते ही उसे दरबार में हाजिर करो।

प्रारंभ में राज्य-व्यवस्था प्रजा के उद्देश्य से की गई थी। लोगों ने अपनी रक्षा के लोभ से राजा की शरण ली थी। मगर धीरे-धीरे राजा लोग स्वार्थी बन गए। पहले राजा और प्रजा के स्वार्थों में विरोध नहीं था। राजाओं का हित प्रजा का और प्रजा का हित राजा का हित था। मगर राजाओं में विलासिता और स्वार्थ भावना के प्रवेश पश्चात् प्रजा के हित का घात करके भी राजा अपना स्वार्थ सिद्ध करने लगे। तभी से राजा और प्रजा के बीच संघर्ष का सूत्रपात हुआ। आज वह संघर्ष अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है और राजा के हाथों से शासन-सूत्र हट रहा है। राजतंत्र मरणासन्न हो रहा है और प्रजातंत्र का उदय हो रहा है।

चुगलखोरों ने झूठे-झूठे गवाह पेश करके सिद्ध कर दिया कि प्रधान दुष्ट है। राजा ने प्रधान को गिरफ्तार करने की आज्ञा दे दी। इधर राजा ने आज्ञा दी और उधर प्रधान के किसी हितैषी ने प्रधान को राजाज्ञा संबंधी सूचना देकर कहा- ''गिरफ्तारी में देर नहीं है। इज्जत बचाना हो तो निकल भागो।''

प्रधान अपनी आबरू बचाने के उद्देश्य से सैनिकों से छिपते हुए घर से बाहर तो निकल पड़ा, मगर सोच-विचार में पड़ गया कि अब कहाँ जाऊँ और किसकी शरण लूँ? अंत में उसने सोचा- ''मेरे तीन मित्र हैं। तीन में से कोई तो शरण देगा ही। मगर मेरा पहला अधिकार नित्य-मित्र पर है। पहले उसके पास ही जाना योग्य है।''

प्रधान अंधेरी आधी रात में नित्य-मित्र के घर पहुँचा। उसके घर का दरवाजा खटखटाया। मित्र ने पूछा- ''कौन है? प्रधान ने दबी आवाज में कहा- धीरे बोलो धीरे! मैं तुम्हारा मित्र हूँ।''

मित्र- ''मित्र कौन?''

प्रधान- ''तुम तो मुझे स्वर से ही पहचान लेते थे। क्या इतनी जल्दी भूल गए? मैं तुम्हारा मित्र हूँ।''

मित्र- ''नाम बताओ?''

प्रधान- ''अरे! नाम भी भूल गए! मैं प्रधान हूँ।''

मित्र ने किवाड़ खोलकर आधी रात के समय आने का कारण पूछा। प्रधान ने राजा के कोप की कथा कहकर कहा- ''यद्यपि में निरपराध हूँ, मगर इस समय मेरी कौन सुनेगा? इसीलिए मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। आगे जो होगा, देखा जाएगा।''

मित्र- ''राजा के अपराधी को मेरे घर में शरण! मैं बाल-बच्चे वाला आदमी हूँ। आपको मेरे हानि-लाभ का भी विचार करना चाहिए। राजा को पता चल गया तो मेरी मिट्टी पलीत हो जाएगी। अगर आप मेरे मित्र हैं तो मेरे घर से आपको तुरंत चले जाना चाहिए।''

प्रधान- ''मित्र! क्या मित्रता ऐसे ही वक्त के लिए नहीं होती? इतने दिन साथ रहे, खाया-पीया और मौज की, मगर आज संकट के समय धोखा दोगे? क्या आज इसी उत्तर के लिए मित्रता बांधी थी?''

मित्र- ''आप मेरे मित्र हैं, इसी कारण तो राजा को खबर नहीं दे रहा हूँ अन्यथा फौरन गिरफ्तार न करवा देता? अगर आप जल्दी रवाना नहीं हुए तो फिर लाचार होकर यही करना पड़ेगा।''

प्रधान- ''निर्लज्ज! मैंने तुझे अपनी आत्मा की तरह स्नेह किया और तू इतना स्वार्थी निकला! विपदा का समय चला जाएगा, मगर तेरी करतूत सदा याद रहेगी।''

बाहर रात्रि का घोर अंधकार था और प्रधान के हृदय में उससे भी घनघोर निराशा का अंधकार छाया हुआ था। उसे अपने पर्व-मित्र की याद आई। मगर दूसरे ही क्षण ख्याल आया जब नित्य-मित्र ने यह उत्तर दिया है तो पर्व-मित्र से क्या आशा की जा सकती है? मगर चलकर देखना तो चाहिए। इस प्रकार विचार कर वह पर्व-मित्र के घर पहुँचा। सारी घटना सुनने के बाद मित्र ने हाथ जोड़कर कहा- ''मेरी इतनी शक्ति नहीं की राजा के विरोधी को शरण दे सकूँ! आप भूखे हों तो भोजन कर लीजिए। वस्त्र या धन की आवश्यकता हो तो मैं दे सकता हूँ, मगर आपको स्थान देने में असमर्थ हूँ।''

प्रधान- ''मैं नंगा या भूखा नहीं हूँ। मेरे घर धन की कमी नहीं है। मैं तो इस संकट के समय शरण चाहता हूँ। जो संकट के समय सहायता न करे, वह मित्र कैसा?''

जे न मित्र-दुख होहिं दुखारी।
तिनहिं विलोकत पातक भारी।।

जो अपने मित्र के दु:ख से दुखित नहीं होते, उन्हें देखने में भी पाप लगता है।

मित्र- ''मैं यह नीति जानता हूँ, मगर राजविरोधी को अपने यहाँ आश्रय देने की शक्ति मुझ में नहीं है।''

प्रधान ने सोचा- ''हठ करना वृथा है। नित्य-मित्र जहाँ गिरफ्तारी कराने को तैयार था, वहाँ यह नम्रतापूर्वक उत्तर तो दे रहा है! यह विपत्ति मित्रों की कसौटी है।''

निराश होकर प्रधान सेन-जुहारी मित्र की ओर रवाना हुआ। उसने सोचा- ''इस मित्र पर अपना कोई अधिकार तो है नहीं, मगर चलकर कसौटी करने में क्या हर्ज़ है?'' यह सोचकर वह अपने तीसरे मित्र के घर पहुँचा। राजा के कोप की कहानी सुनाकर आश्रय देने की प्रार्थना की। मित्र ने दृढ़ता के साथ कहा- ''खैर, यह तो राजा का ही कोप है, अगर इंद्र का कोप होता और मैं सहायता न देता तो आपका मित्र ही कैसा? आप ऊपर चलिए और निश्चिंत होकर रहिए। यह घर आपका ही है।''

प्रधान अपने मित्र के साथ भीतर गया। मित्र ने उसका सत्कार करके कहा- ''अगर आपको कोई आवश्यकता हो तो बिना संकोच कह दीजिए।'' प्रधान के मना करने

पर उसने कहा– ''मनुष्य मात्र भूल का पात्र है। अगर कोई भूल हो गई हो तो मुझसे छिपाइए नहीं, सच-सच कह दीजिए। रोग का ठीक तरह से पता लगने पर ही सही इलाज हो सकता है।''

प्रधान सोचने लगा– ''अपनी बात ऐसे मित्र से नहीं कहूँगा तो किससे कहूँगा?'' और प्रधान ने सारी बात उसके सामने दिल खोलकर रख दी। मित्र ने उसे आश्वासन दिया।

इधर प्रात:काल प्रधान के घर की तलाशी ली गई तो पता चला कि प्रधान अपराधी न होता तो भागता ही क्यों? भागना ही उसके अपराधी होने का सबसे बड़ा सबूत है। राजा के दिल में यह बात घर कर गई। उसने कहा– ''ठीक है, पर भागकर जाएगा कहाँ? जहाँ भी होगा, गिरफ्तार करवा लिया जाएगा।''

सारे शहर में हलचल मची हुई थी। प्रधान का आश्रयदाता मित्र प्रात:काल ही राजा के दरबार में जा पहुँचा और चुपचाप सारी बातें सुनता रहा। सब बातें सुनने के बाद मौका देखकर प्रधान के मित्र ने राजा को मुजरा किया। राजा ने कहा– ''सेठ, तुम कभी आते नहीं। आज आने का क्या कारण है?''

सेठ– ''पृथ्वीनाथ! कुछ अर्ज करना चाहता हूँ।''

राजा– ''कहो।''

सेठ– ''एकांत में निवेदन करूँगा।''

राजा और सेठ एकांत में चले गए। वहाँ सेठ ने कहा– ''महाराज! प्रधान जी ने क्या अपराध किया है? क्या मैं जान सकता हूँ?''

राजा ने कई सारे अपराध गिनवा दिए, जिनके विषय में कोई प्रमाण नहीं था।

सेठ– ''आपके कथन को मिथ्या कैसे कहा जा सकता है? मगर प्रधान के बिना तो काम चलेगा नहीं। आपने इस विषय में क्या सोचा है?''

राजा– ''दूसरा प्रधान बुलाएँगे।''

सेठ– ''कदाचित् वह भी ऐसा ही निकला तो क्या होगा?''

राजा– ''नहीं। नए प्रधान की पहले जाँच कराएँगे, फिर नियुक्त करेंगे।''

सेठ– ''नए प्रधान की जिस प्रकार जाँच कराएँगे, उसी प्रकार अगर पुराने प्रधान की जाँच की जाए तो क्या ठीक न होगा? वह नया आएगा तो पहले अपना घर बनाएगा। उपद्रव मचा देगा। शायद आपको फिर पश्चात्ताप करना पड़ेगा। पुराने प्रधान से आरोपों के विषय में आप स्वयं पूछते और संतोषजनक उत्तर न मिलने पर यहीं कैद कर लेते तो क्या हानि थी? मगर आपने उस खानदानी प्रधान के पीछे सैनिक लगा दिए। यह कहाँ तक उचित है? आप सोचें।''

सेठ की बात राजा को ठीक मालूम हुई। उसने कहा– ''सेठ, तुम राज्य के हितचिंतक हो। इसी कारण तुम्हें राजा और प्रजा के बीच का पुरुष नियत किया है और सेठ की उपाधि दी गई है। मगर प्रधान न मालूम कहाँ चला गया है? वह होता तो मैं उसको सब बात पूछता।''

सेठ– ''प्रधान जी मेरे आत्मीय मित्र हैं। मुझे उनकी सब बातों का पता है। उनके आरोपों के विषय में मुझसे पूछें तो संभव है, मैं समाधान कर सकूँ।''

राजा– ''प्रधान तुम्हारे मित्र हैं?''

सेठ– ''मैंने न तो कभी छदाम दी है, न ली है। आपके प्रधान होने के नाते और मनुष्यता के नाते उनसे मेरी मित्रता है। मित्रता भी ऐसी है कि उन्होंने मुझसे कोई बात नहीं छिपाई।''

राजा– ''अच्छा देखो, प्रधान ने इतना हजम कर लिया।''

सेठ– ''ऐसा कहने वालों ने गलती की है। फलाँ बही मँगवाकर देखिए तो समाधान हो जाएगा।''

बही मंगवाकर देखी गई। राजा ने पाया कि वास्तव में आरोप निराधार है। इसी प्रकार और दो-चार

बातों की जाँच की गई। सब ठीक पाया गया। सेठ जी बीच-बीच में कह देते कि ''हाँ, इतनी भूल प्रधान जी से अवश्य हुई है और वे इसके लिए मेरे सामने पश्चात्ताप भी करते थे। आपसे भी कहना चाहते थे, मगर शायद लिहाज के कारण नहीं कह सके।''

राजा– ''प्रधान ने पश्चात्ताप भी किया था? मगर इतने बड़े काम में भूल हो जाना संभव है। वास्तव में मैंने प्रधान के साथ अनुचित व्यवहार किया है, किंतु अब तो उसका मिलना कठिन है? कौन जाने कहाँ चला गया होगा?''

सेठ– ''अगर आप उनके सम्मान का वचन दें तो मैं ला सकता हूँ।''

राजा– ''क्या प्रधान तुम्हारी जानकारी में है?''

सेठ– ''हाँ। मगर बिना अपराध सिर कटाने के लिए मैं उन्हें नहीं ला सकता। आप न्याय करने का वचन दें तो हाजिर कर सकता हूँ।''

राजा– ''मैं वचन देता हूँ कि प्रधान के गौरव की रक्षा की जाएगी और चुगलखोरों का मुँह काला किया जाएगा।''

सेठ– ''महाराज! अपराध क्षमा करें। प्रधान जी मेरे घर पर हैं।''

राजा– ''सारे नगर में उनकी बदनामी हो गई है। उसका परिमार्जन करने के लिए उनका सत्कार करना चाहिए। मैं स्वयं उन्हें लेने चलूँगा और आदर के साथ हाथी पर बिठाकर ले आऊँगा। जिसने अपमान किया है, वही मान करे तो अपमान मिट जाता है।''

हाथी सजाकर राजा सेठ के घर की तरफ रवाना हुआ। सेठ ने जाकर प्रधान से कहा– ''प्रधान जी! आपको दरबार में पधारना होगा।''

प्रधान– ''क्या गिरफ्तार कराओगे?''

सेठ– ''क्या मैं पापी हूँ? महाराज आपको आदर सहित राजमहल ले जाने के लिए मेरे द्वार पर आ पहुँचे हैं।''

सेठ के साथ बाहर आकर प्रधान ने राजा को मुजरा किया। राजा ने हाथी पर बैठने का हुक्म दिया। प्रधान शर्मिंदा हुआ तो तब राजा ने कहा– ''जो होना था, हो चुका, शर्माने की कोई बात नहीं है। मूर्खों की बातों में आकर मैंने तुम्हारा अपमान किया है। मगर अब किसी प्रकार की शंका मत रखो।''

दरबार में पहुँचकर प्रधान ने निवेदन किया– ''मेरे विरुद्ध जो भी आरोप हैं कृपा कर उनकी जाँच कर लीजिए। इससे मेरी निर्दोषता सिद्ध होगी और चुगलखोरों का मुँह अपने आप ही काला हो जाएगा।''

जम्बूकुमार अपनी पत्नियों से कह रहे हैं– ''कहो, मित्र कैसा होना चाहिए?'' उनकी पत्नियों ने कहा– ''पहला मित्र तो मुँह देखने योग्य भी नहीं है। दूसरे ने हृदय को नहीं पहचाना और अनावश्यक वस्तुएँ पेश कीं, मगर तीसरे मित्र ने हृदय को पहचाना और उसी के अनुसार उपाय भी किया। इसलिए मित्र हो तो तीसरे मित्र के समान।''

जम्बूकुमार कहने लगे– ''प्रधान के समान मेरे तीन मित्र हैं। नित्यमित्र यह शरीर है। प्रतिदिन नहलाता हूँ, धुलाता हूँ, खिलाता-पिलाता हूँ और सजाता हूँ, परंतु कष्ट का प्रसंग आने पर, जरा या रोग के आने पर सबसे पहले शरीर ही धोखा देता है। इतना सत्कार-सम्मान करने पर यह शरीर आत्मा के बंधन नहीं तोड़ सका। अतएव शरीर को अंत तक आत्मा का साथ न देने वाला समझकर उस पर ममता रखना उचित नहीं है।''

''माता, पिता, पत्नी आदि समस्त कुटुंबीजन पर्व-मित्र के समान हैं। पत्नी पति पर प्रीति रखती है किंतु जब कर्मरूपी राजा का प्रकोप होता है, तब वह अपने पति को छुड़ा नहीं सकती।''

जा दिन चेतन से कर्म शत्रुता करे।
ता दिन कुटुम्ब से कोउ गर्ज ना सरे।।

जिस दिन कर्म चेतन के साथ शत्रुता का व्यवहार करता है उस दिन कुटुंबीजन क्या कर सकते हैं? वे

व्याकुल भले ही हो जाएँ और सहानुभूति प्रकट करें, किन्तु कष्ट से छुड़ाने में समर्थ नहीं होते।

जम्बूकुमार अपनी पत्नियों से कहते हैं- ''मेरे तीसरे मित्र सुधर्मा स्वामी हैं। उन्होंने आत्मा और कर्म की भिन्न-भिन्न व्याख्या करके उसी प्रकार समझाया है जैसे सेठ ने राजा को समझाया था। इस तीसरे मित्र की बदौलत ही आत्मा दु:ख से मुक्त होती है और अपने परमपद पर प्रतिष्ठित होती है।''

अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य

हे आत्मा! अगर तू चाहे तो दु:ख क्षणभर भी नहीं ठहर सकता। मगर तू धन की कुंजी भी अपने हाथ में रखना चाहता है और स्वर्ग की कुंजी भी, यह दोनों बातें एक साथ नहीं हो सकती। वस्तुत: सच्चा मित्र वही है जो उपकार करता है, संकट से बचाता है और सन्मार्ग पर ले जाने का प्रयत्न करता है। मित्र का यह स्वरूप आध्यात्मिक दृष्टि से ही समझने योग्य है। आचारांगसूत्र में कहा है-

पुरिसा! तुममेव तुमं मित्तं किं बहिया मित्तमिच्छसि।

अर्थात् हे पुरुष! तू अपना मित्र आप ही है।
दूसरे मित्र की अभिलाषा क्यों करता है?

साभार- जवाहर किरणावली भाग-16
(उदाहरण माला भाग-1)

आगमज्ञाता श्री रामेश

भक्ति रस

-लता बोथरा, बेल्लारी

नमो आयरियाणं

नमो, नमो, नमो आयरियाणं बोलकर,
हर दिन की शुभ शुरुआत करते श्रोतागण।
'आ' के उच्चारण से याद आए आचार्य प्रवर,
'य' यानी यतनामय से भरा गुरुवर का जीवन,
'रि' का महत्त्व जाना जब, रिश्ते लगने लगे सब फीके,
'या' से याद आ गई पूज्यवर की कठिन क्रिया संयममय,
'णं' का णमन हो हमारा जीवन पूज्य प्रवर के श्रीचरणों में।
छत्तीस गुणों से शोभित हैं, गुरु रामेश महान।
सुंदर, सौम्य, शांत, गंभीर, रग-रग में बसे गुरु राम।।
नैना थकते नहीं, जब तक न पड़े गुरुवर की नजर हम पर।
गुणानुवाद करते-करते श्रावकगण डोल रहे पग-पग पर।।
आगम की अनुपम गहराई के गोताखोर हैं आपश्री।
खोज-खोज कर अमूल्य मोती, बाँट रहे हो भक्तजनों को।।
तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान से ओत-प्रोत है जीवन गुरुवर का।
शब्दों का भंडार भी कम लगता है जब गुणगान करें गुरु राम का।।
हे गुरुवर आप तिरें हमें भी तिराएँ इस दुषमकाल से।
मुक्ति के मार्ग पर चलना हमें, गुरुचरणों में शीष नवा के।।

धर्मदेशना

संयम से विश्वास

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

त्रिषष्टिशलाका पुरुष चारित्र में एक प्रसंग आया है कि एक बार भगवान महावीर चम्पकनगरी के बगीचे में तप संयम से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विराजमान थे। तब वहाँ पर सम्राट, जिनका नाम **'शाल'** था, अपने युवराज **'महाशाल'** आदि को साथ लेकर भगवान के चरणों में पहुँचे। भगवान की अपूर्व देशना श्रवण कर सम्राट को संसार से विरक्ति हो गई और कहने लगे कि ''भगवन्! ऐसा अमृतमय ज्ञान का निर्झर आज जिंदगी में मुझे प्रथम बार ही मिला है। मैं यह जान पाया कि इस जीवन में कितनी महान शक्ति है। उसको प्राप्त करने पर लोकालोक देखा जा सकता है। पर कब, जब उसके अनुरूप पुरुषार्थ करें। तब भगवन्! मैं भी आपश्री के चरणों में दीक्षित होकर अपनी अनंत ज्ञानज्योति को प्रज्वलित करना चाहता हूँ।'' तब प्रभु महावीर ने फरमाया-

अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह।।

जिससे तुम्हें सुख हो वैसा करो, शुभ कार्य में विलंब मत करो।

तब सम्राट ने पूर्णरूपेण दीक्षित होने की तैयारी कर ली। उनका पुत्र युवराज कहने लगा कि आप तो दीक्षा ले इस दुर्लभ मनुष्य भव को सार्थक बनाना चाह रहे हो, तब यह बंधन रूप राग का भार मेरे सिर पर क्यों डाल रहे हो? महाराज ने कहा कि नहीं भाई! तुम मेरे अप्रिय नहीं हो। यदि तुम भी इस संसार रूपी जेल से निकलना चाहते हो तो तैयार हो जाओ, मैं तुम्हें सहर्ष अनुमति देता हूँ दीक्षा लेने की। युवराज ने पूछा कि पिताजी! राज्य किसको संभलाओगे? महाराज ने कहा कि तुम इसकी चिंता मत करो, भानजे को राज्य भार सौंप देंगे। इस प्रकार भानजे का राजमहोत्सव मनाकर पिता-पुत्र दोनों प्रभु महावीर के चरणों में दीक्षा ले लेते हैं और दीक्षित होकर प्रभु महावीर के साथ चलने लगते हैं। जब एक बार चम्पकनगरी में भगवान महावीर का समवसरण हुआ तो वे दोनों साथ थे, उनमें जो शाल मुनि थे वे भगवान से निवेदन करने लगे- ''भगवन्! मेरा सांसारिक भानजा संसार रूपी जेल में पड़ा हुआ है। आप आज्ञा फरमावें तो उसे भी इस जेल से छुटकारा दिलाने के लिए हम पृष्ठ चम्पकनगरी में जाना चाहते हैं।''

तब पिता-पुत्र जो मुनि बन चुके थे, गौतम स्वामी के साथ पृष्ठ चम्पकनगरी में जाकर तप संयम से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। महाज्ञानी गौतम स्वामी ने अमृतोपम वाणी से सम्राट को उद्बोधन दिया, उससे जागृत होकर मुनि शाल का भानजा सम्राट गांगली अपने पुत्र को राज्यभार संभलाकर माता-पिता के साथ दीक्षा अंगीकार कर लेते हैं।

इस प्रकार गौतम स्वामी पाँच भव्यात्माओं को लेकर पुन: जब प्रभु महावीर के चरणों में पहुँचने हेतु पृष्ठ चम्पक से विहार कर जा रहे थे, तब उन नवीन संतों को ज्ञान देते हुए कहा कि ''तुम अब भगवान की विराट परिषद् में जा रहे हो। वहाँ विनय का यथोचित पालन करना। केवली की, अवधिज्ञानी की, मन: पर्याय ज्ञान

आदि-आदि सभी की अलग-अलग परिषद् है, तुम नवदीक्षित की परिषद् में जाकर बैठना।''

गौतम स्वामी की यह आज्ञा सभी ने विनयपूर्वक शिरोधार्य की और उनके अंदर में भावों की विशुद्धि निरंतर बढ़ती चली गई। आत्मा ऊर्ध्वगामी साधना के लिए सर्वतोभावेन समर्पित होकर तन, मन, वचन से एकाकार हो गई। एक ही लक्ष्य की तरफ ध्यान तन्मय हो गया। भावनाओं में विशुद्धि के प्रकर्ष से गुणस्थानों पर आरोहण करने लगे। क्षपक श्रेणी पर चढ़कर अंतर्मुहूर्त्त में ही भगवान के पास पहुँचने से पहले ही घनघाती कर्मक्षय कर सर्वज्ञ सर्वदर्शी बन गए और महाप्रभु के समवसरण में आकर सीधे केवली परिषद् में आकर बैठ गए। यह देखकर गौतम स्वामी को आश्चर्य हुआ। उनके मन में कई संकल्प-विकल्प उठने लगे। तब घट-घट के अंतर्यामी भगवान महावीर कहने लगे कि ''गौतम! तुम क्या सोच रहे हो? यह तन-मन-वचन से सर्वतोभावेन तुम्हारी आज्ञाओं में समर्पित होकर चलने वाले मुनि अब तुम्हारी आज्ञा के पालन की स्थिति से बहुत आगे बढ़ चुके हैं अर्थात् इनको तो केवलज्ञान, केवलदर्शन हो गया है।''

गौतम स्वामी ने यह सुना तो कहने लगे- ''भगवन्! ये क्या? मैं इतने वर्ष से श्रुतचारित्र धर्म की आराधना कर रहा हूँ, पर अभी तक मुझे केवलज्ञान नहीं हुआ और ये मुनि जिनको अभी दीक्षा देकर मैं लाया और इतनी जल्दी इन्हें केवलज्ञान हो गया। भगवन्! ऐसा क्यों?'' गौतम स्वामी के भीतर हल-चल-सी मच गई। उसे शांत करने की दृष्टि से सांत्वना देते हुए महाप्रभु ने फरमाया कि ''हे आयुष्मान गौतम! तुम्हारा मेरे प्रति अनुराग है, वह प्रशस्त है, वह आगे बढ़ाने वाला है। राग दो प्रकार का होता है- प्रशस्त और अप्रशस्त। प्रशस्त राग गुरु के प्रति, श्रुत के प्रति होता है और माता-पिता, पारिवारिक सदस्यों व पुद्गलों के प्रति जो अनुराग होता है, वह अप्रशस्त राग है। गौतम! तुम इतने बैचेन मत बनो। तुम्हारा जो मेरे प्रति प्रशस्त राग है, वह तुम्हें आगे बढ़ाने वाला है। पर अभी तक काल की परिपक्वता नहीं आई है। कर्मों के क्षय की स्थिति नहीं बनी है। तुम्हें केवलज्ञान नहीं हो पा रहा है। अभी तुम्हारे कुछ कर्मों का उपभोग शेष है, पर जब मुझे मोक्ष हो जाएगा तब तुम केवली बन जाओगे। अत: खेद मत करो, पुरुषार्थ करते रहो।'' उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन की पैंतीसवीं गाथा में भगवान ने गौतम स्वामी को संबोधित करते हुए फरमाया कि

अकलेवर-सेणिमूसिया,
सिद्धिं गोयम! लोयं गच्छसि।
खेमं च सिवं अणुत्तरं,
समयं गोयम! मा पमायए।।

अर्थात् हे गौतम! शरीर से रहित जो सिद्ध श्रेणी है उसके सदृश पवित्र क्षपक श्रेणी पर चढ़कर सर्वोत्कृष्ट सिद्धलोक को प्राप्त होगा। अत: तुम समय मात्र का भी प्रमाद मत करो।

यहाँ विचार करने की बात है कि इतने विशिष्ट ज्ञानी को भी महा-प्रभु ने समय मात्र का भी प्रमाद नहीं करने के लिए कहा है, जिनका कि उसी भव में मोक्ष निश्चित है। तो फिर आज के अधिकांश साधक, जिनके पास श्रुतज्ञान भी पूरा नहीं है, फिर उनके ज्ञान की इति भी हो गई, जो प्रमाद या आलस्य में समय व्यतीत करे। गौतम स्वामी से संबंधित यह घटना चाहे किसी भी रूप में घटित हुई हो, लेकिन इससे यह शिक्षा मिलती है कि सदा आलस्य, प्रमाद त्यागकर पुरुषार्थ करते रहो।

यहाँ आप एक बात स्पष्ट कर लें कि गौतम स्वामी ने जो गांगली सम्राट के माता-पिता को दीक्षा दी, वह सारी विधिवत् हुई थी और जब वे भगवान महावीर के समवसरण में पहुँचे तो गांगली अनगार की माता जी, जो अब साध्वी बन गई थी, साध्वी की केवली परिषद् में जाकर विराजी।

साभार- नानेशवाणी-46 (दृष्टांत सुधा)

धर्मदेशना

परिवर्तन के पथ पर .....

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

श्री सुपार्श्वजिन वंदीए सुख सम्पत्ति नो हेतु, ललना...

तीर्थंकर देवों को वंदन करने से सुख और संपत्ति प्राप्त होती है। यह वंदना सुख और संपत्ति का हेतु है। सुख अर्थात् आत्मतृप्ति। तीर्थंकर देवों की वंदना करने से मन में तृप्ति हो रही है तो समझना चाहिए कि वंदना करना सार्थक है। यदि वंदन करने के बाद तृष्णा, प्यास और आकांक्षा बनी रहती है, इच्छाएँ बनी रहती हैं तो समझना चाहिए कि अभी वंदना सार्थक नहीं हो पाई है। दूसरा है संपत्ति। जिसका सामान्य अर्थ धन और वैभव से जोड़ा जाता है। संपत्ति के छः भेद किए गए हैं- सम, दम, तितिक्षा, उपरति, समाधान और श्रद्धा। वंदन करने से इन छः गुणों की प्राप्ति होती है। सम अर्थात् शांत, समाधि। समभाव अर्थात् शांत भाव में रहना। दूसरा है दम, जिससे आत्मा का दमन किया जाता है, मन का दमन किया जाता है। अपना नियंत्रण जिस पर बना लिया जाता है वह होता है दम।

तितिक्षा अर्थात् आने वाले प्रहारों को सहना। शरीर एक बार प्रहारों को सहने में समर्थ हो जाता है किंतु बाण की तरह तीक्ष्ण, चुभने वाली बातों को सहन करना बड़ा कठिन होता है। तितिक्षा, वैसी हमारी क्षमता होना, सहनशीलता होना और वह होती है तीर्थंकर देवों को वंदन करने से। इसके आगे बताया है उपरति अर्थात् विरक्ति। पौद्गलिक इच्छा समाप्त, अनासक्ति के भाव, उसे कहते हैं उपरति। समाधान अर्थात् अब कोई प्रश्न नहीं है, कोई ऊहापोह नहीं है। अब मन पूर्णतया संतुष्ट हो गया है। अब क्या श्रद्धा बाकी रहेगी? यदि इतनी बातें आ जाए तो फिर विश्वास पैदा होगा या नहीं होगा? इस प्रकार संपत्ति का इन छः अर्थों में कथन किया गया है। इन छः गुणों की प्राप्ति तीर्थंकर देवों को वंदन करने से होती है। हालाँकि भाष्यकार यह कहते हैं कि ऋषभदेव भगवान से लेकर भगवान महावीर तक किसी भी तीर्थंकर को यदि एक बार भी सच्चे दिल से नमन हो जाए तो वह नमन हमारे सारे कर्मों को दूर करने वाला होता है।

बहुत बार हमारी वंदना होती है किंतु उनमें भावों का जो उद्रेक होना चाहिए, भावों की जो विशुद्धि होनी चाहिए वह उतनी बन नहीं पाती है। उन्मुक्त भावों से जिस समय रसायन आते हैं वे रसायन हमारी जिंदगी को बदलने वाले होते हैं। आयुर्वेद में रसायन का बहुत बड़ा महत्त्व है। जीर्ण रोग यानी पुराने रोग काष्ट आदि औषधियों से शमित नहीं होते हैं। उनके लिए रसायन का प्रयोग किया जाता है। हमारा रोग भी जीर्ण है। क्रोध, मान, माया, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, राग, द्वेष यह तत्काल उठी फुंसियों के समान रोग हैं या टी.बी. या कैंसर जैसे संगीन रोग हैं? ये तत्काल लगे हुए रोग नहीं हैं। बड़े जीर्ण, बहुत पुराने रोग हैं। इनसे हमारी आत्मा में अब तक कष्ट पैदा होता रहा है। इन जीर्ण बीमारियों का इलाज रसायनों से ही होगा और वह रसायन कैसे प्राप्त करेंगे? आयुर्वेद में तो पदार्थों का मिश्रण करके और उनकी प्रक्रिया करके रसायन पैदा किया जाता है किंतु हमें तो हमारे भीतर उस रसायन को पैदा करना पड़ेगा।

गजसुकुमाल ने जब यह सुना कि मेरे भैया श्रीकृष्ण तीर्थंकर अरिष्टनेमि भगवान के दर्शन करने जा रहे हैं, तो उन्होंने कहा- भैया! मैं भी चलूँ? कृष्ण वासुदेव यह जान रहे थे क्योंकि देव ने बता दिया था कि यौवन की दहलीज पर आते ही अरिष्टनेमि भगवान की वाणी को सुनकर

उसे वैराग्य आएगा और वह दीक्षा लेगा किंतु श्रीकृष्ण वासुदेव जानते थे कि भावी भव्य योग से जो होना है वह होकर ही रहेगा। मैं लाख प्रयत्न करूँगा उसके बावजूद गजसुकुमाल रुकने वाला नहीं है।

गजसुकुमाल श्रीकृष्ण वासुदेव के साथ चले गए। उन्होंने वहाँ प्रभु की देशना सुनी। कितने व्याख्यान सुने, यह कोई महत्त्व की बात नहीं है।

चित्तौड़ में चातुर्मास चल रहा था। दीपावली के बाद चातुर्मास उठने का बस इंतजार चल रहा था। उन दिनों देवीलाल जी सभा का संचालन किया करते थे। उन्होंने एक दिन यह बात कही कि जिसने भी चातुर्मास के एक सौ बीस व्याख्यान सुने हैं वे अपने-अपने नाम मेरे पास दर्ज करा दें। हम उनको सम्मानित करना चाहते हैं। वैसे भी प्रतिक्रिया करने की मेरी आदत ज्यादा रहती है। मैंने कहा कि उसका सम्मान क्यों करें जिसने एक सौ बीस व्याख्यान सुने हैं। सम्मान तो उसका किया जाए जिसने एक व्याख्यान सुना और दूसरा व्याख्यान सुनने की उसे जरूरत ही नहीं पड़ी। जिसने एक सौ बीस व्याख्यान सुने और उस पर कोई फर्क नहीं पड़ा, आप उसका सम्मान कर रहे हो। सम्मान किसका होना चाहिए? यहाँ बैठने वालों ने भी कई व्याख्यान सुने हैं उनका सम्मान होना या नहीं होना? लोगों ने हजारों व्याख्यान सुने होंगे, सुनने के बाद भी उनका मन कभी ऊँचा तो कभी नीचा होता होगा किंतु एक व्याख्यान सुनने के बाद जिसका मन ऊँचा ही होता है, नीचा नहीं होता है, ऐसे व्यक्तियों का सम्मान होना चाहिए।

अरिष्टनेमि भगवान की वाणी ऐसी पाप प्रक्षालकारिणी वाणी थी, जिससे जन्मों-जन्मों के पाप धुल जाते हैं। केवल तीर्थंकर भगवंतों की ही बात नहीं है। आचार्य भगवंतों के अमोघ वचन, संत-महापुरुषों के वचन भी हमारे पापों का प्रक्षाल करने वाले होते हैं। इसलिए आप तिक्खुत्तो के पाठ से वंदना करते हुए कहते हो कि कल्लाणं मंगलं अर्थात् प्रभो! आप ही मंगल हैं। आप ही हमारे पापों को गलाने वाले हैं, नष्ट करने वाले हैं। हकीकत में देखें तो वे कुछ भी नहीं हैं और होने में वे सब कुछ हो गए। भगवान महावीर गोशालक के पापों का

> *उसका सम्मान क्यों करें जिसने एक सौ बीस व्याख्यान सुने हैं। सम्मान तो उसका किया जाए जिसने एक व्याख्यान सुना और दूसरा व्याख्यान सुनने की उसे जरूरत ही नहीं पड़ी।*

नाश नहीं करा सके, किंतु इंद्रभूति गौतम अभिमुख हुए। गोशालक नजदीक होते हुए भी विमुख रहा तो वह पापों का प्रक्षाल नहीं कर सका। इंद्रभूति गौतम पहले विमुख थे किंतु अभिमुख हुए तो अपने पापों का प्रक्षाल कराने में समर्थ हुए। कुल मिलाकर तैयारी हमारी होगी तो पापों का प्रक्षाल हो सकता है। पापों की सफाई हो सकती है।

गजसुकुमाल ने अरिष्टनेमि भगवान का उपदेश सुना। उनकी देशना को सुना और हृदय में तत्काल वैराग्य का अंकुरण हो गया। उन्होंने निर्णय कर लिया कि मुझे बस इन्हीं चरणों का आश्रय लेना है। वे उपासना में लगे रहे। उसी में तन्मय रहे। कृष्ण वासुदेव ने उनको देखा किंतु यह नहीं कहा कि भाई चलो। श्रीकृष्ण वासुदेव वहाँ से चले गए। ऐसा बताया जाता है कि संतों के समागम में लाने का हमारा उद्देश्य होना चाहिए। वापस ले जाने के लिए नहीं होना चाहिए। ऐसा नहीं कहना चाहिए कि आप अपने साथ वापस लाते हो तो ले जाओ, नहीं तो नहीं ले जाना। यदि किसी का मन उसमें ही रम गया तो? सच यही है कि हम फालतू में किसी को पाप में ले जाने के लिए निमित्त क्यों बनें?

उस समय जो कुछ भी रहा हो श्रीकृष्ण वासुदेव वहाँ से चले गए और बाद में गजसुकुमाल भी घर आ गए। आते ही माता के सामने कहने लगे- ''माँ! मैंने आज पहली बार अरिष्टनेमि भगवान के दर्शन किए।'' माता का हृदय प्रफुल्लित हो गया। माता प्रफुल्लित हृदय से, हर्ष-विभोर हो कहने लगी- ''बेटा! तुमने बड़ा पुण्य का काम किया है। तुमने अरिष्टनेमि भगवान के दर्शन किए हैं।''

गजसुकुमाल कहते हैं- ''मैंने उनकी वाणी सुनी, देशना सुनी।'' ''बेटा! तुमने उनकी वाणी और देशना

सुनी तो तुम्हारे कान पवित्र हो गए।'' यहाँ तक तो माताएँ बड़ी खुश होती हैं। कहाँ तक खुश होती हैं? यदि कोई संतान म.सा. के दर्शन करने नहीं जाए तो माताएँ कहती हैं कि बावजी! यह दर्शन करने नहीं जाता है। व्याख्यान सुनने के लिए नहीं जाता है। किंतु जाने के बाद यदि आने का नाम नहीं ले तो फिर क्या करोगे? अरे, ऐसा थोड़े ही होता है। संतों की सेवा में आ जाए, संतों के दर्शन करे, उनकी वाणी को सुने किंतु इससे आगे कुछ नहीं करे। यहाँ हम कह सकते हैं कि ये जो स्थितियाँ बनती हैं हमारी माताओं के कारण ही बनती है। थोड़ी देर के लिए समझ लें कि माताओं के कारण ही हम संतों की वाणी को सुनते हैं, उनके दर्शन का लाभ लेते है किंतु उसके आगे नहीं बढ़ पाते हैं। उसके आगे जो किया जाना चाहिए वह नहीं कर पाते हैं। आज राजेश मुनि जी म.सा. ने कितनी जोरदार बात कही, बहुत अच्छी बात कही। यदि हम विचार करें तो आज के दार्शनिक ये मानते हैं और पहले के भी यही मानते रहे होंगे कि जो अच्छा लगे उसको तत्काल क्रियान्वित करो। खाली अच्छा लगने से क्या होगा! उसकी क्रियान्विती नहीं होने से वह अच्छा भी हमारे कुछ भी काम का नहीं रहेगा। कुछ भी उपयोग का नहीं रहेगा। जो उपयोग में ही नहीं आया तो वह क्या काम का? चीज वह अच्छी है जिसका हम उपयोग कर सकें। या यूँ कहूँ कि जो भी अच्छी चीज होगी उसका हम उपयोग करने वाले हैं। हमें उपयोग करने की दिशा में अपने कदम आगे बढ़ाने चाहिए।

योजनाएँ और तकनीक हम बहुत सारी बना लेते हैं किंतु उनका प्रयोग नहीं होता है तो हमें सफलता भी मिलने वाली नहीं है। कार्य संपन्नता के लिए हजार सोच के बजाय एक कदम आगे बढ़ना जरूरी है। वह एक कदम हमें मंजिल के निकट पहुँचाने वाला है। हजारों सोच हमें मंजिल के निकट पहुँचाने वाली नहीं है किंतु एक कदम निर्णय रूप में आगे बढ़ाया तो वह एक कदम हमें हमारी मंजिल के निकट पहुँचाने वाला होगा। वह एक कदम निर्णायक होता है और गजसुकुमाल कहते हैं कि माता! मैंने अपना विचार कर लिया है कि मुझे बस दीक्षा लेनी है। दीक्षा का नाम सुनते ही माता धड़ाम से गिर गई।

> *जो अच्छा लगे उसको तत्काल क्रियान्वित करो। खाली अच्छा लगने से क्या होगा! उसकी क्रियान्विती नहीं होने से वह अच्छा भी हमारे कुछ भी काम का नहीं रहेगा। कुछ भी उपयोग का नहीं रहेगा।*

यह सब आपने अन्तकृद्दशांग सूत्र के माध्यम से सुन लिया है। वह धड़ाम से गिर गई। शीतल उपचार से वापस होश में आई। माता की आँखों में से टप-टप आँसू गिरने लगे। बेटा! तुमने यह क्या बात कही! आज तक तुम्हारे मुँह से ऐसी कोई बात नहीं सुनी। आज तुम एकदम से यह बात कह रहे हो। यह बात कब से कहनी चाहिए? दीक्षा लेने की बात कब से कहनी चाहिए? जो भी काम होगा पहले पहल तो पहली बार ही होगा। वह कहती है कि पहले कभी सुना नहीं और आज सुन रही हूँ। कोई भी काम हो पहली बार ही किया जाता है। बहुत-सी बातें होती हैं जो हमने पहले नहीं सुनी। घर में बहू के आने के पहले ऐसी कई बातें होंगी जो उसके आने के पहले नहीं सुनी होंगी। उसके आने के बाद क्या होता है? वे सारी बातें सुनने को मिल जाती हैं। वे पहली बार हुईं या नहीं। वहाँ फिर मानसिकता बदल जाती है। 'जीवन परिवर्तन।' जीवन परिवर्तन एक घटना ही कर देती है किंतु उसमें कोई परिवर्तन की बात नहीं है। एक व्यक्ति किराए के मकान में रह रहा है। उस मकान के मालिक ने उसे बहुत खरी-खोटी सुनाई तो उसने वह मकान खाली कर दिया और दूसरे मकान में रहने लग गया। कोई व्यक्ति एक व्यापार कर रहा था, उसको छोड़कर दूसरा व्यापार करने लग गया। इतने मात्र से ही सोच लिया कि हमने परिवर्तन कर लिया। क्या इसी परिवर्तन को हम परिवर्तन मानकर चल रहे हैं?

अब तक चातुर्मास का लगभग डेढ़ महीना बीत गया है, उससे ऊपर ही बीत गया है। यदि कोई आपसे पूछ ले कि आपने चातुर्मास के डेढ़ महीने में जीवन परिवर्तन का क्या अर्थ समझा? बताओ जीवन परिवर्तन

चातुर्मास का क्या अर्थ है? डेढ़ महीने में हमने इसके अर्थ को क्या समझा? यदि चार महीने में भी इसके अर्थ को नहीं समझेंगे तो फिर परिवर्तन कब होगा? आज आप सभी लोग पर्ची पर लिखें कि जीवन परिवर्तन चातुर्मास का अर्थ क्या है? आप इससे क्या समझे? कागज लेकर उस एक पर्ची पर उत्तर लिखकर देना है। आपने इस डेढ़ महीने में जीवन परिवर्तन का अर्थ क्या समझा? लिखकर देंगे ना? बोलो भाई।

सभा से सुमित जी खड़े होते हैं और कहते हैं- बावजी! मैं संयम लेना चाहता हूँ।

मुझे मालूम है कि आप संयम लेना चाहते हो। अभी लेना है क्या? (सभा से सुमित जी हाँ करते हैं) बाईजी की तो कोई मनाही नहीं है? दादाजी और पिताजी यहाँ मौजूद नहीं हैं। शीलव्रत लिए इनको वैसे भी तीन साल हो गए हैं। भावना बहुत समय से चल रही है और समाधान की दिशा में भी हैं।

ठीक है, इन्होंने खड़े होकर बता दिया कि यह परिवर्तन है। वस्तुत: यही होता है। ऐसी भावना कइयों की है। केवल सुमित जी ही नहीं और भी कई लोग हैं जिनकी ऐसी भावनाएँ हैं किंतु वे लोग यह सोचते हैं कि समाज के लोग कहेंगे कि अरे यह तो बस खड़े होना ही जानता है। बस खड़ा होकर नाम कमा लिया। ऐसे ही लोग पता नहीं क्या-क्या बोल जाते हैं। लोगों की बोली के कारण उनकी भावना वहीं दब जाती है। बहुत से लोगों में यह भावना उछाले खा रही है और यदि उनको समाज के लोगों का भय नहीं होता तो जैसे सुमित जी खड़े हो गए हैं वैसे ही खड़े होने वाले यहाँ कोई कम लोग नहीं हैं। मैं जानता हूँ बहुत हैं किंतु लोग क्या कहेंगे, अभी खड़ा होने को तो हो जाऊँ किंतु घर वालों ने आज्ञा नहीं दी तो क्या होगा? यह सब कुछ भी नहीं है। यदि हमारे मन में दृढ़ता है तो सारे के सारे रास्ते अपने आप ही बनते हुए चले जाते हैं और हमारा मन ही कच्चा है तो 'कुछ तो आटा गीला और कुछ मियां ढीला'। भीतर विचारों की दृढ़ता होनी चाहिए।

गजसुकुमाल कहते हैं कि माता! मुझे दीक्षा लेनी है। बेटा! यह अपूर्व श्रुत, पहले मैंने कभी नहीं सुने। वह

> *हजारों सोच हमें मंजिल के निकट पहुँचाने वाली नहीं है किंतु एक कदम निर्णय रूप में आगे बढ़ाया तो वह एक कदम हमें हमारी मंजिल के निकट पहुँचाने वाला होगा।*

आज तुम्हारे मुँह से सुन रही हूँ और माता धड़-धड़ रोना शुरू हो गई। कहते हैं कि स्त्री और बच्चों के लिए रोना एक शस्त्र है, जो सामने वाले को पिघला देता है किंतु गजसुकुमाल नहीं पिघले। क्या दीक्षा लेने वाले का दिल इतना कठोर हो जाता है? कठोर होने का तो कोई सवाल ही नहीं है। उसके दिल में तो करुणा भरी रहती है। बिना करुणा के वह दीक्षा ले ही नहीं पाता है। भीतर करुणा, कोमलता होती है तो ही दीक्षा की भावना पैदा होती है किंतु अपने कोमल अनुकंपा रूप हृदय की रक्षा के लिए संगीन बाड़ लगानी पड़ती है। मोह के बैल, मोह के पशु भीतर आकर चर नहीं जाए, मोह को भीतर में प्रवेश होने नहीं दिया जाए इसके लिए चारों तरफ संगीन बाड़ बना लेता है। मोह द्वारा कितने ही धक्के लगाने पर भी उस बाड़ पर कोई असर नहीं पड़ता है। इसलिए वह ऊपर से ढाल की तरह कठोर बन जाता है।

माता ने कहा- बेटा! मैंने कितने भाव संजोए थे। क्या होता है भाव संजोना? यह आप अच्छी तरह जानते हैं। मुझे बताने की जरूरत नहीं है। वे कहते हैं माँ, मुझे दीक्षा लेनी है। यह संसार अब मुझे नहीं सुहाता है। माता रोती हुई, बिलखती हुई कहती है बेटा! तुमने क्या जाना है कि साधुता क्या होती है? अभी तुमने साधुता को पहचाना कहाँ है? आज तक तुम जिस प्रकार से पले हो, पोसे हो उसमें कभी जमीन पर पैर रखने की बात नहीं हुई है। कभी थोड़ी देर के लिए भी भूख और प्यास का तुम्हारे लिए कोई परीषह पैदा नहीं हुआ। तुम्हारा एक तरफ आँख का इशारा होता है तो नौकर-चाकर हाजिर हो जाते हैं। तुम यह जानते हो कि साधु जीवन आसान नहीं है। **'सव्वं से जाइयं होई'** साधु बनने के बाद सभी कुछ

याचना करना पड़ेगा। बिना याचना के कुछ भी मिलने वाला नहीं है। इसलिए कैसे तुम साधु जीवन

को पाल सकोगे? साधु जीवन कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलने के समान है। नंगे पैर काँटों, कीलों और पत्थरों पर चलने के समान है। मार्ग पर काँटे, कीलें, कंकर बिखरे हुए पड़े हों उस पर चलना आसान नहीं होता है। ऐसे कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलना आसान बात नहीं है। बेटे अभी तो तुम्हारे दूध के दाँत भी नहीं टूटे हैं। तुम्हारी वय का भी कोई मेल नहीं है। यह उम्र तो खेलने, खाने और मौज मनाने की है। हमारे यहाँ तो आठ वाले को भी प्रवेश है और साठ वाले को भी प्रवेश है।

गजसुकुमाल को माँ कहती है कि बेटा! अभी तुम्हारी वय का कोई मेल नहीं है। गजसुकुमाल ने कहा माता कौन पहले मरता है और कौन बाद में मरता है? बचपन में ही राम नाम सत्य की आवाज सुनने में आती है और बुढ़ापे में भी यही आवाज आती है। दीक्षा लेने की कोई उम्र नहीं होती। वय का कोई मेल नहीं है, यह कोई बात नहीं है। दीक्षा के लिए कोई वय और तिथि निश्चित नहीं होती है। यदि निश्चित हो तो इतने समय तक फिर तो मौत भी नहीं आएगी। मौत कोई भुआजी तो है नहीं कि हमारे कहने से रुक जाएगी। वह तो कभी भी आ सकती है। उसका कोई भरोसा नहीं है। इसलिए माताजी दीक्षा के लिए कोई वय नहीं है। आगमानुसार बताया गया है कि दीक्षा के लिए माता की कुक्षि का समय मिलाकर, जन्म के समय को मिलाकर नौ वर्ष की एज में दीक्षा ली जा सकती है। महाश्रमणी रत्ना श्री मनोहरकंवर जी म.सा. ने इसी एज में दीक्षा ली। महाश्रमणी रत्ना श्री पानकंवर जी म.सा. ने भी लगभग दस वर्ष की एज में दीक्षा ली। नीरज मुनि जी म.सा., मनीष मुनि जी म.सा., रोहित मुनि जी म.सा. आदि ने भी लगभग समान उम्र में दीक्षा ली। बस दस-बारह महीनों का ही फर्क है। कोई ज्यादा अंतराल नहीं है किंतु देखने में लगते हैं कि कोई दुबले-पतले दिखते हैं तो कोई मोटे दिखते हैं। किंतु इन सबकी दीक्षा समान वय में ही हुई थी। सबकी वय 10 से 12 वर्ष के लगभग थी।

आचार्य पूज्य गुरुदेव नानालाल जी म.सा. के विषय में लोग कहने लगे कि अंतिम समय में उनको बच्चे

> *संयम में आठ को भी प्रवेश है और साठ को भी प्रवेश है।*

प्यारे ज्यादा हो गए। कोई भी बच्चा आता तो वे उसको कहते तुम्हारी मम्मी तुमको मारती तो नहीं है ना? आदर्श, जिसकी दीक्षा फाइनल हुई है, उसकी मम्मी को बुलाया गया और गुरुदेव ने उनको कहा कि बच्चों को मारना मत और साथ ही साथ उन्हें पच्चक्खाण भी दे दिया। लोग कहने लगे कि अंतिम समय में नाना गुरु को बच्चे ज्यादा प्यारे हुए। इसलिए वे दीक्षा के लिए बच्चों को भेज रहे हैं। यह तो लोगों की अपनी-अपनी भावना है। दीक्षा के लिए कोई समय, कोई उम्र नहीं है। कोई वय नहीं है। जब नीरज मुनि जी दीक्षित हो गए तो लोग उनसे कहते- ले ली दीक्षा? इतनी जल्दी क्यों? उन्होंने कहा कि मैंने जल्दी ले ली तो आप देरी क्यों कर रहे हो? आप तो अपनी वय को सँभाल लो। मेरा ऐसा मानना है कि हमारे यहाँ तो आठ को भी प्रवेश है और साठ को भी प्रवेश है। हमारे नाना गुरु ने तो पचहत्तर वर्ष वालों को भी दीक्षा दी है। मूल बात है दीक्षा लेने वाले में संवेग-निर्वेद के भाव होना।

अब गजसुकुमाल ने माता को जवाब दिया कि छोटों को भी मौत ले जाती है। ऐसी कोई बात नहीं है कि छोटों को नहीं ले जाती है। आगे कहा कि दीक्षा का समय कोई फाइनल नहीं होता है। बुढ़ापे में लेने वाले बुढ़ापे में लेते हैं और जवानी में लेने वाला जवानी में लेता है किंतु यदि कोई इंतजार ही करता रहेगा तो अचानक मौत आएगी और उसकी जो भावना है वह भावना मन में ही रह जाएगी। हम बहुत आगे की गणित लगा रहे होते हैं। बहुत आगे का विचार कर रहे होते हैं किंतु वह गणित क्या काम आती है? उन्होंने कहा- माता तुम कहती हो कि मैंने बहुत सपने संजोए हैं। माँ हकीकत में तुम देखो कि कौन अपना है? जब अपना किसी को कहने के लिए है ही नहीं तो फिर किस के बल पर सपना संजो लेना? इसलिए माँ यह सारा मोह का

खेल है। यह सारा मोह ने रास रचाया है और इस प्रकार से मोह सारी बातें करता रहता है। ऐसे रास में मैं बहुत रच गया हूँ, पच गया हूँ किंतु अब मैं इस रास में रचने वाला नहीं हूँ। अब मुझे दीक्षा लेनी है।

माता ने सोचा कि अब इसे समझाने का कोई फायदा नहीं है। वे देख लेते हैं कि अब गुंजाइश कुछ कम ही लगती है। अब इन तिलों में तेल नहीं है। तब फिर घर वाले अनुमति के लिए तैयार होते हैं। फिर भी जाते-जाते एक और परीक्षा गजसुकुमाल मुनि की ले लेनी चाहिए। श्रीकृष्ण वासुदेव कहते हैं- भाई, मैं तुम्हारा राज्याभिषेक करना चाहता हूँ। यह सुनते ही गजसुकुमाल के चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाती है। उनका राज्याभिषेक हुआ। उन्हें राजा बना दिया गया। देवकी महारानी भी वहाँ खड़ी हुई है। हर्ष-हर्ष जय-जय के नारे लग रहे हैं। जय हो विजय हो के नारे लगते हैं। श्रीकृष्ण वासुदेव कहते हैं- आपका क्या हुक्म है? क्या आदेश है? जो आपका हुक्म होगा उसी को स्वीकारा जाएगा। उन्होंने क्या हुक्म दिया? उन्होंने आदेश दिया कि ओघे और पातरे मँगाए जाएँ। नाई को बुलाया जाए। इससे वासुदेव श्रीकृष्ण आदि समझ गए। देखा कि अब कुछ नहीं होने वाला है तो देवकी महारानी गजसुकुमाल को अरिष्टनेमि भगवान के चरणों में लेकर पहुँचती है और कहती है- ''भगवन्! यह गजसुकुमाल, जिसका नाममात्र सुनना भी दुर्लभ है, गूलर के फूल के समान है। देवानुप्रिय! यह दीक्षा लेना चाहता है। पारिवारिक जनों ने इसे भिन्न-भिन्न प्रकार से समझाया किंतु एक भी बात इसको आगे से पीछे करने वाली नहीं बनी। इसलिए आप इसे दीक्षित कीजिए, मुंडित कीजिए और शिक्षित कीजिए।'' इतना हो जाने पर गजसुकुमाल ईशान कोण में गए और वे मुंडित होते हैं। पंचमुष्टिलोचन करते हैं। बालों को देवकी रानी श्रेष्ठ सुंदर वस्त्र में ग्रहण करती है। उसके पश्चात् देवकी महारानी जिस दिशा से आई उसी दिशा में चली जाती है। दीक्षा के बाद गजसुकुमाल मुनि अरिष्टनेमि भगवान से कहते हैं- ''भगवन्! ऐसा कोई मार्ग बताओ, शॉर्टकट मार्ग बताओ जिससे मैं जल्दी से जल्दी मोक्ष चला जाऊँ।'' तो भगवान ने भी उनकी योग्यता को देखकर बताया कि ''महाकाल श्मशान पर भिक्षु की बारहवीं प्रतिमा की साधना करो।''

अब सारी कहानी को रिवाइज करने का समय नहीं है किंतु यहाँ हमारे सामने दो-तीन बातें आती हैं। अच्छे विचार आ जाएँ तो उसमें विलंब करना नहीं चाहिए। सुमित जी जैसे खड़े हो गए तो उनसे ही यह बात समझ लेनी चाहिए। इसलिए अच्छे विचारों में कभी विलंब नहीं होना चाहिए। जो करना सो अच्छा करना फिर दुनिया में किससे डरना। अपने मन की तृप्ति, संतुष्टि सबसे बड़ी चीज है। वैसा ही काम होना चाहिए। जो मन को तृप्त करे वह कार्य शीघ्र संपन्न करना चाहिए।

दूसरी बात देखो सोमिल ब्राह्मण की। वह श्रीकृष्ण को देखते ही गिर गया। बिना विचारे काम किया तो उसका यह परिणाम आया। सोच-समझकर काम किया होता तो बात ही अलग होती। किंतु उसने सोचा-विचारा नहीं तो उसका परिणाम उसको भोगना पड़ा। कभी भी कोई गलत काम, बुरा काम हो तो दस बार सोचना चाहिए। जितनी देर तक टाला जा सकता है उसे टालने का प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा लक्ष्य बनेगा तो हम सही दिशा में जीवन का परिवर्तन करने में समर्थ हो पाएँगे। आप तो जीवन परिवर्तन लिखकर देंगे किंतु सुमित जी ने तो लिखने के बजाय खड़े होकर बता दिया कि यह जीवन परिवर्तन होता है। सारे लोग दीक्षा के लिए खड़े हो जाएँ, मैं यह भी अपेक्षा नहीं रखता हूँ किंतु अपने कदम तो आगे बढ़ा ही सकते हैं। इस जीवन परिवर्तन चातुर्मास से हम क्या समझे हैं इसलिए एक पेपर तो हो ही जाना चाहिए। पेपर का प्रश्न क्या है? यह एकदम ऑपन बुक की तरह है। एक ही प्रश्न है कि जीवन परिवर्तन की दिशा का क्या अर्थ है? इसका हमें उत्तर देना है।

हमें अपने विचारों में दृढ़ता लानी है। जो विचार बनें उसकी भूमिका दृढ़ होनी चाहिए। ऐसी भूमिका से निःसृत वचन सशक्त हुआ करते हैं। सामने वाले के दिल पर वे असर करने वाले होते हैं। इस प्रकार हमें कुछ जीवन परिवर्तन करने की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयत्न करना है। ऐसा करेंगे तो धन्य-धन्य बनेंगे।

साभार- श्री राम उवाच-23 (सुरीली सूरत)

ज्ञान सार

ऐसी वाणी बोलिए

मधुर वचन

15-16 जनवरी 2024 अंक से आगे....

'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'मित वचन' पूर्ण होने के पश्चात् **'मधुर वचन'** प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय ही व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है....

8 ओवर रिएक्ट करना (Over Reaction)

★ ''अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य।।''

(श्री उत्तराध्ययन सूत्र 1/15)

'अपने आप पर नियंत्रण रखना चाहिए। अपने आप पर नियंत्रण रखना वस्तुत: कठिन है। अपने पर नियंत्रण रखने वाला ही इस लोक तथा परलोक में सुखी होता है।'

★ हर परिस्थिति में हमारे पास दो ऑप्शन होते हैं –

(i) हम नार्मली भी रिएक्ट कर सकते हैं।

(ii) ऐबनार्मली भी रिएक्ट कर सकते हैं।

यानी हमारी प्रतिक्रिया हम पर निर्भर करती है, हमारे अपने व्यक्तित्व पर निर्भर करती है।

★ अधिकतर लोग इससे उलटा सोचते हैं – वे अक्सर ये कहते हुए सुने जाते हैं कि 'परिस्थिति ही ऐसी थी, गुस्सा तो आना ही था' अथवा 'मैंने जो किया उसके अलावा मेरे पास कोई चारा भी नहीं था' आदि-आदि। इन विचारों की वजह से जैसे ही परिस्थिति बिगड़ती है, उनकी स्वस्थिति बिगड़ जाती है। वे अपना संतुलन खो बैठते हैं और फिर इतना रिएक्ट करते हैं कि अपने साथ-साथ दूसरों को भी परेशान कर देते हैं।

आइए, देखते हैं कि लोग कैसे-कैसे रिएक्ट करके छोटी-सी बात को बड़ा बनाते हैं और अपनी खुद की छवि खराब करते हैं –

(A) **सम्मान नहीं मिलने पर :** 'गुस्से में बड़बड़ाना– मैं अमुक कार्यक्रम में गया था। मेरे को तो वहाँ किसी ने पूछा तक नहीं। मैं कोई बिना बुलाए थोड़ी गया था। बुलाया है तो ध्यान रखना चाहिए। अब तो मैंने कसम खाई है कि मैं कभी उसके प्रोग्राम में नहीं जाऊँगा। इसी बात को एक अथवा अनेक लोगों के बीच रिपीट करते रहना।'

(B) **पद नहीं मिलने पर बड़बड़ाना :** 'मैंने संघ के लिए इतना किया, पर मुझे क्या मिला? मुझे अध्यक्ष बनाते तो मैं संघ को कहाँ से कहाँ पहुँचा देता। कोई बात नहीं मैं भी देखता हूँ, अमुक व्यक्ति कितना काम करवाता है।'

(C) **संघ में बार-बार सेवा देने का नंबर अपना आए तो काम भी करना और बड़बड़ भी करना :** 'संघ में बिल्कुल Unity नहीं है। कोई काम नहीं करना चाहता, कोई आगे आना नहीं चाहता, सब मतलबी हैं। सारे काम का ठेका हमारा ही है क्या? हम भी कब तक करेंगे....?' आदि।

Note - जब हम काम कर ही रहे हैं, तो हँसते-हँसते करना चाहिए। नहीं तो ऐसे में हम निर्जरा की जगह कर्म बंधन कर लेंगे। हमें लोगों को सकारात्मक रूप से प्रेरित करने की कला सीखनी चाहिए। कई बार हमारी सोच लोगों के प्रति इतनी नेगेटिव होती है और हमारे काम सौंपने का तरीका भी इतना नीरस होता है कि किसी की काम करने की इच्छा ही नहीं होती। हम काम सौंपने से पहले ही सोच लेते हैं कि 'कोई नहीं करेगा' तो रिजल्ट भी वैसा ही आता है और कॉन्फिडेंस के साथ हँसते-मुस्कुराते हुए सम्मानपूर्वक यदि हम किसी से कहें - 'संघ में अनेक महत्वपूर्ण कार्य हैं, जिन्हें हम सब मिलकर ही संपन्न कर सकते हैं। आप सबके सहयोग के बिना यह संभव नहीं है, क्योंकि सबमें भिन्न-भिन्न क्षमताएँ हैं। ये सारी क्षमताएँ मिलकर एक बड़ी क्षमता बन सकती है और फिर संघ सेवा का कार्य हमारी निजी जिंदगी पर भी बहुत सकारात्मक प्रभाव डालता है। क्या हमें आप सबका सहयोग मिल सकता है?

किसी से काम करवाने के पहले हम खुद पॉलाइट होना सीखें।

(D) **आचार्य भगवन् का चातुर्मास नहीं मिलने पर कहना :** 'गुरुदेव ने हमें चौमासा ही नहीं दिया, ऐसा तो नहीं करना था। हम 5 बस लेकर गए थे। इतनी ठाठ से विनती की, फिर भी दूसरों को दे दिया। वे तो एक बस ही लेकर आए थे।'

महापुरुषों को भीड़ से कोई मतलब नहीं होता। एक बार तो एक अकेले व्यक्ति ने सहज में ही होली चातुर्मास की विनती कर दी और आचार्य भगवन् (श्री रामलाल जी म.सा.) ने उन्हें स्वीकृति प्रदान कर दी। पहले तो उस व्यक्ति को समझ में ही नहीं आया कि सच में स्वीकृति मिल गई क्या? बाद में जब उन्होंने अन्य लोगों के मुँह से सुना कि होली चातुर्मास खुल गया, तब वह वापस गुरुदेव के पास गए और पुन: पूछा, आपने सही में खोल दिया। ऐसे चातुर्मास खुल जाता है क्या? जब कन्फर्म हुआ, तब उन्होंने अपने संघ में सूचना दी। महापुरुषों के मन में कोई भेदभाव नहीं होता, उनकी अंतरात्मा जैसा कहती है, वे वैसा करते हैं। हमें उनके निर्णय में संतुष्टि रखनी चाहिए। हमें थोड़ा खेद हो सकता है, पर क्रोध नहीं होना चाहिए।

(E) **संत-सतियों का चातुर्मास नहीं मिलने पर :** संत-सतियों का चातुर्मास नहीं मिलने पर अथवा संतों का माँगने पर सतियों का मिलने पर अथवा जिन सतियों का मांगा, उनसे भिन्न मिलने पर चिड़चिड़ाना - 'हमको चौमासा ही नहीं दिया, हम धर्म-ध्यान कैसे करेंगे? हमको तो देना ही था। हमको संतों का चौमासा देना चाहिए था। हमको ज्ञानी सतियों का चौमासा देना था। इनका तो व्याख्यान ही पता नहीं कैसा है?' आदि-आदि।

सही तरीका - जो मिला, उसमें खुश रहना।

Note - हमारी सोच और हमारी वाइब्रेशन काम करती है, हम प्रत्येक चारित्रात्मा को ज्ञानी समझकर, उनके प्रति अहोभाव रखकर उनके पास जाएँगे, तो हमें खजाना प्राप्त होगा।

(F) **म.सा. घर पर गोचरी पधारे और खाना नहीं बना हुआ था, इस पर घर के बड़ों द्वारा बहुओं पर चिल्लाना :** 'तुम्हें कितनी बार कहा है, साधु-संत गाँव में रहें तो खाना जल्दी बना लिया करो, पर तुम सुनते ही नहीं। इतने सालों में भी कभी म.सा. मेरे घर से खाली नहीं गए, आज तो मेरा दिमाग खराब हो गया।' थोड़ी-थोड़ी देर में टोंट कसना - 'आज मैं किचन में होती, तो कब से काम हो जाता....' आदि। इस प्रकार कई दिनों तक इस बात के लिए बहुओं को टॉर्चर करना।

सही तरीका - आज म.सा. को सूखा बहराया पर शुद्ध बहराया, इस बात की खुशी है।

Note - पुरानी पीढ़ी के इस व्यवहार से नई पीढ़ी धर्म से विमुख हो जाती है। नई पीढ़ी नियमों का पालन करना चाहती है, पर कई घरों में पुराने लोग अपने ढर्रे को छोड़ना नहीं चाहते। गोचरी के नाम पर जब इतना कलह किया जाता है, तो छोटे और अधिक श्रद्धाहीन हो जाते हैं। अत: इस मामले में ऑवर रिएक्ट न करें

और दोष लगाने की गलत शिक्षा न दें।

(G) **म.सा. गोचरी पधारे, परंतु गवेषणा में संतुष्टि नहीं होने पर थोड़ा बहुत सूखा आहार लेकर पधार गए इस पर हाइपर हो जाना :** 'हमारे घर से तो सालों से गोचरी हो रही है। सब लेके जाते हैं। इनके ज्यादा ही नखरे हैं। हम कोई बेवकूफ थोड़ी हैं....' आदि-आदि। गाँव में अनेक को कहते रहना।

(H) **महाराज बाजू के घर से ले गए, हमारे घर से नहीं ले गए तो प्रतिक्रिया :** महाराज ने मांगलिक नहीं सुनाई तो प्रतिक्रिया। महाराज कम बोलते हैं, ज्ञान-ध्यान में अधिक रहते हैं तो प्रतिक्रिया। महाराज ज्ञान-ध्यान कम सिखा पाते हैं तो भी प्रतिक्रिया।

Note 1 - नेगेटिव लोग हमेशा असंतुष्ट रहते हैं और असंतुष्ट लोगों को कुछ मिलता भी नहीं है।

2 - जब सभी श्रावक एक जैसे नहीं हो सकते, तो सभी साधु एक जैसे कैसे हो सकते हैं? जो जैसा है, उसे वैसा स्वीकार कर लेना चाहिए और कुछ सुधार की आवश्यकता लगे तो दुनिया में चर्चा करने की अपेक्षा, जिसकी बात है उन्हीं से विनयपूर्वक निवेदन कर देनी चाहिए। देवकी महारानी ने भी चर्चा नहीं की, डायरेक्ट संतों से निवेदन किया। **(श्री अंतकृद्दशांग सूत्र तृतीय वर्ग)**

(I) **छोटी-छोटी बात में छोटों पर जरूरत से ज्यादा तेज चिल्लाना :** 'तुम्हारा होमवर्क पड़ा है, तुम्हें समझ नहीं आता क्या? मेरा खून क्यों जलाते हो? सारा सामान अस्त-व्यस्त रखते हो, सफाई से रहना कब सीखोगे? नाक में दम कर रखा है। मार खाए बिना अब तुम्हें अकल नहीं आएगी। मैं हमेशा के लिए तुम्हारा खेलना बंद करा दूँगी....' आदि।

सही तरीका - जिस समय जितना जरूरी हो, उस समय उतना ही बोलना चाहिए और शांति से बोलना चाहिए।

Note - आप इतना ज्यादा बोलेंगे तो बच्चे आपकी बात को Ignore (इग्नोर) करने लगेंगे।

(J) **अपने घर पर अपने किसी छोटे को कोई काम करने के लिए बाहर जाने को कहा, उसके नहीं जाने पर हाइपर होना और बार-बार बोलना :** 'अभी तक नहीं गए? तुम्हें जो बोलता हूँ वो समझ में नहीं आता क्या? मेरा काम जरूरी है और तुम यहीं बैठे हो....' आदि।

Note 1 - कभी-कभी सामने वाला 2-5 मिनट में उस काम को करने वाला ही होता है, उससे पहले ही हम अनेक बार कह देते हैं। इससे वो Irritate (इरिटेट) हो जाता है। काम एक बार सौंप दिया तो उस पर छोड़ दो और यदि मन नहीं मान रहा हो तो उसकी तरफ देखकर हाथ का इशारा करना काफी है। उसे याद आ जाएगा और तब भी न हो तो प्रेम से कह सकते हैं - 'भाई काम जरूरी है, थोड़ा ध्यान रख लेना।'

2 - कभी-कभी लोग काम के लिए मना कर देते हैं, तब भी व्यक्ति हाइपर हो जाता है। उसका Ego Hurt (इगो हर्ट) हो जाता है। मुझे कैसे मना कर दिया?

अरे! जरूरी थोड़ी है कि सब आपकी बात को हाँ ही बोलें। हो सकता है सामने वाले का मन न हो अथवा उसके असाता का उदय हो अथवा उसको कोई दूसरा काम हो।

3 - जिसने हमको मना किया वो यदि दूसरे का काम कर दे तो भी लोग भड़क जाते हैं। मेरा नहीं किया, उसका कर दिया?

अरे! जिसका जैसा मन होगा, वो वैसा करेगा। हम किसी के पीछे नहीं पड़ सकते। हो सकता है उसका काम ज्यादा जरूरी हो अथवा उसे पहले से आश्वासन दिया हुआ हो अथवा संकोचवश उस व्यक्ति को मना नहीं कर पाया हो। कारण कुछ भी हो, हमारा ये आग्रह नहीं रहना चाहिए कि कोई हमारा काम करे ही। हम पूरी दुनिया को अपने हिसाब से नहीं चला सकते।

-क्रमशः

ज्ञान सार

श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 जनवरी 2024 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

प्रश्न 9. श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र की महत्ता का वर्णन कीजिए।

उत्तर अंग शास्त्रों में जो स्थान श्रीमद् भगवतीसूत्र का है वही स्थान उपांग-सूत्रों में श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र का है। यह सबसे बड़ा उत्कालिक सूत्र है। इसमें 7787 गाथाएँ हैं। यह शास्त्र द्रव्यानुयोग (तत्त्वज्ञान) का संक्षिप्त विश्वकोष है, जो तत्त्वज्ञान के गूढ़, कल्पनातीत, सूक्ष्म एवं गंभीर भावों को उद्घाटित करता है। इसलिए श्रीमद् भगवतीसूत्र में अनेक स्थलों में 'जहा पण्णवणाए' अर्थात् प्रज्ञापनासूत्र में विषय की पूर्ति करने हेतु सूचना दी गई है। इसे 'लघु भगवती' भी कहते हैं। क्योंकि हस्तलिखित प्रतियों में 'पण्णवणाए भगवईए' पाठ आता है - यह विशेषण प्रज्ञापनासूत्र की महत्ता का सूचक है।

प्रश्न 10. उत्कालिक सूत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर दिन और रात्रि के दूसरे एवं तीसरे प्रहर में भी अस्वाध्यायिक कारणों को छोड़कर जिन शास्त्रों का स्वाध्याय किया जा सकता है, उसे उत्कालिक सूत्र कहते हैं।

प्रश्न 11. शास्त्रप्ररूपणा का क्या प्रयोजन होता है ?

उत्तर शास्त्र में समाहित विषय जीव की आंतरिक और बाह्य प्रज्ञा को विकसित करके आत्मा में नंदीघोष/प्रसन्नता उत्पन्न करते हैं। यथार्थ ज्ञान से तटस्थवृत्ति का निर्माण होता है। तटस्थवृत्ति कर्मबंध में अंकुश का कार्य करती है तथा सिद्धालय की यात्रा में अग्निबाण (रॉकेट) की तरह सहायक बनती है यानी मोक्ष की क्रियाओं में संलग्न कराकर शीघ्र परमगति प्राप्त कराती है। इस प्रयोजन हेतु विशिष्ट प्रतिभा संपन्न एवं श्रुत संपन्न साधक शास्त्रों की प्ररूपणा करते हैं।

प्रश्न 12. कल्पवृक्ष के समान शास्त्रों को पढ़ने का अधिकारी कौन होता है?

उत्तर शास्त्रों को पढ़ने का अधिकारी वह है जिसे सर्वज्ञ वचनों पर पूर्ण श्रद्धा हो, शास्त्रज्ञान में रुचि हो, तत्त्वज्ञान में अपूर्व आनंद की अनुभूति हो, वर्णित विषय का मनोमस्तिष्क में वैसा ही दृश्य खड़ा रखने का सामर्थ्य हो और स्वाध्याय का तीव्र पुरुषार्थ करने में समर्थ हो तथा श्रुतपरिग्रह को मंगलकारक एवं उपादेय मानने वाला हो। ऐसे अधिकारी को शास्त्रों का अध्ययन करते हुए दो प्रकार के फल की प्राप्ति होती है - 1) अनंतर फल यानी आत्म परिणामों की शुद्धि रूप साक्षात् फल और 2) परंपर फल यानी मोक्ष की प्राप्ति रूप फल।

प्रश्न 13. श्रुत परिग्रह उपादेय (ग्रहण करने योग्य) क्यों है?

उत्तर श्रुत परिग्रह से धर्म-ध्यान की जो गंगा प्रवाहित होती है उससे जीवन का हर क्षण पवित्र बनता है। यह परिग्रह पाप कर्मों को नष्ट करता है और पुण्य का उपार्जन कराके कर्मों की विशेष निर्जरा से सर्वज्ञता प्राप्त कराता है।

प्रज्ञापना - पद 1

प्रश्न 14. प्रथम पद का नाम प्रज्ञापना क्यों है?

उत्तर यह पद प्रज्ञापना विषय को लेकर यानी जीव और अजीव के वर्णन से प्रारंभ हुआ है इसलिए इसे प्रज्ञापना पद कहा गया है। (पद यानी अध्ययन का विभाग)

प्रश्न 15. प्रज्ञापना क्या है?

उत्तर प्रज्ञापना दो प्रकार की कही गई है – जीव प्रज्ञापना और अजीव प्रज्ञापना।

प्रश्न 16. जीव-अजीव प्रज्ञापना का ज्ञाता क्या प्राप्त करता है?

उत्तर जीव-अजीव प्रज्ञापना का ज्ञाता पुद्गल परिणाम का यथार्थ स्वरूप जानने के कारण उस पर होने वाले राग-द्वेष से रहित होकर आत्मनिष्ठ बनकर शांति व समाधिपूर्वक यानी आकुलता-व्याकुलता रहित जीवनयापन करता है।

प्रश्न 17. अजीव प्रज्ञापना क्या है?

उत्तर अजीव प्रज्ञापना दो प्रकार की कही गई है। यथा (वह इस प्रकार है) – रूपी अजीव प्रज्ञापना और अरूपी अजीव प्रज्ञापना।

प्रश्न 18. अरूपी अजीव प्रज्ञापना क्या है?

उत्तर अरूपी अजीव प्रज्ञापना 10 प्रकार की कही गई है। यथा – (1) धर्मास्तिकाय, (2) धर्मास्तिकाय का देश, (3) धर्मास्तिकाय के प्रदेश, (4) अधर्मास्तिकाय, (5) अधर्मास्तिकाय का देश, (6) अधर्मास्तिकाय के प्रदेश, (7) आकाशास्तिकाय, (8) आकाशास्तिकाय का देश, (9) आकाशास्तिकाय के प्रदेश और (10) अद्धासमय।

प्रश्न 19. अजीव प्रज्ञापना और अरूपी अजीव प्रज्ञापना का वर्णन पहले क्यों किया गया है?

उत्तर यद्यपि जीव प्रज्ञापना का निर्देश पहले किया गया है किंतु 'सूची कटाह न्याय' से अजीव प्रज्ञापना एवं अरूपी अजीव प्रज्ञापना का वर्णन पहले किया गया है।

नोट – अल्प विषय का वर्णन पहले करके बाद में विस्तृत विषय का वर्णन करना 'सूचि कटाह न्याय' कहलाता है।

प्रश्न 20. रूपी अजीव प्रज्ञापना क्या है?

उत्तर रूपी अजीव प्रज्ञापना 4 प्रकार की है। यथा – (1) स्कंध, (2) स्कंध के देश, (3) स्कंध के प्रदेश, (4) परमाणु पुद्गल।

प्रश्न 21. रूपी अजीव प्रज्ञापना संक्षेप में कितने प्रकार की है?

उत्तर उपर्युक्त चारों प्रकार के रूपी अजीव संक्षेप में 5 प्रकार के कहे गए हैं। यथा – (1) वर्ण परिणत, (2) गंध परिणत, (3) रस परिणत, (4) स्पर्श परिणत, (5) संस्थान परिणत।

प्रश्न 22. वर्ण परिणत यावत् संस्थान परिणत कितने प्रकार के हैं ?

उत्तर (1) वर्ण परिणत 5 प्रकार के हैं – कृष्ण (काला) यावत् शुक्ल वर्ण परिणत।
(2) गंध परिणत 2 प्रकार के हैं – सुरभि और दुरभि गंध परिणत।
(3) रस परिणत 5 प्रकार के हैं – तिक्त रस यावत् मधुर रस परिणत।
(4) स्पर्श परिणत 8 प्रकार के हैं – कक्खट यावत् रूक्ष स्पर्श परिणत।
(5) संस्थान परिणत 5 प्रकार के हैं – परिमंडल यावत् आयत संस्थान परिणत।

प्रश्न 23. 'परिणत' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है ?

उत्तर यद्यपि पुद्गल, पुद्गल रूप में शाश्वत है किंतु उसके वर्ण यावत् संस्थान शाश्वत नहीं हैं, वे परिवर्तित होते रहते हैं। यह बोध कराने के लिए 'परिणत' शब्द का प्रयोग किया गया है।

साभार- श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

ज्ञान सार

श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

एकादश अध्ययन : बहुस्सुयपुज्जं

15-16 जनवरी 2024 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - सरिता बैंगानी, कोलकाता

पूर्व चित्रण

प्रस्तुत अध्ययन में बहुश्रुत एवं बहुश्रुत के प्रतिपक्षी अबहुश्रुत के अंतर को बताया गया है। 14 स्थानों में साधक अविनीत कहलाता है। अविनीतता के कारण वह ज्ञान आदि गुणों को सम्यक् प्रकार से ग्रहण करने से वंचित रह जाता है।

प्रश्न 29. किस कारण से व्यक्ति को सुविनीत कहा जाता है?

उत्तर भगवान महावीर स्वामी बुद्धिमान सुविनीत के लक्षण की प्ररूपणा को इस प्रकार फरमाते हैं-

अह पण्णरसहिं ठाणेहिं, सुविणीए त्ति वुच्चई।
नीयावत्ती अचवले, अमाई अकुऊहले॥10॥
अप्पं च अहिक्खिवइ, पबंधं च न कुव्वई।
मेत्तिज्जमाणो भयई, सुयं लद्धुं न मज्जई॥11॥
न य पाव-परिक्खेवी, न य मित्तेसु कुप्पई।
अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासई॥12॥
कलह-डमर-वज्जिए, बुद्धे अभिजाइए।
हिरिमं पडिसंलीणे, सुविणीए त्ति वुच्चई॥13॥

भावार्थ- 15 स्थानों से संयत मुनि सुविनीत कहे जाते हैं। इनके 15 गुण इस प्रकार हैं-

1. **नीयावत्ती -** नीचा - जो बड़ों के प्रति अहोभाव रखने वाले होते हैं। जैसे-
   1. गुरु की शय्या एवं आसन से सदा नीचे बैठते हैं।
   2. चलते समय गुरु के पीछे-पीछे चलते हैं।
   3. नीचे झुककर गुरुचरणों में वंदन करते हैं।
   4. नम्रतापूर्वक हाथ जोड़ते हैं।
   5. तथा नम्र व्यवहार वाले होते हैं। ऐसा विनम्र स्वभाव रखने वाले के प्रति स्वत: ही प्रियता बढ़ती है।
2. **अचवले -** अचपल अर्थात् साधक को चार प्रकार से चंचल नहीं होना चाहिए-
   1. **गति अचपल -** दौड़ते हुए नहीं चलते अर्थात् चाल में तेजी है किंतु उतावला होकर नहीं चलते हैं।
   2. **स्थान अचपल -** बैठे हुए भी हाथ-पैर नहीं चलाते तथा स्थिरता से एक आसन पर बैठते हैं।
   3. **भाषा अचपल -** अविद्यमान (असत्य), कठोर या रूखा, पूर्वापर संबंध को बिना विचारे अर्थात् जो बोलने योग्य नहीं उसे नहीं बोलते हैं।
   4. **भाव अचपल -** प्रारंभ किए हुए सूत्र या अर्थ को पूरा किए बिना दूसरे सूत्र या अर्थ को प्रारंभ नहीं करते हैं।

3. **अमायी –** निश्छल – अपनी गलती छुपाने के लिए अथवा अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए कपट नहीं करते क्योंकि उन्हें यह ज्ञात है कि माया पाप की 'जन्मभूमि' है। किसी कार्य को करते समय गलती हो जाना स्वाभाविक है, अत: विनीत व्यक्ति सरलता से अपनी गलती स्वीकार करते हैं। जैसे- मनोज्ञ आहार आदि प्राप्त करके गुरु आदि से छिपाकर अथवा डर से सरस आहार को रूखे-सूखे भोजन से ढक देते हैं, जो ऐसे व्यवहार का सेवन नहीं करते हैं, वह अमायी होते हैं।

4. **अकुऊहले –** अकौतूहली – कौतुक अर्थात् नाटक, तमाशा, इंद्रजाल, जादू-टोना, खेल-तमाशा, चमत्कारिक विद्याओं को देखने के लिए सदा उदासीन तथा अनुत्सुक रहने वाले होते हैं, वे अकौतूहली होते हैं।

5. **अप्पं –** अल्प, इस शब्द के दो अर्थ सूचित किए गए हैं –
   1. थोड़ा – थोड़ा तिरस्कार करते हैं।
   2. अभाव – ऐसे तो वो किसी का तिरस्कार एवं विकथा नहीं करते, किंतु किसी अयोग्य या अनुत्साही को धर्म से प्रेरित करने की दृष्टि से उसका थोड़ा तिरस्कार करते हैं।

6. **पबंधं च न कुव्वई –** क्रोध को लंबे समय तक हृदय में धारण नहीं करने वाले होते हैं अर्थात् शीघ्र ही शांत हो जाते हैं।

7. **मित्तिज्जमाणो भयई –** मित्रता किए जाने पर मित्रता को निभाने वाले होते हैं एवं मित्र के प्रति कृतज्ञ रहते हैं।

8. **सुयं लद्धुं न मज्जई –** श्रुत अर्थात् शास्त्रज्ञान का अध्ययन करके गर्वित नहीं होते हैं, अभिमान नहीं करने वाले होते हैं।

9. **न य पाव-परिक्खेवी –** गुरुजन आदि द्वारा समिति गुप्ति आदि में भूल हो जाने पर भी उनका तिरस्कार नहीं करने वाले अथवा अपना दोष दूसरों पर नहीं डालने वाले होते हैं।

10. **न य मित्तेसु कुप्पई –** अपराध होने पर भी अपने मित्रों पर कुपित नहीं होते हैं।

11. **अप्पियस्सावि मित्तस्स –** अप्रिय मित्र का भी एकांत में गुणानुवाद (प्रशंसा) करने वाले होते हैं अर्थात् दूषण का कथन नहीं करते हैं। जैसे- कोई कृतज्ञ व्यक्ति अप्रिय मित्र के गुण को सामने रखकर उसके सौ दोषों को भुला देते हैं, जबकि अकृतज्ञ व्यक्ति एक दोष को सामने रखकर उसके सौ गुणों को भुला देते हैं।

12. **कलह-डमर-वज्जिए –** कलह अर्थात् वचन युद्ध एवं मारपीट नहीं करने वाले होते हैं।

13. **बुद्धे अभिजाइए –** कुलीन होता है यानी ली हुई जिम्मेदारी को निभाने वाले एवं अपने दायित्व को सफलतापूर्वक निभाने में समर्थ होते हैं।

14. **हिरिमं –** लज्जावान। लज्जा एक प्रकार का मानसिक संकोच है। 'लज्जा' सुविनीतता का एक विशिष्ट गुण है। लज्जावान की आँखों में शर्म होती है। अकार्य को करने की तो दूर उसे सोचने में भी लज्जा करने वाले होते हैं। कदाचित् अनुचित कार्य हो जाने पर भी जो लज्जित होते हैं, वे लज्जावान कहलाते हैं।

15. **पडिसंलीणे –** इसका अर्थ प्रतिसंलीन है। साधक गुरु के पास या अन्यत्र बिना काम के इधर-उधर आते-जाते नहीं तथा अपने मन एवं इंद्रियों को धार्मिक कार्य में लगाकर आयंबिल तप आदि करते हैं। ऐसे आचरण की शिक्षा इस शब्द से दी गई है। रस त्याग आदि से मन, वचन, काया नियंत्रित हो पाते हैं। अत: संयम पालन में, स्वाध्याय करने में, सरलता रखने में, एकाग्रता आदि सभी प्रकार की साधना में रस बाधक है।

इन गुणों से युक्त मुनि ज्ञान आदि सद्गुणों को सम्यक् प्रकार से ग्रहण करने में समर्थ होता है। अत: **विनीतता मोक्ष मार्ग में मूल कारण है।**

-क्रमश:

धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

संस्कार सौरभ

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंदकुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंदकँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चारित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

15-16 जनवरी 2024 अंक से आगे....

सच्ची कसौटी

महाकवि कालिदास ने कहा है –

हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा

अग्नि में डालने पर ही सोने की कालिमा और विशुद्धि का पता चलता है। पीतल परीक्षाओं को सहन नहीं कर सकता, वह काला पड़ जाता है परंतु सोने की यह विशेषता है कि उसे ज्यों-ज्यों तपाया जाता है, त्यों-त्यों वह और अधिक उज्ज्वल होता जाता है। मुझे एक कवि की उक्ति याद आ रही है –

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते,
निर्घषणच्छेदन-ताप-ताड़नैः।
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते,
त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा।।

जैसे घिसने, काटने, तपाने और कूटने से सोने की परीक्षा होती है, उसी प्रकार त्याग, शील, गुण और कार्य से मनुष्य की परीक्षा होती है।

महान व्यक्ति की परीक्षा तो हमेशा ही होती रही है। जो विपत्तियों के विद्यालय में पास होता है, वही महापुरुष बनता है। जो जितना अधिक जीवन की विषम परिस्थितियों में समभाव से रहता है, वह अपना व्यक्तित्व उतना ही ऊँचा बना लेता है।

आनंदकुमारी जी भी इसी वेदना के विद्यालय में पढ़ी हुई थीं। उन्होंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि चाहे कुछ भी हो जाए, चाहे सूर्य पूर्व दिशा को छोड़कर पश्चिम में उदय होने लगे, तो भी मैं अपनी दीक्षा का विचार परिवर्तन नहीं कर सकती। आनंदकुमारी जी को भी प्रकृति एक महासती के रूप में दिखाना चाहती थी, फिर उनकी भी कसौटी क्यों न की जाए?

महासती जी का विहार होने के कुछ दिनों बाद ही आनंदकुमारी जी को परीक्षा देनी पड़ी। आपके मन में जिस समय वैराग्य के अंकुर पैदा हुए थे, तब आपके काका जी श्री गणेशमल जी सरकारी नौकरी के किसी काम से जोधपुर गए हुए थे। उन्हें आपके वैराग्य की लीला का पता नहीं था। वे जोधपुर से आते ही आनंदकुमारी जी की माताजी के पास आए। देवर-भोजाई में काफी लंबी बातचीत हुई। प्रसंगवश वे पूछ बैठे– ''आजकल आनंद कहाँ है? वह यहाँ दिखाई नहीं देती।''

आनंदकुमारी जी की माताजी ने व्यंग भरे शब्दों में कहा– ''आजकल उसकी क्या पूछते हो? वह तो वैराग्य

के सागर में गोते लगा रही है। आजकल उसने गृहस्थ के काम-काज से छुट्टी-सी ले रखी है। पहले यहाँ साध्वी जी थी तो जब चाहती तब उपाश्रय भाग जाती और सामायिक, ज्ञान-ध्यान आदि करने लगती। कई दिनों तक यह सिलसिला चलता रहा। एक दिन अपनी ससुराल में आज्ञा के लिए अड़कर बैठ गई और भोजन तक नहीं किया। उन लोगों ने भी उसे बहुत कुछ समझाया, पर उसने तो वैराग्य की घुट्टी ले रखी थी। समझे तो कैसे समझे? हमने भी यहाँ तक समझाने का परिश्रम किया, पर उसकी सनक न मिटी। फिर हमने उस पर महासती जी के यहाँ जाने-आने की रोक लगा दी, फिर भी कई बार रात्रि को शौच का बहाना करके नोहरे में से होकर चली जाती। वह भी हमने उपालंभ देकर छुड़ा दिया। हमने समझा कि शायद साध्वी जी के यहाँ नहीं जाने से उसके वैराग्य का नशा उतर जाएगा, पर वह तो उतरने के बजाय दोगुना चढ़ गया है। आए दिन आज्ञा के लिए जिद्द कर बैठती है। हम तो उसका यह हाल देखकर परेशान हो गए हैं। हमारे नाक में दम हो गया है। अब आप चाहें तो यह काम हो सकता है। आप चतुर हैं। आप ही उसके वैराग्य का नशा उतार सकते हैं। हम तो कहते-कहते थक गए, पर हमारी तो एक न चली। हमें आशा है कि वह आपके कठोर व्यवहार को देखकर अपने विचारों को छोड़ देगी। हम आपका अहसान न भूलेंगे।''

मनुष्य कई दफा स्वयं को गलत आँक लेता है। वह थोड़ी शक्ति होने पर या थोड़े गुण होने पर भी अपने को अत्यंत शक्तिशाली, महागुणी मानने लगता है। ऐसा क्यों? इसमें मुख्य कारण 'स्वप्रशंसा-श्रवण' है। अपनी थोड़ी-सी प्रशंसा सुनकर वह गर्व से फूल जाता है और स्वयं को सर्वेसर्वा मान बैठता है। बरसाती नदी जैसे थोड़ा-सा पानी आने पर भी भरपूर हो जाती है और इतराती हुई जोर से बहती है और थोड़े-से जल के अभाव में सूख जाती है। इसी तरह अपनी बड़ाई सुनकर संसार के कई लोग अपने को भगवान का अवतार मान लेते हैं। फिर तो उन्हें ऐसा लगता है कि हमारे जैसा चतुर और बुद्धिमान कौन है? ऐसे घृणित भाव उनके हृदय में पैठ जाते हैं।

आनंदकुमारी जी के काका जी भी इसी तरह की प्रकृति के थे। वे अपनी प्रशंसा सुनकर फूले न समाए। सोचा- ''मैं ऐसा उपाय करूँगा कि मेरी एक गर्जना से वह डर जाएगी और फिर कभी दीक्षा का नाम भी नहीं लेगी। इस तरह अगर मैंने यदि उसका दीक्षा लेने का विचार पलट दिया तो सभी मेरा बड़ा भारी उपकार मानेंगे और आजीवन अहसान नहीं भूलेंगे।''

गणेशमल जी वहीं पर बैठे-बैठे ही शेखचिल्ली जैसे पुल बाँधते हुए सोच रहे थे कि मैं पहले क्रमशः साम, दाम और भेद नीति से काम लूँगा। इनसे अगर बात न बनी तो फिर अंतिम शस्त्र दंडनीति का प्रयोग करूँगा। मार के आगे तो भूत भी भाग जाते हैं, फिर वह तो कल की छोकरी है। उसे समझाना कौन-सी बड़ी बात है? इन लोगों ने अभी तक सामनीति का ही इस्तेमाल किया है। भला सामनीति से वैराग्य के मद और चंचल हाथी को वश में किया जा सकता है? उन्होंने अपनी भाभी से कहा- ''मैं अभी जाता हूँ और जैसे होगा वैसे समझाकर उसका दिमाग ठिकाने ला दूँगा। आप लोग किसी बात की चिंता न करें।''

गणेशमल जी यह कहकर सीधे आनंदकुमारी जी के ससुराल पहुँचे। आपके ससुराल में पर्दे का काफी रिवाज था। वहाँ किसी पराए आदमी के सामने दूसरी औरतें नहीं रह सकती थीं। इस कारण गणेशमल जी के आगमन की सूचना पाते ही आनंदकुमारी जी की सासू जी एवं जेठानियाँ आदि अंदर के कक्ष में चली गईं। संध्या हो रही थी। आनंदकुमारी जी सामायिक लिए हुए आत्मचिंतन कर रही थी। काका जी एकदम आपके पास आए। आपने कुशलक्षेम पूछी और आगमन का कारण पूछा। काका जी ने पहले कुछ नरमाई से बातें की और जोधपुर से आने का हाल संक्षेप में सुनाया। फिर आपसे पूछने लगे कि मैंने सुना है तुम दीक्षा ले रही हो। जैन साध्वी बनना चाहती हो। क्या यह बात सच है?

आनंदकुमारी जी- ''हाँ, कई दिन हो गए। करीब

दो या सवा दो साल से मैं इस वैराग्य के झूले में झूल रही हूँ। मैंने संसार के समस्त प्रपंचों की छानबीन कर ली है, उनमें मुझे कोई सार नजर नहीं आया। मैं यह मानव जीवन भोगों की अँधेरी गलियों में व्यर्थ ही गँवाना नहीं चाहती। आप जानते हैं कि मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर है। यह पानी के बुलबुले की तरह थोड़ी देर में नष्ट हो जाता है। मनुष्य बड़ी-बड़ी बातें सोच लेता है, पर वे सारी की सारी पूरी नहीं हो पाती। अंत में वह हाथ मलते-मलते पछताता हुआ इस लोक से विदा होता है। मैं इसी तत्त्व को अपनी आँखों के सामने चित्रपट की भाँति देख चुकी हूँ। इसी बीच महासती जी की मुझ पर अपार कृपा हुई है। उन्होंने मुझे जैनधर्म की विशिष्ट बातों का बोध कराया है। मैं चाहती हूँ कि उनकी गोद में बैठकर परम शांति का लाभ प्राप्त करूँ और गृहस्थी के जाल से मुक्त हो जाऊँ।''

काका जी ने अपना चेहरा गंभीर बनाकर कहा- ''दीक्षा किसलिए ले रही हो? क्या घर में कोई खाने-पीने को कमी है? क्या तेरे ससुराल में तुझे कोई दु:ख दे रहा है?''

आनंदकुमारी जी- ''नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। मुझे सभी प्रसन्नतापूर्वक बुलाते हैं। मेरी सुख-सुविधा का सब ख्याल रखते हैं। खाने-पीने की भी इस घर में कोई कमी नहीं है। कोई व्यक्ति खाने-पीने के दु:ख से घर नहीं छोड़ देता। जैन-दीक्षा ऐसी नहीं है। यहाँ तो वैराग्य के मार्ग पर चलने वाले की पहले जाँच-पड़ताल की जाती है, बाद में दीक्षा दी जाती है। वो भी अभिभावकों की आज्ञा मिलने पर। मैंने अपनी दीक्षा का उद्देश्य आपको समझा दिया। मनुष्य जन्म अनंत पुण्योदय से मिलता है। इस सच्चे अनमोल रत्न को पाकर यों ही काँच के समान दुनिया की रंगीनियों में फँसकर गँवाना नहीं चाहती।''

अब काका जी जरा उग्र होकर बोले- ''तू ऐसा सोचती होगी, पर मैं तो समझता हूँ कि इस तरह घर-बार छोड़ देने से ही किसी को मोक्ष नहीं मिल जाता है। मोक्ष मिलता है संयम का शुद्ध पालन करने से। संयम के मार्ग पर चलना वीरों का काम है, कायरों का नहीं। तू तो अभी बहुत सुकुमारी है, संयम के भयानक कष्टों का सामना कैसे करेगी? यहाँ तो तेरे लिए सभी साधन उपलब्ध हैं, पर दीक्षित हो जाने के बाद तो इतने साधन ले भी न सकेगी और न हर कहीं इतने साधन मिलेंगे। इसलिए मेरा कहना मानकर तू गृहस्थावस्था में ही अपनी साधना कर। उन साध्वियों के फँदे में फँसकर अपना जीवन क्यों फिजूल बिगाड़ती है? संयम का मार्ग तलवार से भी तीक्ष्ण धार वाला है। इस पर तेरे जैसों का चलना दुष्कर है।''

आप शांत मुद्रा से कहने लगीं- ''हाँ, आपका कहना ठीक है कि संयम का मार्ग बड़ा कठिन है, पर मैंने उसे इतने दिनों में परख लिया है। मेरा शरीर वैसे तो कोमल है, पर संयम की साधना के लिए वज्र से भी कठोर है। मैं कायर बनकर अपने साधुत्व की चादर पर एक भी काला धब्बा न लगने दूँगी। काका जी! मैं यह साधना आज से शुरू नहीं कर रही हूँ। मुझे अपने मन से निरंतर बातें करते हुए करीब सवा दो वर्ष हो चुके हैं। बहुत सोच-विचार के पश्चात् मैं इस निर्णय पर पहुँची हूँ कि मुझे विकारों को जीतना है, उनकी दासी बनकर नहीं रहना। मुझे आगे बढ़ना है, निरंतर आगे।''

> *मुझे विकारों को जीतना है,*
> *उनकी दासी बनकर नहीं रहना।*
> *मुझे आगे बढ़ना है,*
> *निरंतर आगे.....।*

गणेशमल जी ने अब भेद नीति का सहारा लिया। ''यह तू तो सिर्फ मुँह से कह रही है। मुँह से बड़ी बातें बना लेना आसान है। कथनी के समान करनी करते आटे-दाल का भाव मालूम पड़ता है। दीक्षा कोई नानी की कहानी नहीं है कि केवल सतीजी के मुँह से पाटी सुन ली और काम पूरा हो गया। मैं तुझे यही सलाह देता हूँ कि तू और ज्यादा सोच-विचार ले। अभी तेरा कुछ नहीं बिगड़ा है। अभी तो बात बनी-बनाई रह जाएगी कि अमुक बाई दीक्षा लेती थी, पर आज्ञा नहीं दी तो वह क्या करे? अभी तू बच्ची है, जीवन का विशाल-मार्ग तेरे सामने है। क्या-क्या उलटफेर आएँगे तुझे क्या पता है?

क्यों दीक्षा लेकर हमारी बदनामी कराती है?''

आनंदकुमारी जी- ''अब आप चाहें जो कहें। मुझे दीक्षा लेने के सिवाय कोई मार्ग ही पसंद नहीं है। मैं केवल मुँह से ही बातें नहीं कर रही हूँ वरन् समय आने पर पालन करके भी दिखा दूँगी। मेरे लिए एक मात्र दीक्षा लेना ही श्रेयस्कर है। मैंने पत्थर की लकीर की तरह अपनी मनोवृत्ति बना ली है, उसे कोई मिटा नहीं सकता।''

सच है, जिसके हृदय रूप सिंहासन पर राम (परमात्मा) बैठ गया है वहाँ रावण रूप काम नहीं बैठ सकता है। पंडितराज जगन्नाथ ने ठीक ही कहा है-

विदुषां वदनाद्वाचः सहसा यान्ति नो बहिः,
याताश्चेन्न परांचन्ति द्विरदाना रदा इव।

विद्वानों के मुख से प्रथम तो कोई वचन झटपट निकलते नहीं और निकल गए तो फिर कमान से निकले तीर की तरह वापिस लौटते नहीं अर्थात् खाली नहीं जाते।

आनंदकुमारी जी भी अपने प्रण पर डटी हुई थी। उनके प्रण में परिवर्तन करने का साहस किसमें था? आपके काका जी ने देखा कि इस पर तो मेरी भेदनीति का भी कोई असर नहीं हुआ है। उलटे यह तो अपने मार्ग पर दृढ़ हो रही है तो उन्होंने अपना रंग बदला। अपनी भृकुटि चढ़ा ली और क्रोध में आकर बोले- ''हाँ, हाँ, मैंने तुझे देख लिया। तू ऐसी सीधी-सादी बातों से थोड़े ही मानने वाली है! तू कुछ पूजा-प्रसाद चाहती है। इतना समझाने के बाद भी तू सही रास्ते पर नहीं आई। लातों के देव बातों से थोड़े ही मानते हैं। ठहर जा, अभी तेरी अकल ठिकाने लगाता हूँ। भट्टी पर कड़ाही चढ़ाकर नीचे अग्नि लगाता हूँ और तेरा सिर नीचे लटका उस्तरे से छीलकर खून निकालता हूँ, तब तू मानेगी। तू सीधी तरह से ही मान जा न? क्यों अपने बूढ़े काका को कुपित कर रही है?''

आनंदकुमारी जी- ''आप चाहे मुझे मारें-पीटें या कुछ भी करें। मैं मौत से डरने वाली नहीं। मौत कोई भयंकर चीज नहीं है। मैं तो बस एक बात कह चुकी हूँ कि मुझे तो संयम ग्रहण करना है। आप बड़े हैं। समझदार होकर भी ऐसा काम करते हों तो करो। मैं अपने विचार-शिखर से एक इंच भी हटना नहीं चाहती।''

समझाने और प्रेम से कहने का कोई परिणाम न निकला तो आनंदकुमारी जी के साथ कठोर बर्ताव किया गया। असफल व्यक्ति क्रुद्ध होता है और क्रुद्ध व्यक्ति मारने-पीटने पर उतारू हो जाता है। गणेशमल जी भी इस बात से अछूते नहीं थे। अब उनके पास एक ही अस्त्र, एक ही नीति बची हुई थी और वह थी दंडनीति। आप पर अन्य तीनों नीतियों का कोई प्रभाव न पड़ा। ईख को ज्यों-ज्यों पीला जाता है त्यों-त्यों वह मीठा रस प्रदान करता है, वैसे ही आपको ज्यों-ज्यों कठोर शब्द या कठोर व्यवहार के द्वारा तंग किया जा रहा था, उतना ही आप शांतिभाव को धारण कर रही थी। मन में समझ रही थी कि यह मेरे संयम की परीक्षा है। पास हो जाने पर मेरे लिए ही फायदा है। काका जी का पारा तो अब आसमान पर चढ़ गया। उन्होंने रौद्र रूप बनाकर आपको सामायिक से बाँहें पकड़कर जोर से दूर घसीटकर ले गए। आपकी सामायिक की बात वहाँ कौन सुनता था? आव देखा न ताव, एकदम दो चार लातें जमा दी। इतने से ही उनका कोप शांत नहीं हुआ। पास में एक पानी का छोटा घड़ा भरा हुआ था, उसे उठाकर आपके मस्तक पर दे मारा और मुँह पर ऐसा कसकर एक चाँटा मारा कि आँखों व मुँह पर अंगुलियों के निशान पड़ गए। शरीर पर खून जम गया। बड़ी तीव्र वेदना हो रही थी, फिर भी आपने उफ़ तक नहीं किया। समझा कि मार देंगे तो मार देंगे। मारकर मेरा क्या छीन लेंगे, मेरे वैराग्य के गुणों को तो लूटने की इनमें ताकत नहीं है। आत्मा तो अजर-अमर है। वह काटने से कटती नहीं, जलाने से जलती नहीं, फिर मैं क्यों डरूँ? उस समय उत्तराध्ययन सूत्र की वह वाणी आपका मार्ग प्रदर्शन कर रही थी -

समणं संजयं दंतं, हणेज्जा कोइ कत्थई।
नत्थि जीवस्स नासु त्ति, एवं पेहेज्ज संजए।।

जो श्रमण है, संयत और दांत है उसे कोई कहीं पर मारे-पीटे तो वह ऐसा विचार करे कि इस आत्मा का नाश होता नहीं, शरीर को पीटकर वह क्या करेगा?

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमशः

बालमन में उपजे ज्ञान

Kids Corner

-मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

जय जिनेंद्र बच्चो!

अब तक के धारावाहिक में हमने कई ज्ञानवर्धक बातें सीखी हैं, साथ ही सामायिक सूत्र भी अर्थ सहित सीखना शुरू किया है। तो आइए, आप और हम सभी मिलकर आगे बढ़ते हैं और देखते हैं कि सौरभ की माता जी ने आज क्या सिखाया।

सौरभ- मम्मी, मेरे सभी दोस्त आ चुके हैं।

(सौरभ की माता जी आज कुछ निजी कार्यों में व्यस्त थी)

सौरभ की माता जी- बेटा! तुम सभी आपस में एक-दूसरे से इच्छाकारेणं का पाठ सुनो, मैं आती हूँ।

सौरभ- नितिन, नीलिमा, पंकज! आओ, हम सब आपस में अपना revision कर लें। आज मम्मी थोड़ा busy है।

नीलिमा- चलो, ऐसा करते हैं कि एक-एक कर सभी बोलते हैं, जिससे अशुद्धि पता चल जाएगी।

(चारों बच्चों ने एक-एक कर अपना पाठ सुनाया और बोले कि जल्दी से सामायिक सूत्र याद हो जाए तो मजा आ जाएगा)

पंकज- क्या 'मिच्छा मि दुक्कडं' कहने मात्र से ही सारे पाप धुल जाते हैं?

(इस प्रश्न से कमरे में सन्नाटा फैल गया)

सौरभ की माता जी- (कमरे में प्रवेश करती हुई) पंकज! बहुत अच्छा प्रश्न किया है आपने। सुनो, केवल शब्दों को बोलने से सारे पाप खत्म नहीं होते, जब तक कि मन में पश्चात्ताप नहीं हो। अतः मन से पश्चात्तापपूर्वक 'मिच्छा मि दुक्कडं' कहने से अवश्य ही सारे पाप निष्फल हो जाते हैं।

नीलिमा- अगर हम मन से 'मिच्छा मि दुक्कडं' बोल दें तो क्या हमने अब तक जो भी पाप किए वो निष्फल हो जाएँगे?

(नीलिमा के प्रश्न से सभी के चेहरे पर एक मुस्कान उभर आई)

सौरभ की माता जी- नीलिमा! तुम्हारा भाव सही है, पर हम कदम-कदम पर पाप करते हैं। जाने-अनजाने में कभी हमारी बातों से किसी को दुःख पहुँचता है तो कभी हमारे उठने-बैठने, चलने-फिरने से छोटे-छोटे जीवों की विराधना होती है या उन्हें कष्ट पहुँचता है।

नितिन- तो हम क्या करें?

(ये जिज्ञासाएँ ही धर्म के प्रति रुचि जगाती हैं)

सौरभ की माता जी- देखो, हमें चलना भी पड़ेगा तो खाना भी पड़ेगा। इन सबका उपाय यह है कि हम ध्यान रखें कि कहीं भी किसी भी जीव मात्र को हमारे द्वारा कष्ट/दुःख ना पहुँचे और अनजाने में पहुँचा भी हो तो प्रतिदिन भावपूर्वक आलोचना सूत्र का पाठ जरूर करें।

(सौरभ की माता जी की बात सुनकर सभी बच्चों के चेहरे खिल उठे)

सौरभ- आगे तस्स उत्तरी का पाठ आएगा ना?

सौरभ की माता जी- बिलकुल, आज हम तस्स उत्तरी का पाठ करेंगे।

(सौरभ की माता जी सभी को तस्स उत्तरी का पाठ उच्चारित करवाती है)

उत्तरीकरण-सूत्र
(तस्स उत्तरी का पाठ)

तस्स उत्तरीकरणेणं,
पायच्छित्तकरणेणं,
विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं,
पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि
काउस्सग्गं। अण्णत्थ उस्ससिएणं,
निस्ससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डूएणं, वायनिसग्गेणं,
भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं,
सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं
आगारेहिं अभग्गो अविराहियो
हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं
भगवंताणं णमोक्कारेणं न पारेमि
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं
अप्पाणं वोसिरामि।

प्रतिज्ञा

1. प्रतिदिन भावपूर्वक 'इच्छाकारेणं का पाठ' बोलना।
2. पूर्व में अर्जित ज्ञान को पुनः दोहराना।
3. इच्छाकारेणं का पाठ किसी को सुनाकर यदि गलती हो तो सुधारना।

तस्स - उस पाप युक्त आत्मा को
उत्तरीकरणेणं - श्रेष्ठ-उत्कृष्ट बनाने के निमित्त
पायच्छित्तकरणेणं - प्रायश्चित्त करने के लिए
विसोहीकरणेणं - विशेष शुद्ध करने के लिए

भावार्थ

ईर्यापथिकी क्रिया से लगा हुआ आत्मा का मैल 'मिच्छा मि दुक्कडं' से कुछ अंशों में दूर हुआ। उसे अधिक शुद्ध और निर्मल बनाकर पाप कर्मों का नाश करने के लिए कायोत्सर्ग करता हूँ। आत्मा को संस्कारित और प्रशस्त बनाने के लिए पापों का प्रायश्चित्त आवश्यक है। प्रायश्चित्त के लिए आत्मा शुद्ध होनी चाहिए एवं आत्मशुद्धि के लिए शल्यों (माया, निदान और मिथ्यादर्शन) का दूर होना जरूरी है, इसलिए मैं शल्य दूर करके आत्मा को शुद्ध करता हूँ। फिर प्रायश्चित्त द्वारा आत्मा को प्रशस्त बनाकर पाप कर्मों का नाश करने के लिए काउस्सग्ग (कायोत्सर्ग) करता हूँ। शरीर के व्यापारों का त्याग काउस्सग्ग है।

चूँकि इस प्रकार का सर्वथा त्याग संभव नहीं है। इसलिए काउस्सग्ग में जो आगार रखे जाते हैं वे आगार इस प्रकार हैं :- 1. श्वास का लेना और निकालना, 2. खाँसना, 3. छींकना, 4. जंभाई आना, 5. डकार आना, 6. अधोवायु निकलना, 7. चक्कर आना, 8. पित्त विकार से मूर्च्छा आना, 9 अंगों का सूक्ष्म हलन-चलन, 11. कफ का सूक्ष्म संचार, 12. दृष्टि का सूक्ष्म संचालन आदि। इनके होते रहने पर भी काउस्सग्ग नहीं टूटता, परंतु इनके सिवाय अन्य स्वाधीन क्रियाओं का मेरे त्याग है। अपवाद स्वरूप इन क्रियाओं के सिवाय कोई भी क्रिया मुझसे न हो और इससे मेरा काउस्सग्ग सर्वथा अभग्न और अखंडित रहे, यही मेरी अभिलाषा है। **'नमो अरिहंताणं'** शब्द द्वारा अरिहंत भगवान को नमस्कार करके काउस्सग्ग को पूर्ण न करूँ तब तक शरीर से स्थिर बनकर, वचन से मौन रहकर और मन से शुभ ध्यान धरकर सब अशुभ व्यापारों का त्याग करता हूँ।

विसल्लीकरणेणं - शल्यों का त्याग करने के लिए
पावाणं - पाप
कम्माणं - कर्मों का
निग्घायणट्ठाए - नाश करने के लिए
काउस्सग्गं - कायोत्सर्ग, शरीर के व्यापारों का त्याग
ठामि - करता हूँ
उस्ससिएणं - उच्छ्वास अर्थात् श्वास लेना
निस्ससिएणं - नि:श्वास अर्थात् श्वास निकालना
खासिएणं - खाँसी आना
छीएणं - छींक आना
जंभाइएण - उबासी आना
उड्डूएणं - डकार आना
वायनिसग्गेणं - अधो वायु निकलना
भमलीए - चक्कर आना
पित्तमुच्छाए - पित्त विकार से मूर्च्छा आना
सुहुमेहिं - सूक्ष्म (थोड़ा-सा)
अंगसंचालेहिं - अंग का संचार (हिलना)
सुहुमेहिं - सूक्ष्म (थोड़ा-सा)
खेलसंचालेहिं - कफ का संचार
सुहुमेहिं - सूक्ष्म (थोड़ा-सा)
दिट्ठिसंचालेहिं - दृष्टि का चलना
एवमाइएहिं - इत्यादि
आगारेहिं - आगारों के
अण्णत्थ - सिवाय दूसरे प्रकार से
मे - मेरा
काउस्सगो - कायोत्सर्ग
अभग्गो - अभग्न
अविराहियो - अविराधित
हुज्ज - हो
जाव - जब तक
अरिहंताणं - अरिहंत
भगवंताणं - भगवान को
णमोक्कारेणं - नमस्कार करके
न पारेमि - न पारूँ
ताव कायं - तब तक काया से
ठाणेणं - स्थिर रहकर
मोणेणं - वचन से मौन रहकर
झाणेणं - मन से शुभ ध्यान धरकर
अप्पाणं - आत्मा को (पहले की अपनी पापी)
वोसिरामि - अलग करता हूँ

संस्कार सौरभ

धन की बेड़ियाँ तोड़ें तो....

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

जिस अपार संपत्ति का मोह त्यागकर उसके स्वामी और उत्तराधिकारी जहाँ संयम के उच्च स्तर पर आरूढ़ हो रहे थे, वहीं राजा इषुकार उस संपत्ति के मोह से अपने आपको पाशबद्ध कर रहे थे। क्या इसे उचित कृत्य कहा जा सकेगा?

पधारिए मुनिवर!

भृगु पुरोहित और उसकी पत्नी यशा ने घर आए दो मुनियों की अभ्यर्थना की।

भृगु पुरोहित इषुकारनगर का प्रतिभासंपन्न राजपुरोहित था, जहाँ के राजा इषुकार थे। रानी का नाम कमलावती था। इस राजपुरोहित की पत्नी यशा वशिष्ठ कुल में जन्मी थी, जिस कारण वह वशिष्ठी भी कही जाती थी।

यह राजपुरोहित परिवार संतानहीन होने से बहुत दु:खी रहा करता था और संतान प्राप्ति का कोई न कोई उपाय करता रहता था। स्वर्ग के दो देवों ने अपने ज्ञान में देखा कि उनका जन्म पुत्र रूप में इसी राजपुरोहित परिवार में होने वाला है, तो वे अपनी माया से मुनिवेश धारणकर भृगु पुरोहित के घर पहुँचे। उन्हीं की अभ्यर्थना इस राजपुरोहित परिवार ने की।

दोनों मुनियों को यथेष्ट भिक्षा देकर भृगु पुरोहित ने अपने दु:ख के विषय में पूछ ही लिया- ''हम संतानहीन हैं। क्या हमारे कभी कोई पुत्र होगा भी या नहीं?''

''पुरोहित जी! आप अब संतानहीन नहीं रहेंगे। आपके यहाँ एक नहीं, बल्कि दो पुत्रों का जन्म होगा और पुत्र भी तेजस्वी एवं विचक्षण होंगे।''

''धन्य हो मुनिवर! हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह भविष्यवाणी अवश्यमेव सत्य सिद्ध होगी।''

मुनि बोले- ''किंतु एक बात और है, वह भी हम तुम्हें बता दें।'' भृगु यकायक डर-सा गया और पूछने लगा- ''ऐसी क्या बात है मुनिवर? कोई क्लेशकारी बात तो नहीं है?''

मुनि- ''नहीं, नहीं, तुम्हारे होने वाले पुत्रों के संबंध में एक अत्यंत ही शुभ बात है।''

भृगु- ''अवश्य कहिए, वह क्या है?''

मुनि- ''वह यह कि वे दोनों बालक अल्पवय में ही श्रमण बनकर धर्म की सराहनीय प्रभावना करेंगे।''

मुनि तो यह कहकर वहाँ से प्रस्थान कर गए, किंतु भृगु और यशा बहुत देर तक अपने आप में ही डूबकर बहुत कुछ सोचते रहे। आखिर ये मौन तोड़ते हुए भृगु ने कहा- ''हे देवानुप्रिये! हमारे पास अपार संपत्ति है और यदि हमारे पुत्र ही अल्पवय में संसार का त्याग कर देंगे तो इस संपत्ति का उत्तराधिकारी कौन होगा, कौन इसका भोग करेगा? यह तो हमारे लिए पुत्रों का होना न होना बराबर हो जाएगा। इसके लिए

कुछ उपाय तो सोचना ही चाहिए।''

''आर्य! होनी को कौन टाल सकता है? भवितव्य तो होकर ही रहेगा। हमारे लिए क्या यह कम हर्षदायक विषय है कि मेरी कोख से एक नहीं, अपितु दो पुत्र जन्म लेंगे और वे दोनों अपनी बाल-क्रीड़ाओं से हमारे चित्त को प्रसन्नता से भर देंगे? संतानहीनता का दु:ख भी मिटेगा ही।''

''यह ठीक है, लेकिन वे जीवनभर हमारे साथ हमारी गृहस्थी को चलाएँ तो कितना आनंददायक रहे। मुनियों ने कहा है कि अल्पवय में ही वे मुनि बनेंगे, किंतु मुनि तभी तो बन पाएँगे, जब वे किसी मुनि को देखेंगे या उनकी संगति करेंगे। हम ऐसा होने ही नहीं देंगे। उन्हें किसी मुनि के संपर्क में आने ही नहीं देंगे और प्रारंभ से ही मुनि की वेशभूषा आदि समझाकर उनसे इतना भयभीत रखेंगे कि कहीं कभी एकांत में उन्हें कोई मुनि दिखाई भी दे तो वे दूर से ही उनसे डरकर भाग जाए।''

''उन्हें ऐसे भयभीत बनाना क्या उचित रहेगा, आर्य?''

''यह उचित-अनुचित का प्रश्न नहीं है। प्रश्न है उन्हें किसी भी विधि से संसार में रोके रखने का, मुनि नहीं बनने देने का। अत: मेरे साथ तुम्हें भी उनके लिए ऐसा ही वातावरण बनाना होगा।''

ऐसा निश्चय कर दोनों पति-पत्नी अपने कार्यों में व्यस्त हो गए। यथासमय यशा ने गर्भ धारण किया और अवधि पूरी होने पर दो पुत्रों को जन्म दिया।

दोनों पुत्र बहुत ही सुंदर और आकर्षक आकृति वाले थे। माता-पिता उन्हें निहारकर, उन्हें क्रीड़ाएँ कराकर तथा उनकी बालसुलभ लीलाओं को देखकर आनंद-विभोर होते रहते थे। माँ की अपार ममता उन पर न्योछावर थी। अब तो माता-पिता की अधिकांश यही कामना रहती थी कि उनके पुत्र दीक्षा लेकर उनसे विलग न हो जाएँ, अत: उनको साधुओं से अधिक ही भयभीत किया करती थी। दोनों बालकों के मन में इससे पक्की धारणा बन गई कि ऐसे-ऐसे वेश वाले साधु अपने पात्रों में छुरी आदि तीखे हथियार रखते हैं और अवसर पाते ही छोटे बालकों को मार डालते हैं। इस प्रकार दोनों बालक साधुओं के नाम से ही काँपने लगे। वे दूर से ही अकस्मात् किसी साधु को देख लेते तो वहाँ से भाग जाते और घर में जाकर छिप जाते।

एक बार ऐसा घटित हुआ कि दोनों बालक खेलते-खेलते नगर से कुछ दूर वनप्रांत में निकल गए। उन्होंने दूर से देखा कि माता-पिता ने जैसा बता रखा था, वैसे कई साधु उसी मार्ग से आ रहे हैं। उन्हें देखकर वे घबरा गए और बचाव में एक घने वृक्ष पर चढ़कर उसकी शाखाओं में इस तरह छिप गए कि मार्ग पर चलते हुए साधुओं की दृष्टि उन पर न पड़ सके। उनको अन्य कोई उपाय नहीं सूझा।

संयोग ऐसा बना कि वे साधु उसी वृक्ष के नीचे आकर ठहर गए। वे काफी दूर से आ रहे थे। अत: विश्राम के लिए उस सघन वृक्ष की छाया उन्हें उपयुक्त लगी। उन्हें तो वृक्ष के ऊपर देखने की कोई आवश्यकता थी नहीं, किंतु वे बालक उन्हें एकटक देखते हुए सोच रहे थे कि अब उनकी मृत्यु आ गई। ये साधु अब अपने पात्र खोलेंगे, उनमें से छुरी आदि शस्त्र निकालेंगे और उन दोनों की हत्या कर देंगे। अब वे मृत्यु से बचकर निकल नहीं सकते। चीखकर अपने माता-पिता को भी रक्षा के लिए नहीं बुला सकते। कारण, अभी तो रक्षा की एक क्षीण आशा है कि वे दोनों कहीं इन्हें दिखाई ही न दें। ऐसा सोचकर बिना हिले-डुले, बिना कोई आवाज किए वे चुपचाप अपनी जगह पर बैठे रहे।

कुछ समय पश्चात् साधुओं ने अपने पात्र खोलने शुरू किए। दोनों बालक शंकित होकर धड़कते दिलों से देखने लगे। लेकिन यह क्या? किसी भी पात्र में कोई शस्त्र नहीं था, बल्कि उनमें तो मात्र पानी या भोजन ही था।

बालकों का भय दूर होने लगा। फिर उन्होंने देखा कि वे छोटे से छोटे प्राणी कीड़े-मकौड़े तक के प्रति पूर्ण दयामय व्यवहार कर रहे थे। उन्होंने बड़ी सावधानी से अपने रजोहरणों द्वारा उस स्थान को साफ किया और

यतनापूर्वक बैठ गए। वे साफ देख सकते थे कि सभी साधुओं के मुख पर प्रेम और करुणा के कोमल भाव थे। क्रूरता तो लेशमात्र भी नहीं थी। साधुओं के प्रति उनका भय एकदम मिट गया। उन्हें लगा कि माता-पिता ने उन्हें न जाने क्यों, ऐसे श्रेष्ठ पुरुषों से भयभीत कर आतंकित बनाए रखा? वे आश्वस्त होकर वृक्ष से नीचे उतर गए।

फिर भी वे साधुओं की आँखों से ओझल दूर ही खड़े रहे, ताकि कहीं कोई शंका की स्थिति हो तो उसकी भी जाँच कर लें। वे एकटक उन साधुओं की शुभभावों से भरी मुखमुद्राएँ निरखते रहे और उनके क्रियाकलापों को परखते रहे। उनके भीतर अनुभूति जागी कि ये साधुवेश और साधुधर्म उनका अपरिचित तो नहीं है। वे इसे जानते हैं। स्मृतियों की गहराई में प्रवेश करने पर उन्हें पूर्वभव का ज्ञान हो गया और तब तो सारी वस्तुस्थिति दर्पणवत् सुस्पष्ट हो गई। वे पूरी तरह निर्भीक होकर साधुओं के पास चले आए और वंदन करके उनकी सेवा में बैठ गए। उनका अंतर्मन अपूर्व आनंद से झूम रहा था। साधुओं ने उन बालकों को प्रतिबोध दिया और बालकों ने दीक्षा ग्रहण करने का दृढ़ संकल्प कर लिया।

दोनों बालक वहाँ से अपने घर पहुँचे और माता-पिता से निवेदन करने लगे- ''पूज्यवर! आपने हमें साधुओं से व्यर्थ ही भयभीत बना रखा था, वे तो दया की मूर्तियाँ हैं और सबके लिए परम उपकारी हैं। हमें आज उनके दर्शन हुए और उनकी अमृतवाणी सुनकर हम दोनों ने साधु बन जाने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। अत: आप हमें इसकी अनुमति प्रदान करें।''

भृगु और यशा को लगा जैसे सारा भूमंडल उनके सामने घूमने लगा हो। उनका खुद को सम्हालना मुश्किल हो गया। वे सोचने लगे- ''क्या मुनियों की भविष्यवाणी उनके सारे प्रयासों के बावजूद भी सत्य होकर ही रहेगी और उनके पुत्र उनकी अपार संपत्ति को ठोकर मारकर साधु बन जाएँगे?'' भृगु ने अनेक तर्क-वितर्कों से अपने पुत्रों को बहुत समझाया कि वे साधु न बनें, पर उन्होंने एक न मानी।

भृगु और यशा एक बार तो घोर निराशा में डूब गए, किंतु दूसरे ही क्षण उनके सामने आशा की स्वर्णिम रेखाएँ खिंच गईं। धन की बेड़ियाँ ही तो उन्हें बाँधे हुए थी और इसी कारण उन्होंने अपने दोनों पुत्रों को साधुओं से भयभीत बना रखा था, ताकि ये धन की बेड़ियाँ उनके दोनों पुत्र भी खुशी-खुशी पहन लें और धन के बंदियों की तरह अपना जीवन व्यतीत कर दें। किंतु उनकी सारी कोशिशें बेकार गई और आज उनके पुत्रों ने वे बेड़ियाँ पहनने से पहले ही उन बेड़ियों से सदा के लिए अपना नाता तोड़ने का संकल्प कर लिया है तो अब इस धन पर भी मोह क्यों रखा जाए? पुत्र बेड़ियाँ पहनने से ही इनकार कर रहे हैं तो उन्हें अब इन पहनी हुई बेड़ियों को उतार फेंकने में क्या आपत्ति होनी चाहिए? बच्चे त्यागी हो रहे हैं तो वृद्ध माँ-बाप होकर भी क्या भोगी बने रहेंगे? पुत्रों से प्रेरणा पाकर भृगु और यशा ने भी साधुधर्म स्वीकार करने का अपना संकल्प कर लिया।

अब एक नया प्रश्न उठ खड़ा हुआ। भृगु दंपत्ति दीक्षा ले रहा था और उनके दोनों उत्तराधिकारी तो दीक्षा के सूत्रधार थे ही, फिर भृगु पुरोहित की अपार संपदा का स्वामी कौन बने? सामान्य परंपरा के अनुसार लावारिस संपत्ति का अधिग्रहण राजा करता है। अत: इषुकार राजा ने उस संपत्ति को अधिगृहीत करने के आदेश दे दिए। गाड़ों में भरकर वह संपत्ति राजपुरोहित के घर से लाकर राज्य के कोषागार में जमा की जाने लगी।

जब इसकी सूचना रानी कमलावती को मिली कि राजपुरोहित को राजा द्वारा दान आदि में दी गई संपत्ति राजा द्वारा ही पुन: अधिग्रहित की जा रही है तो यह बात उसे पसंद नहीं आई। उसे ऐसा करना वमन करके फिर उसे ही चाट लेने जैसा कृत्य लगा। जिस अपार संपत्ति का मोह त्यागकर उस संपत्ति के स्वामी और उत्तराधिकारी जहाँ संयम के उच्च स्तर पर आरूढ़ हो रहे थे, वहीं राजा इषुकार उस संपत्ति के मोह से अपने आपको पाशबद्ध कर रहे थे। क्या इसे उचित कृत्य कहा जा सकेगा? रानी ने राजा से तुरंत भेंट कर निवेदन

किया– ''महाराज! आप एक ब्राह्मण द्वारा परित्यक्त धन को लेना चाहते हैं, क्या यह अशोभनीय नहीं है? उसने तो धन की बेड़ियाँ तोड़ डालीं और आप उन्हीं बेड़ियों को अपने पैरों में डाल रहे हैं, यह कैसा विवेक है?''

रानी का तर्क सुनकर राजा स्तब्ध होकर बोला– ''यह तो सामान्य राजकीय परंपरा है कि जिस धन का कोई स्वामी नहीं रहता, उसका स्वामी राजा हो जाता है। इसमें मैं नहीं समझ पाया कि क्या अशोभनीय है और मेरी क्या विवेकहीनता है?''

''राजन्! आपने जो कुछ दान में दिया, वही धन तो राजपुरोहित के पास है और उसे ही आप पुन: ले रहे हैं, तो क्या यह वमन करके उसे ही चाटने जैसा नहीं है?''

राजा विचार में पड़ गया, पर कुछ बोला नहीं। रानी ने आगे कहा– ''महाराज! जीवन के सम्यक् विकास के बीच में सर्वाधिक बाधाकारी यह धन ही होता है। धन पाँवों की बेड़ी है, जो संयम मार्ग पर चलने नहीं देता। एक अपने पाँवों की बेड़ी तोड़ रहा है और आप उसी बेड़ी को अपने पाँवों में डाल रहें है। क्या यह सोचनीय मनोदशा नहीं है?''

राजा इषुकार विचारों की गहराई में उतर रहा था और रानी के कथन उनके लिए प्रेरणा का काम कर रहे थे। राजा ने कहा– ''महारानी! अब मैं सचमुच इस पर बहुत गंभीरता से विचार कर रहा हूँ।''

''महाराज! विचार ही न करते रहिए, कुछ शुभ निर्णय लीजिए। राजपुरोहित के धन को मैं मांस के टुकड़ों के समान समझती हूँ, जिस पर गिद्ध और चील-कौवे ही मंडराया करते हैं। इस धन को तो गरीबों में बँटवा दीजिए, परंतु इससे भी आगे का निर्णय लीजिए। ये चार भव्य आत्माएँ धन की बेड़ियाँ तोड़कर संयम मार्ग पर अग्रसर हो रही हैं, तो क्यों न हम भी अब इस अवस्था में धन की बेड़ियों को तोड़ दें और समूचे राजपाट को त्यागकर सिद्धि की ओर अपने चरण बढ़ा दें?''

यह सब सुनकर इषुकार की भावना में नया परिवर्तन आया। उसे लगा कि ये धन की बेड़ियाँ मनुष्य को मोह में बाँधे रखती हैं और जब तक मोह बना रहता है तब तक कल्याण का मार्ग दिखाई नहीं देता। रानी स्वयं जब इन बेड़ियों के तोड़ देने के लिए उत्सुक बन गई है तो मैं क्यों पीछे रहूँ? मैं अपने आपको बंदी क्यों बनाए रखूँ? राजा ने रानी के समक्ष नतमस्तक होकर कहा– ''महारानी! तुमने मुझे जो साधना मार्ग दिखाया है, मैं उसी पर चलूँगा। धन की बेड़ियाँ तोड़ें तो सिद्धि का मार्ग मिलता है।''

दो बालकों ने अपने माता-पिता को प्रेरित किया, उनसे अनुप्रेरित हुई रानी और रानी से राजा। प्रेरणा की शृंखला भी कितनी बलवती होती है, जो अंतत: सिद्धि से जुड़ जाती है।

स्रोत– *उत्तराध्ययन सूत्र, चौदहवाँ अध्ययन।*

सार– *धन को यदि पाँवों की बेड़ी मान लें तो उससे मुक्ति ही सच्ची मुक्ति बन जाएगी।*

साभार- धुल गए खून के हाथ

श्रमणोपासक के लिए कोरियर सुविधा प्रारंभ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक डाक द्वारा प्राप्त नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने की शिकायतें अनवरत प्राप्त हो रही हैं। इस समस्या के निवारण हेतु सभी सर्किल के पोस्ट मास्टर जनरल तक कार्यालय द्वारा शिकायतें दर्ज करवाई गईं, फिर भी डाक विभाग द्वारा उचित समाधान नहीं हो पा रहा है। इस असुविधा को ध्यान में रखते हुए संघ द्वारा पाठकों के हित में कोरियर सुविधा प्रारंभ कर दी गई है। जो भी सदस्य इस सुविधा का लाभ लेना चाहते हैं, वे व्हाट्सएप्प नं. 9799061990 पर सम्पर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम

संस्कार सौरभ

भावों का महासागर मानव का मन

-डॉ. आभाकिरण गाँधी, धागड़मऊ

अंतर्मन में श्रद्धा जगती,
गीत प्रभु के गूँजते हैं।
रोम-रोम पुलकित हो जाता,
जब भावों के दरिया बहते हैं।।

मानव मन को नयेपन में रस आता है। वह नयापन है शुभ भावों की अभिवृद्धि, भावाभिव्यक्ति का। भाव स्थान, समय, परिस्थिति नहीं देखते, वह तो अपने आराध्य की समीपता का अनुभव करते हैं। 22 जनवरी 2024 को पूरे विश्व में रामलला की छवि का भाव-दर्शन सबने किया। सब अयोध्या नहीं गए, जो जहाँ था उसने वहीं से अपने भावों का अर्पण किया। यह भावना क्या है? भावना है हमारे वात्सल्य का प्रतीक। जहाँ वात्सल्य की धारा बहती है, वहाँ सब जीवों में राम के दर्शन होते हैं। वात्सल्य में ही माँ के आँचल में अमृतसम पयोधि (दूध) की धारा बहती है। मेरा परिवार, मेरा समाज, मेरा राष्ट्र यह धारा प्रत्येक भक्त के मन में बहे तो हर घर, हर शहर अयोध्या हो जाए और घर-घर खुशी के दीप जलते रहें। जहाँ खुशियाँ व आनंद है, वहाँ पर स्वर्ग जैसा सुख है। भावों का सुख हमारे मन-मस्तिष्क को पावन बनाकर नवऊर्जा का संचार करता है। आज इस भौतिक सुख में ऊर्जा के सशक्तिकरण की बहुत आवश्यकता है। जहाँ देखें वहाँ हर मन मुरझाया हुआ है। यह मुरझायापन कब निकलेगा? यह निकलेगा जब भीतर भावों का दीपक जलेगा। जैसे जहाँ घोर अंधकार हो वहाँ ट्यूबलाइट या बल्ब का प्रकाश होते ही अंधकार गुम हो जाता है, वैसे ही भावों का दीप जलते ही रोम-रोम में भावों की नवचेतना का संचार हो जाता है। 22 जनवरी को भावों की लहर छाई और पूरा विश्व दीपों से जगमगा उठा। इसके पीछे क्या कारण था? वर्षों की तपस्या, इंतजार। भावों की दृढ़ता का ही परिणाम हमने देखा। यह भावों की सरिता अंतर्मन में बहे, जिससे हमारा जीवन दिव्यता से भरपूर बने। किसी भी वस्तु का उपयोग दो प्रकार से हो सकता है- एक है बेस्ट व दूसरा है वेस्ट यानी सही और गलत तरीके से। इसीलिए वस्तु की प्राप्ति का इतना महत्त्व नहीं है, जितना कि उसके उपयोग का है। इस संसार में सभी इतने पुण्यशाली नहीं होते कि जिनको हर वस्तु प्राप्त हो जाए। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें वस्तुओं का योग मिल जाता है, परंतु उनमें उस वस्तु को सम्हालने की कुशलता नहीं होती। कुछ भाग्यशाली ऐसे भी होते हैं जिन्हें वस्तु को सम्हालना तो आता है किंतु उसका सही प्रयोग नहीं जानते। इस पृथ्वी पर चंद लोग ही ऐसे हैं जो वस्तुओं का सही प्रयोग करके उसके मूल्य को बढ़ाते हैं। वास्तव में देखा जाए तो दुर्लभ वस्तुओं को प्राप्त करके उसे सम्हालना एवं सार्थक करना बहुत कठिन है।

साहित्यिक शब्दकोष में दो शब्द मिलते हैं- योग और प्रयोग। प्रयोग के बिना योग व्यर्थ है। प्रयोग भी दो प्रकार का होता है- एक है सत्प्रयोग और दूसरा है दुष्प्रयोग। प्रयोग की सम्यक् विधि के अभाव में दिव्य पदार्थ भी सामान्य बन जाते हैं। कहते हैं कि वर्णमाला के सभी स्वर और व्यंजनों में अमोघ शक्ति है। यदि कोई उन्हें व्यवस्थित रूप से संयोजन करके निष्ठापूर्वक जपने की विधि जानता हो तो वर्णमाला का प्रत्येक अक्षर

महामंत्र बन सकता है। ऐसे ही हम भी हमारी चेतना को सम्यक् बोध की दिशा में लगाएँगे तो पूरा विश्व हमें राममय लगेगा और भक्तिमय भावों की गंगोत्री हर पल बहेगी। उस गंगोत्री में जो भी स्नान करेगा वह जीवन की धन्यता को प्राप्त करेगा।

जीवन भावों का शिखर है,
श्रद्धा की डोरी से सजाना है।
राम गुरु की भक्ति कर,
जीवन को धन्य बनाना है।।
जीवन को धन्य बनाने की पावन बेला आई है।
घर-घर, नगर-नगर, डगर-डगर, शहर-शहर
राम के पावन संदेशों की धूम मचानी है।।
इस अवनिधरा को राममय बनाना है।
महत्तम शिखर के चरणों में श्रद्धा, संस्कार,
प्रेम, स्नेह का भावों से अर्घ्य चढ़ाना है।।
महत्तम महोत्सव के उत्सव को प्रयोगमय बनाना है।
जिनवाणी की अमृतदेशना को हर दिल में बहाना है।।
गूँज उठे धरती व अंबर, तप-त्याग का बिगुल बजाना है।
ज्ञान-ध्यान की अलौकिक आभा से
सोए जनमानस को जगाना है।।
राम नाम अनमोल है हीरा, इसका मूल्य चुकाना है।
अखंड गुरुभक्ति रहे हृदय में, ऐसा भाव जगाना है।।
राममय बने यह संघ सारा ऐसा पुरुषार्थ करना है।
संकल्पों में डटे रहकर, सफलता का दीप जलाना है।।
बढ़े चलें हम रुकें नहीं यह भाव सतत् जगाना है।
हुक्मसंघ की बगिया को सरसब्ज हमें बनाना है।।
नाना गुरु के उपकारों का ऋण हमें चुकाना है।
भौतिकता के फटे विचारों को हमें भुलाना है।
नव सृजन की बेला में नव उमंग भरे
भावों का ऐसा दीप जलाना है।।
महत्तम महोत्सव है आया,
खुशियाँ हजारों भर लाया।
तप-त्याग की बाँसुरी से,
राम नाम के स्वर का नाद गुंजाया।।

आओ मनाएँ 'महत्तम महोत्सव'

हम सभी के आराध्य, नाना गुरु के राम, परमागम रहस्यज्ञाता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का 50वाँ (स्वर्ण) दीक्षा दिवस माघ सुदी 12 संवत् 2081, दिनांक 09 फरवरी 2025 को है। इस पावन अवसर के स्वागत हेतु संघ द्वारा आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव 'महत्तम महोत्सव' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया, जिसका शुभारंभ 13 जुलाई 2022 को हुआ। इस महोत्सव के नौ बिंदुओं के अंतर्गत लगभग प्रत्येक साधुमार्गी परिवार के सदस्य धर्माराधना एवं ज्ञानार्जन से अपना जीवन धन्य बना रहे हैं।

इस पावन अवसर के उपलक्ष्य में हमारा यह प्रयास है कि श्रमणोपासक के आगामी अंक आचार्य श्री रामेश के जीवन पर आधारित हों, जिनमें उनकी दीर्घ कठोर संयम साधना, चारित्र, दीक्षाओं के प्रसंग, संघ एवं समाज के उत्थान के लिए उनके द्वारा किए गए अनमोल प्रयास, जन-मन को पावन करते उनके मार्गदर्शन आदि से संबंधित सामग्री समाहित करने का प्रयास रहेगा। ऐसे किसी विशेष प्रसंग की जानकारी या कोई संस्मरण आपके पास हो तो शीघ्र ही साफ अक्षरों में लिखकर श्रमणोपासक टीम को भिजवाने का कष्ट करें ताकि वह सामग्री आगामी अंकों में प्रकाशित कर उसे संघ व समाज हित में सभी से साझा किया जा सके।

आप अपनी रचनाएँ वॉट्सएप 9314055390 व email : news@sadhumargi.com के माध्यम से भेज सकते हैं।

-सह-सम्पादिका

संस्कार सौरभ

ज्ञान व विनय के अभ्यास से मानव जीवन की सार्थकता

-ऋषभ कुमार मुरड़िया, कानोड़

विनयवान बनें हम, विनयशीलता में ही
समाहित है हमारी संस्कृति।
ज्ञानाभ्यास की सतत् साधना में,
निहित है जीवन की सार्थक अनुभूति।।

विनयशीलता, हमारे जीवन में ज्ञानार्जन एवं ज्ञानाभ्यास की आधारशिला है। ज्ञान के द्वारा जीव हिताहित में विवेक करता है, लोकालोक के स्वरूप को समझता है, जड़ व चेतन का भेद करता है, स्व-पर को जानता है तथा मोक्ष का पथानुगामी बनता है।

मानव जीवन की सार्थकता ज्ञानवान बनने, उसे अपने आचरण में समाहित कर सदाचारी एवं धार्मिक बन स्वभाव में नम्रता व विनम्रता के रूप में विनयशीलता की स्थापना कर अपने बहुमूल्य जीवन को चरमोत्कर्ष स्थिति प्रदान करने में ही निहित है। एक विनयवान, गुणवान, तपस्वी, हितैषी एवं प्रियभाषी व्यक्ति सदैव ज्ञानार्जन का अधिकारी होता है। अपने सतत् ज्ञान के समुचित अभ्यास से मानवीय मूल्यों की स्थापना में अपने को समर्पित कर अपने जीवन को सार्थक बनाता है।

'विद्यां ददाति विनयं, विनयं ददाति पात्रताम्' अर्थात् विद्या से ज्ञान एवं विनय प्राप्त होते हैं। इस विनय के माध्यम से हम अपने भीतर में पात्रता यानी योग्यता को हासिल कर धार्मिक आचरण की ओर प्रवृत्त हो अपने व्यवहार में सरलता, सहजता एवं निर्मलता का वरण करते हुए सद्भाव एवं सद्व्यवहार कर सदाचारी बनते हैं। सदाचारी व्यक्ति का अपना अनुपम आकर्षण होता है। वह सर्वस्व जनों का हित चाहने वाला, परोपकार करने वाला एवं मानवीय मूल्यों की रश्मियों को विसरित करने वाला आध्यात्मिक पुरुष बन जाता है।

भारतीय ऋषि-मुनि एवं संतों के अनुसार 'ज्ञाति ज्ञानम्' अर्थात् जानना ज्ञान है तथा 'ज्ञायते-परिच्छिद्यते वस्तु अवनेनेति ज्ञानम्' अर्थात् जिसके द्वारा वस्तु का यथार्थ स्वरूप जाना जाता है, वह ज्ञान है। इस प्रकार ज्ञान की समुचित परिभाषा देकर ज्ञानाभ्यास करने की प्रेरणा दी गई है। ज्ञान प्राप्ति का उद्देश्यमात्र पुस्तकीय ज्ञान को हासिल करना नहीं है। ज्ञान अपनी अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है, जो सही एवं वास्तविक अर्थों में अपनी विवेकशीलता जागृत कराता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानव का विवेक व विनय डगमगाने लगा है। मानव ज्ञान तो पाना चाहता हैं, परंतु ज्ञान के समुचित अभ्यास के अभाव में उसे विनय के प्रादुर्भाव के स्थान पर अविनय एवं अहंकार ने जकड़ रखा है। अहंकार एवं अविनय से आबद्ध ज्ञान से वह येन-केन-प्रकारेण योग्यता व धन को प्राप्त कर लेता है, परंतु सुसंस्कार व धर्म को अपने जीवन का अंग नहीं बना पाता। हमें अविनय व

अहंकार रूपी दानवों को जड़ से मिटाना होगा ताकि हम अपने में स्व-विवेक जागृत कर विनयशीलता का प्रवाह बना सकें। विवेक की ज्योति किसी पुस्तकालय अथवा कोचिंग सेंटर की धरोहर नहीं हैं। इनसे हम मात्र सूचनाएँ अर्जित करने वाला ज्ञान खरीद रहे हैं। मानव मस्तिष्क में मात्र सूचनाएँ भर लेने से सूचनाओं का विशाल संग्रहालय तो बना सकते हैं किंतु प्रेम व भक्तिपूर्ण अविरल धार्मिकता को संचरित नहीं कर सकते हैं।

'प्रेम: पुमर्थो महान:' अर्थात् प्रेम व भक्ति यानी प्रेमानुभूति। जब साधना साक्षात्कार के साथ मिलती है, तभी ज्ञान का वास्तविक स्वरूप प्रकट हो सकता है। तभी हमारा हृदय विशाल बन सकेगा और तभी हम अपने जीवन में विनय-रश्मियाँ जागृत कर सुसंस्कारों के तले अपने जीवन को खुशहाल बना सकेंगे।

आइए! हम उत्तम मार्दव की राह थाम ज्ञानवान, विनयवान बनने का शुभ संकल्प लेकर जीवन में श्रेष्ठता एवं शुभ्रता को संचरित कर जीवन की सार्थकता को हृदयंगम बनाएँ।

अयोध्या हो या जावद राम दोनों जगह पधारे

भक्ति रस

-श्रमणोपासिका

आज की प्रभात कुछ ज्यादा ही सुनहरी थी,
जिधर देखो उधर एक अलग ही तैयारी थी।
श्रद्धा भाव और उत्साह की बराबरी थी,
500 वर्षों बाद आई अयोध्या की बारी थी।।
हाँ, एक ऐसा उत्सव और भी था,
200 वर्षों की परंपरा का निर्वहन जो होना था।
एक महोत्सव अयोध्या में तो एक जावद नगरी में था,
दोनों जगह थी छटा निराली, रजत कण उड़ाता अनोखा दृश्य था।।
वहाँ भगवाधारी, तो यहाँ धवल वस्त्रधारियों का मेला था,
वहाँ 'राम' का प्रतिष्ठापन, तो यहाँ 'राम' का सृजन सलोना था।
जावद नगरी में आचार्य 'राम' अनेक 'राम' हेतु संयम राह बना रहे थे,
भावों में डूबे जन, अयोध्या में राम आने पर दीपावली मना रहे थे।।
स्थान का महत्त्व बढ़ा, श्रद्धा का सैलाब जोरों पर था,
राम नाम के जयकारों से संपूर्ण माहौल राममय हुआ।
मर्यादा और त्याग की मिसाल पेश करते दीक्षार्थियों का आगमन हुआ,
जावद की पुण्यधरा पर समवसरण-सा पावन दृश्य परिलक्षित हुआ।।
नक्षत्रों का मेल, प्रकृति का खेल, अपूर्व अवसर आज मिला,
एक राम महोत्सव अयोध्या में, तो दूसरा जावद में साकार हुआ।

संस्कार सौरभ

Historic Gathering in Jawad

The Birth of Ten New RAMs

-Urja Mehta, Indore

What would 10 completely different people of different ages coming from different parts of India have in common? Not money, not success but true and honest faith in the teachings of Lord Mahavir and Acharya Bhagwan Shri Ramlal Ji M.Sa. This bunch is joined together by a loftier goal that demands renouncing worldly pleasures.

On the auspicious day of January 22nd, 2024, a spiritual symphony unfolded in Jawad, as thousands gathered to witness a historic Diksha ceremony. Ten souls, choosing to transcend the illusions of worldly attachments, embarked on a journey of renunciation, their Varghoda procession resonating through the city's main avenues, drawing witnesses from every corner of the nation.

Unlike the luxury of grand weddings, the Varghoda procession emanated simplicity and grace. Winding through the city's heart, the procession became a symbol of detachment from the material world, capturing the attention of attendees from diverse backgrounds who lined the streets to witness this unique spiritual spectacle. Following the Varghoda procession, the city bathed in the hues of saffron as the Kesar Chhantai program unfolded.

The collective prayers, chants, and rituals created an atmosphere of divinity, further emphasizing the significance of the day in the annals of our sangh's history. The event served as a beacon of spiritual unity, bringing together a community in celebration of the ten souls choosing the path of renunciation.

Jawad Nagar transformed into a spiritual epicenter on the day of the Diksha ceremony when more than 120 Sadhu-Sadhvis were present on this auspicious land. The ten Diksharthis, converging from different regions of India, added a diverse tapestry to the gathering that attracted the attention of thousands who sought to be witnesses to this monumental event.

This gathering marked a historic first as ten individuals took Diksha simultaneously under the benevolent presence of Acharya Shri Ramlal Ji M.Sa. The announcement of five simultaneous

Dikshas during Chaturmas gradually blossomed into ten, making this event a pioneering and unprecedented occasion in the realm of Jain spirituality.

Upadhyay Pravar Shri Rajesh Muni Ji M.Sa. read out all the paaths (पाठ) to the 10 diksharthis; the climax of the ceremony reached its zenith when Gurudev, in his divine presence, read out the sacred 'करेमि भंते' सूत्र. The air seemed to stand still as the resonating words echoed through the gathering. The moment was surreal as if time had paused to acknowledge the profoundness of the occasion.

This gathering in Jawad, not only witnessed the renunciation of ten souls but also united thousands in a celebration of divinity and spiritual enlightenment.

So far, a total of 386 Dikshas have been completed under the guidance of Acharya Shri Ramlal Ji M.Sa.

तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यक् दर्शनम्

तत्त्वों के अर्थ में श्रद्धा रखने का नाम सच्चा दर्शन कहा गया है। तत्त्वों का श्रद्धान ही दर्शन है अर्थात् वीतरागदेव के निर्देशानुसार सुदेव, सुगुरु एवं सुधर्म पर अटूट विश्वास किया जाए, वह दर्शन शुद्धि है। यह दर्शन शुद्धि साधारण स्तर पर भी रहती है तथा विशिष्टता के स्तरों पर भी पहुँचती है। इस दर्शन शुद्धि पर आवरण भी आ सकता है तथा उस आवरण को हटा भी सकते हैं। दर्शन शुद्धि का मूल उपाय यह है कि मन, वचन एवं काया के योगों का सरलतापूर्वक प्रयोग किया जाए। यौगिक क्रियाओं में से जितनी वक्रता निकलती जाएगी, उतना ही शुद्धि का रूप निखरता जाएगा। अतः सरलता का समावेश करते हुए मनुष्य को अपनी अभिव्यक्ति स्वच्छ से स्वच्छतर बनाने की चेष्टा करनी चाहिए। दर्शन शुद्धि को चिंतामणि रत्न रूप माना है। यदि चिंतामणि रत्न अशुचि में भी पड़ा मिले तो आप उसे लेने का प्रयास करेंगे या नहीं? आप सोचेंगे कि अशुचि साफ कर लेंगे। किंतु ऐसा भी कौन करेगा? वही न, जिसे चिंतामणि रत्न की पहचान हो? जिसको उसकी पहचान और उसका ज्ञान नहीं हो, वह रत्न को देखकर भी उसे ठोकर मार देगा। यह दशा अज्ञान का परिणाम है। जब भौतिक चिंतामणि रत्न की यह स्थिति है तो दर्शन-शुद्धि रूपी आध्यात्मिक चिंतामणि रत्न की कितनी गहरी पहचान होनी चाहिए तथा उसको प्राप्त करने की जिज्ञासा भी कितनी अटूट होनी चाहिए! तत्त्वार्थ श्रद्धान और उससे प्राप्त दर्शन शुद्धि तो चैतन्य चिंतामणि है, जो जड़ रूप चिंतामणि रत्न से कई गुना श्रेष्ठ है और यदि इससे विकास का पहला सोपान प्रकाशपूर्ण बन जाता है तो वह संपूर्ण सोपानों को भी प्रकाशित बना देता है, जिससे विकास की गति निर्बाध बन जाती है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

जैन भागवती दीक्षा : एक अंतर्यात्रा

संस्कार सौरभ

-श्रमणोपासक

जैन धर्म में दीक्षा एक सर्वोत्कृष्ट यात्रा है, जिसमें साधक निरंतर आत्मशुद्धि की ओर गति करता है। दीक्षा आंतरिक चेतना के रूपांतरण का नाम है। नए आध्यात्मिक जीवन का प्रवेश द्वार है दीक्षा। इसमें साधक आंतरिक शुद्धि के द्वारा स्व-पर कल्याण करते हुए निरीक्षण-परीक्षण कर केवलज्ञान प्राप्त कर सकता है। इसी के माध्यम से साधक जैन से जिन, जीव से शिव, साधक से सिद्ध, आत्मा से परमात्मा बन जाता है।

दीक्षा वैसे मोटे तौर से दो रूपों में बाँटी जा सकती है- एक व्यक्ति श्रावक धर्म ग्रहण करता है। वह अपनी शक्ति, मर्यादानुसार हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह का त्यागकर आत्मगुणों को प्राप्त करने की दिशा में सक्रिय बनता है। गृहस्थ में रहते हुए, जिम्मेदारियों को निभाते हुए, न्याय-नीति से कार्य करते हुए जो जीवन में बारह व्रतों को स्वीकार करता है, उसे श्रावक दीक्षा कहा जाता है।

श्रावक दीक्षा से अगली सीढ़ी श्रमण दीक्षा, साधु दीक्षा, मुनि दीक्षा है, जिसमें साध्वी दीक्षा या श्रमणी दीक्षा भी शामिल है। इसमें साधक पूर्ण रूप से साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ता हुआ आजीवन पापकारी प्रवृत्तियों को मन, वचन, काया से स्वयं न करने, दूसरों से न करवाने तथा करते हुए की अनुमोदना न करने की प्रतिज्ञा धारण करता है।

किंतु तीसरा रूप सम्यक्त्व दीक्षा का भी माना जा सकता है। जब व्यक्ति सद्गुरु के सान्निध्य में आकर सत्य की दृष्टि प्राप्त कर धर्म का शुद्ध स्वरूप समझते हुए देव, गुरु, धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धावान होता है। इस प्रक्रिया को सम्यक्त्व दीक्षा कहा जा सकता है।

दीक्षा का अर्थ

पवज्जा, प्रव्रज्या, प्रव्रजित होना, जिसका अर्थ होता है प्रकर्ष रूप से घूमते हुए रहना अर्थात् आत्मा के लिए यात्रा। वैदिक साहित्य में परिव्राजक शब्द आता है, जिसका अर्थ घुमक्कड़ अर्थात् घर-बार का मोह छोड़कर विचरण करने वाला।

भगवान महावीर ने फरमाया है *'भारंड पक्खी व चरेऽप्पमत्ते'* भारंड पक्षी की तरह अप्रमत होकर विहार करो। *'विहारचरिया मुणीणं पसत्था'* विहारचर्या मुनियों के लिए प्रशस्त है।

भगवान ऋषभदेव के अट्ठानवें पुत्रों को उन्हीं के सर्व ज्येष्ठ बंधु भरत का आदेश होता है कि तुम अपने प्राप्त राज्य-शासन पर रहना चाहते हो तो तुम्हें मेरे प्रति समर्पित होकर रहना होगा। सभी भाई उद्विग्न होकर परम योगी ऋषभदेव के पास पहुँचे और उनके सामने राज्य-चिंता का शोक प्रकट किया। भगवान ऋषभदेव ने अपने पुत्रों की राज्य के प्रति आसक्ति देखकर बहुत ही गंभीर, मर्मस्पर्शी और कल्याणकारी उपदेश देते हुए कहा कि मैं उसे ही यज्ञ और धर्म मानता हूँ जो सद्गुणों से युक्त, सम, दम, सत्य, अनुग्रह, तप, तितिक्षा और अनुभव से संपन्न है और जो निरंतर त्यागमय मार्ग की ओर प्रशस्त होता है, उसी का जीवन श्रेष्ठ है। इसी मार्ग पर अनंत आत्माएँ परमात्म-पद प्राप्त कर चुकी हैं। यही श्रेष्ठ मार्ग है।

परम योगी ऋषभदेव के उपदेश को श्रवण कर

सभी पुत्रों ने संसार को त्याग परम धर्म (आत्मधर्म) की पद्धति का अनुसरण किया। यह घटना मानव सभ्यता के आदिकाल की है। इस पर प्रगतिवादी कहे जाने वाले टिप्पणी कर दिया करते हैं कि वे सब भगोड़े थे। क्यों दीक्षित हो गए? क्यों साधु बन गए? उन्हें चाहिए था कि वे भरत से जमकर युद्ध करते और विजेता बनकर राज्य प्राप्त करते। यह सब वैराग्य नहीं शक्तिहीनता है। प्राय: कमजोर लोग ऐसे समय वैराग्य का बाना पहन लेते हैं।

प्रगतिवादियों का यह आक्षेप आज के परिवेश में भी है। आज जो दीक्षा, व्रत और महाव्रत स्वीकार करता है, साधना का पथ अपनाता है, यह सब उनकी नजरों में पलायनता, कर्तव्य से भागना और कोरी भावुकता है। गृहस्थ धर्म को श्रेष्ठ बताते हुए एक विद्वान ने तो ऐसा भी कहा है- **'गृहस्थाश्रम समो धर्म: न भूतो न भविष्यति'** किंतु दूसरी ओर कबीर ने इसी संदर्भ में कहा है- **'यह संसार काँट की बाड़ी, उलझ-पुलझ मरि जाना है'** अर्थात् गृहस्थ जीवन केवल काँटों से भरा हुआ ही नहीं बल्कि काँटों की बाड़ है, जिसमें बारंबार उलझ जाता है, जैसे मक्खी बलगम में फँसकर तड़प-तड़प कर प्राण गँवा देती है।

यदि सत्य तथ्य की ओर दृष्टि लगाएँ तो धर्माचरण, व्रतारोहण, साधना आदि पलायन नहीं, प्रगति है। जीवन की चुनौतियों से भागना नहीं अपितु जूझना है। प्राप्त सुख-साधनों को छोड़ देना और स्व-कल्याणार्थ, स्व-जागरणाय सतत् संघर्षरत हो जाना यदि सचमुच पलायन है तो प्रगति किसे कहेंगे? प्राप्त सुख-साधनों को छोड़ने में कितना दु:ख होता है। आज व्यक्ति अपने सुखों के लिए क्या-क्या अनर्थ कर डालता है, इससे सब परिचित हैं।

जैन दीक्षा प्राप्त करना एक प्रकार से संसारी जीवन से मुक्त होकर धर्म जीवन में जन्म लेना है। यह संयम, तप की वृद्धि करते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होना है। दीक्षा एक तथ्य है। आत्मदर्शन की भावना के लिए जिस साधना की आवश्यकता है, उसी का नाम दीक्षा है। हेमचंद्राचार्य के अनुसार, सुव्रत संग्रह-व्रतों को जीवन में उतारना ही दीक्षा है। यह एक ऐसी अखंड ज्योति है, जिसमें साधक असत् से सत् की ओर, तमस् से आलोक की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर अग्रसर होता है। यह एक ऐसी अद्भुत आध्यात्मिक साधना है, जिसमें साधक बाहर से अंदर की ओर सिमटता है। यह एक अंतर जागरण है। एक बार प्रज्वलित साधना की लौ यदि साधक अपने विवेक से जागृत रखे तो वह लौ निरंतर अधिकाधिक प्रज्वलित होती जाएगी। वह कभी भी बुझेगी नहीं चाहे कितने ही तूफान क्यों न आ जाएँ। एक ऐसी स्थिति निर्मित हो जाएगी, जहाँ सुख-दु:ख, अनुकूल-प्रतिकूल का कोई विकल्प नहीं रहता। साधक शुद्धात्म की ओर दृढ़ कदमों को निरंतर बढ़ाता चला जाएगा।

दीक्षा जीवन सोपान का क्रम है, जिसमें साधक साधना के परम एवं चरम बिंदु पर पहुँचता है। दीक्षा के बाद दिल और दिमाग में जितनी शांति रहती है उतनी शांति कहीं नहीं रहती। जैन दृष्टि से दीक्षा में पाँचों महाव्रतों का जीवनपर्यंत पालन करना होता है। दस प्रकार के मुंडन से दीक्षा होती है। पाँच इंद्रियों के विकारों और क्रोध, मान, माया, लोभ चार कषायों तथा सिर मुंडन, यह दस प्रकार का मुंडन है। इसमें सिर मुंडन द्रव्य मुंडन है, शेष नौ भाव मुंडन है। दीक्षा अपूर्ण जीवन को पूर्ण बनाने की कला है। दीक्षा इसलिए ली जाती है कि साधक अपने विशुद्ध परम तत्त्व की खोज कर सके। इसमें अदम्यवीर वृत्ति है, जो किसी से पराजित नहीं होती। इसमें साधक विकारों से युद्ध करता है तथा उन्हें पराजित करता है। साधक अपनी स्वच्छ जीवन पद्धति का निर्माण कर आने वाले आवरणों को तोड़कर परम चैतन्य चिदानंद स्वरूप परमात्म-तत्त्व को प्रकट करने का प्रयास करता है। यही तो आत्मविकास की प्रगति का मार्ग है। तभी इस मार्ग पर केवल सामान्य स्त्री-पुरुष ही नहीं, बल्कि जिनके पास अपार वैभव के अम्बार लगे हुए थे, लक्ष्मी जिनके राज-प्रासादों में नृत्य करती थी, जो गगनचुंबी अट्टालिकाओं में भौतिक वैभव का आनंद

प्राप्त करते थे, वे भी साधना के इस पथ पर आरूढ़ हुए हैं। इतिहास के स्वर्ण पृष्ठों को जब पलटते हैं तो दृष्टिगत होता है कि ऐसे हजारों श्रेष्ठी पुत्र, सम्राट, सामंत, चक्रवर्ती, मूर्धन्य विद्वान, वीर योद्धा, राजरानियाँ, जो कि भोगों में डूबे रहते थे, उन्होंने भी इन भोगों की निसारता को समझकर इस मार्ग को अपनाया है।

वैसे विश्व के सभी धर्म त्याग को प्रधानता देते हैं किंतु जैन दर्शन ने त्याग की जो मर्यादाएँ स्थापित की हैं वे असाधारण एवं अनूठी हैं। अन्य धर्मों की तरह जैन धर्म त्यागमय जीवन अंगीकार करने के लिए वय का विशेष निर्धारण नहीं करता है। यह अपने आप में बड़ी विलक्षणता है। किसी विचारक ने इस प्रकार कहा है- **'अपुत्रस्य गर्तिनास्ति'** जबकि जैन दर्शन इसे स्वीकार नहीं करता है। आश्रम व्यवस्था में पचास वर्ष के बाद गृहस्थ जीवन से उदासीनता की बात कही जाती है तथा आश्रम का चौथा चरण संन्यास का माना गया है। फिर भी किसी विद्वान ने बहुत सुंदर बात कही है-

अनित्यानि शरीराणि, विभवो नैव शाश्वत:।
मृत्यु सन्निर्हितो कर्तव्य धर्म संग्रहा।।

जीवन क्षणभंगुर है। शरीर एवं धन-संपदा अशाश्वत है। मृत्यु सदैव मनुष्य के मस्तक पर मंडराती रहती है। किसी भी समय जीवन का अंत हो सकता है। अत: धर्माचरण की ओर निरंतर बढ़ते रहना चाहिए। धर्म करने का कोई निश्चित समय निर्धारित नहीं है।

न धर्मकाले पुरुष्य निश्चित,
न चापि मृत्यु पुरुषं समीक्ष्यते।
सदा हि धर्म क्रियेण शोभना,
सदा नरो मृत्यु मुखेमि वर्जते।।

धर्म और मृत्यु का कोई समय निर्धारित नहीं है। मनुष्य प्रतिदिन मृत्यु के मुख में जा रहा है। अत: धर्म कार्य जल्दी से जल्दी करने चाहिए।

जैन धर्म केवल नौ वर्ष की वय के अलावा जाति-पाति, वर्ण-लिंग आदि पर जोर नहीं देता है। दीक्षा का द्वार सभी के लिए खुला है। केवल दीक्षार्थी की योग्यता निर्धारित की गई है। जिसे शुभ तत्त्वदृष्टि प्राप्त हो चुकी है, जिसने आत्मा-परमात्मा के स्वरूप को समझ लिया है, जिसने भोग को रोग, विषयों को विष मान लिया है, जिसके मानस में वैराग्य की उमंगें लहराने लगी हैं, वही त्यागी बनने योग्य है और वही सच्चा दीक्षार्थी है।

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'नमो आयरियाणं और महत्तम श्रद्धा'** पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

-श्रमणोपासक टीम

संस्कार सौरभ

ऊँचे-ऊँचे पाट पर गुरु सा बिराजे...

-श्रमणोपासिका

22 जनवरी 2024, एक ऐसा दिन जिसने जन-जन के मानसपटल पर ऐसी गहरी छाप छोड़ी है, जिसे कभी भुलाया या मिटाया नहीं जा सकेगा। यह तारीख कर्णगोचर होते ही मन-मस्तिष्क में अनेकानेक जीवंत चलचित्र उभर आते हैं। इस दिन एक ओर अयोध्या में राम जन्मभूमि पर नवनिर्मित भव्य मंदिर में मर्यादा पुरुषोत्तम रामलला का महोत्सव मनाया जा रहा था, तो दूसरी ओर साधुमार्गी संघ में आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के पावन श्रीमुख से जावद में दस मुमुक्षु जन जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर स्वयं राममय होने जा रहे थे। इस अवसर पर 135 साधु-साध्वियों के पावन सान्निध्य में वीर परिवारों के साथ हजारों जनमेदिनी की उपस्थिति विशेष दर्शनीय व हर्षातिरेक करने वाली थी।

ऐसे विशेष प्रसंगों पर अधिकांशत: कुछ ऐसा असाधारण घटनाक्रम जरूर होता है जो सामान्य से परे हो। ऐसा ही एक दृश्य जो इस अवसर पर घटित हुआ, वह मेरे स्मृतिपटल पर स्वर्णिम स्मृति के रूप में अंकित हो गया।

दीक्षा के पावन प्रसंग पर इस दिवस प्रात:काल से ही जावद के कृषि मंडी प्रांगण में जनसैलाब उमड़ रहा था। हर किसी की चाह थी कि वो ऐसे स्थान पर बैठे जहाँ से संपूर्ण दीक्षा प्रसंग तो स्पष्ट दृष्टिगोचर हो ही, साथ ही गुरुदेव का श्रीमुख भी नजर आता रहे। इसी वैचारिक मंथन के साथ बच्चे, बूढ़े, जवान अपना स्थान निश्चित कर आसन लगा रहे थे।

प्रात: लगभग 9 बजे कुछ संतों का पदार्पण कृषि मंडी में हुआ। साधु सामाचारी और यतना का विशेष

ध्यान रखते हुए संतों की नजर उस स्थान को निहारने लगी जहाँ आचार्य भगवन् का समवसरण रूपी पाट लगाया जाना था। संतों ने दिशा, अनुकूल स्थान आदि को ध्यान में रखते हुए भगवन् के विराजने हेतु पाट लगाने के लिए एक चबूतरे को चुना।

मेरा मन भावों से तब भर गया जब मेरी आँखें एक अनोखे निर्माण की साक्षी बनीं। जब संतों द्वारा भगवन् का पाट लगाने का स्थान चुन लिया गया और बिजली-सी स्फूर्ति से साधारण पाटों द्वारा यतना-विवेक रखते हुए आचार्य भगवन् का सिंहासनवत् उच्च आसन बनाने की शृंखला प्रारंभ हुई।

जनवरी की कड़ाके की सर्दी में नंगे पैरों से आगे बढ़ते हुए कंधे पर पाटा उठाए धर्मवीर संतजन उस चबूतरे पर पहुँचे। स्थान का प्रतिलेखन कर सर्वप्रथम दो बेंच लगाई गई और उस पर बड़ा पाटा लगाया गया, पर शायद वह पाटा इस अवस्था में थोड़ा डगमगा रहा था। उसे पुन: उतार कर चार बेंच लगाई गई और उस पर संत-महापुरुषों द्वारा बड़ा पाटा लगाया गया। अच्छे से निरीक्षण करने पर पाया गया कि उस पाटे का स्थापन बिलकुल सही हुआ है।

चूँकि अपार जनमेदिनी जिनशासन नायक के दर्शनों हेतु उपस्थित थी, उन्हें आचार्य भगवन् के दर्शन सरलता से हो सके इस हेतु उस पाटे पर एक छोटा पाटा/टेबल और लगाया गया। अब प्रश्न यह उठा कि भगवन् इस पर विराजने के लिए ऊपर चढ़ेंगे कैसे? इस हेतु क्रमश: छोटी-छोटी चौकियाँ लगाई गई ताकि भगवन् आराम से पाट पर विराज सकें।

उस दृश्य को शब्दों में समाहित करने जितनी ताकत शायद मेरे शब्दों में नहीं है। उन संतों की गुरु के प्रति समर्पणा, सेवा व चिंतन देखकर एक ही विचार आया कि जब गुरु वात्सल्य की मूर्ति हैं तो शिष्यों का ऐसा उच्च चिंतन स्वाभाविक ही है।

उच्च तकनीक, कुशल कारीगरी, रंग एवं साज-सज्जा के बिना यह भावों से निर्मित राम-सिंहासनवत् उच्च आसन अद्भुत था और उससे भी अद्भुत नजारा देखने को मिला जब आचार्य भगवन् उस पाट पर विराजे। उस पल ऐसा लग रहा था मानो चतुर्विध संघ के मध्य भगवान महावीर स्वयं आकर विराजे हों। सभी की आँखों को इसी पल का इंतजार था। आँखों एवं मन को सुकून देने वाले इस नयनाभिराम दृश्य को देखने का अवसर अपूर्व पुण्यवानी से ही प्राप्त हुआ था।

भगवन् के विराजने से पहले संपूर्ण पाटों का प्रतिलेखन किया गया और आचार्य भगवन् बिना किसी आलंबन के उस पाट पर विराजमान हुए। भगवन् के एक तरफ उपाध्याय प्रवर तो दूसरी तरफ श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. सूर्य-चंद्र के समान प्रतीत हो रहे थे। इसी अनुक्रम में एक ओर संत-महापुरुष तो दूसरी ओर महासतियाँ जी तथा पाट के समक्ष दस मुमुक्षु भाई-बहिन और पांडाल में जहाँ तक नजर जा रही थी वहाँ तक अम्मा-पिया रूप श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति थी। श्रावक-श्राविकाओं द्वारा की जा रही अनवरत अनुमोदना और जय-जयकारों से संपूर्ण पांडाल संयम रंग में रंगा हुआ नजर आ रहा था।

अहो! ऐसा नयनाभिराम दृश्य था, जिसे देखने को देव भी उत्सुक रहते हैं। ऐसा अवसर जीवन में बहुत ही सौभाग्य से मिलता है। **वह दृश्य मेरे नयनों में ऐसे बस गया जैसे मेरे हृदय में 'राम' बसे हैं।**

(जिनाज्ञा एवं रीति-नीति व मान्यता के विरुद्ध कुछ भी लिखने में आया हो तो 'मिच्छा मि दुक्कडं')

> "प्रश्न किया जा सकता है कि आचार्य की क्या जरूरत है? पर ऐसा प्रश्न अविवेक पर आधारित ही होगा। प्रभु ने चारों तीर्थों की सुरक्षा का महत्त्व समझा और सुधर्मा स्वामी को उस हेतु मनोनीत किया। उनके बाद जम्बू स्वामी और प्रभव स्वामी तथा उनके बाद आज तक यह परंपरा अक्षुण्ण रूप से गतिमान है। यदि परंपरा नहीं होती तो क्या हम आगम का स्वरूप समझ पाते?
>
> **-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.**

संस्कार सौरभ

पतित पावन आचार्य

-सुरेश बोरदिया, मुंबई

वर्तमान में भरत क्षेत्र में तीर्थंकर भगवंत विद्यमान नहीं हैं, लेकिन उनका जिनशासन विद्यमान है। यह जिनशासन उनकी बताई हुई मर्यादाओं एवं आज्ञा के अनुसार प्रवाहमान है। इसी से इस शासन की महानता एवं श्रेष्ठता सिद्ध होती है।

दस कोड़ाकोड़ी सागरोपम का एक उत्सर्पिणी काल एवं दस कोड़ाकोड़ी सागरोपम का ही एक अवसर्पिणी काल, दोनों को मिलाकर बीस कोड़ाकोड़ी सागरोपम का एक कालचक्र होता है। प्रत्येक उत्सर्पिणी एवं अवसर्पिणी काल में एक-एक चौबीसी होती है, जिसमें चौबीस तीर्थंकर होते हैं। ऐसी अनंत चौबीसियाँ हो चुकी हैं। इससे स्वत: ही सिद्ध हो जाता है कि जैन धर्म कितना प्राचीन है।

ऐसा क्या है इस जिनशासन में जो तीर्थंकरों के न होते हुए भी इसकी श्रेष्ठता, महानता, अस्तित्व बना रहता है। राजा-महाराजाओं द्वारा बनाए गए ऐसे कई किले, महल आज भी हमें देखने को मिल जाते हैं, जो सैकड़ों वर्ष बीत जाने के बाद भी आज तक सुरक्षित हैं। उनका निर्माण करने वाले शिल्पकार या कराने वाले राजा-महाराजा आदि कोई भी जीवित नहीं हैं, लेकिन उनके बनवाए हुए महल आदि आज भी सुरक्षित हैं। क्यों? इसका क्या कारण है?

इसके दो मुख्य कारण हैं- पहला- निर्माण की सुदृढ़ता एवं दूसरा- रखरखाव यानी सार-सम्हाल। इन्हीं दो आधार के बल पर वे निर्माण लंबे समय तक टिके हुए रहते हैं, वरना ऐसे भी कई निर्माण हुए हैं जो खंडहर बन गए हैं या अपना अस्तित्व खो चुके हैं।

निर्माण एवं रखरखाव दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों में एक की भी रिक्तता हो तो निर्माण टिके रहना मुश्किल है। पवित्र जिनशासन तीर्थंकर भगवंतों द्वारा निर्मित व स्थापित है और उनके न रहने पर इस जिनशासन का संचालन आचार्य भगवन् जैसे महापुरुष कर रहे हैं। आचार्य भगवन् शासन का मात्र संचालन ही नहीं करते बल्कि इसका संरक्षण, संवर्द्धन भी करते हैं। प्रभु महावीर द्वारा स्थापित यह वर्तमान जिनशासन पाँचवे आरे के अंत तक सुरक्षित रहेगा। यह आचार्यों के कुशल नेतृत्व, संचालन और उनके पुरुषार्थ का ही परिणाम है।

समय-समय पर विश्व में कई धर्म, मत पनपते रहे हैं, लेकिन उनमें से कई तो लुप्त हो चुके हैं और कई लगभग लुप्त प्राय: है। यह जिनशासन ही है, जो आज भी उसी गौरव के साथ विद्यमान है, जिस गौरव के साथ तीर्थंकर भगवंतों ने इसकी स्थापना की थी।

प्रभु महावीर द्वारा प्रथम आचार्य के रूप में श्री सुधर्मा स्वामी से प्रारंभ की गई यह आचार्य पाट-परंपरा अब तक अनवरत चली आ रही है। साधुमार्गी संघ के प्रथम आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. से अब तक नवम पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. सहित सभी आचार्यों ने इस शासन की महिमा को बढ़ाया है।

पिता द्वारा प्राप्त संपत्ति को सुरक्षित रखने मात्र से ही पुत्र सपूत नहीं कहा जा सकता, बल्कि सपूत तो वह है जो उस संपत्ति को बढ़ाए। जिनशासन तीर्थंकरों की विरासत है, जो आचार्य भगवन् जैसे महापुरुषों को सौंपी गई है। आचार्य अपने गुणों, सामर्थ्य के बल पर इसका संरक्षण व संवर्द्धन करते हैं। आचार्य जैसे पुरुषार्थी, पराक्रमी

महापुरुषों का ही सामर्थ्य है, जिससे आज जिनशासन की महिमा किसी प्रांत या देश तक सीमित नहीं है, अपितु कई देशों तक पहुँच चुकी है। छत्तीस गुणों के धारक आचार्य अन्य अनेकानेक विशिष्ट गुणों से संपन्न होते हैं।

गंगोत्री, जहाँ से गंगा का उद्गम हुआ, वहाँ गंगा की धारा कितनी छोटी है, लेकिन वही गंगा आगे बढ़ते-बढ़ते कितनी विशाल बन गई। क्योंकि वह अपने मार्ग में आने वाली सभी छोटी-बड़ी जलधाराओं को अपने में समाहित करती गई। यहाँ तक कि मार्गवर्ती कई नालों के गंदे जल को भी अपने में समाहित कर उसे गंगाजल बना दिया। यह गंगा की महानता व उदारता है।

आचार्य भी ऐसे ही पतित पावन होते हैं। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का मालवा प्रांत में विचरण हो रहा था। उस क्षेत्र में बलाई समाज का अच्छी संख्या में निवास है। लोग उन्हें हीन व नीची जाति का समझकर उनका तिरस्कार करते थे।

इस प्रसंग से रामायण काल का शबरी का प्रसंग सहज ही याद आ जाता है। शबरी एक भीलनी थी, जिसे सामान्य लोग ही नहीं बल्कि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी घृणा की दृष्टि से देखते थे। उसके सौभाग्य से वनवास के दौरान श्रीराम उसकी कुटिया में पधारे। राम ने उस पतित समझे जाने वाली शबरी को पावन बना दिया।

शबरी को सदा दुत्कारने वाले ऋषि-मुनि जब सरोवर पर नहाने गए तो देखा कि सरोवर का जल रक्त जैसा लाल है और उसमें कीड़े कुलबुला रहे हैं। वे ऋषि-मुनि शबरी की कुटिया पर पहुँचे और श्रीराम से निवेदन करने लगे- ''प्रभो! आप पधारो और सरोवर के जल को अपने स्पर्श से निर्मल करने की कृपा करो।''

श्रीराम ने कहा- ''सरोवर का जल मेरे स्पर्श से शुद्ध नहीं होगा, लेकिन यदि माँ शबरी का स्पर्श किया हुआ जल सरोवर में छिड़क दो तो सरोवर का जल स्वच्छ हो सकता है।''

विचार करना होगा कि श्रीराम ने शबरी को कितना पावन बना दिया था। श्रीराम के बताए अनुसार वैसा ही किया गया। शबरी स्वयं श्रीराम की आज्ञा से सरोवर पर गई और अपने दोनों हाथों से जल छिड़का तो देखते ही देखते सरोवर का जल पूर्ववत् स्वच्छ, निर्मल हो गया।

आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. भी पतित पावन श्रीराम की तरह बलाई समाज के लोगों के बीच पधार गए और उन्हें मानव जीवन का महत्त्व समझाते हुए कुव्यसनों से मुक्त करवाकर धर्ममय संस्कारित जीवन जीने की प्रेरणा दी। आचार्यश्री जानते थे कि पीढ़ियों से चला आ रहा बलाई जातीय संबोधन जैसा अस्पृश्यता रूपी कलंक उनके सम्मानित जीवन जीने में अड़चन बना रहेगा। अत: आपश्री जी ने नवीन संबोधन रूप **'धर्मपाल'** का स्वर्ण तिलक अंकित किया। आज धर्मपाल समाज के लोग पूर्ण गौरव के साथ धार्मिक जीवन से स्वयं को धन्य बना रहे हैं। आचार्यदेव ने उन पर बहुत बड़ा उपकार किया।

ऐसे ही पतित पावन आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. ने पूर्वी राजस्थान में विचरण के दौरान वैसा ही दृश्य देखा, जैसा आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. ने मालवा प्रांत में और श्री राम ने वनवास के दौरान देखा। वह दृश्य देखकर आपका हृदय दयार्द्र हो चीख उठा कि क्या नीची समझी जाने वाली जाति के लोगों को सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार नहीं है? क्या मानव जन्म जाति, समाज से ही ऊँचा या नीचा समझा जाएगा? मनुष्य ऊँचा या नीचा, हीन या श्रेष्ठ तो कर्मों से होता है, जन्म या जाति से नहीं। अंतर् की आवाज एक क्रांति बन गई। आपश्री जी ने उन लोगों को धार्मिक, सुसंस्कारित जीवन जीने का अधिकार देते हुए **'सिरीवाल'** संबोधन प्रदान किया।

तारणहार यानी जो तिरा सके। तिराने में वही सक्षम होता है जो स्वयं तिर सके। जो स्वयं नहीं तिर सकता वह अन्यों को तार भी नहीं सकता।

खुद डूबे और डुबाए, ज्यों पत्थर की नाव।
नाव काठ की तिरे-तारे, धरना इसमें पाँव।।

पत्थर की नाव, जो जल में न स्वयं तैरती है न किसी को पार उतारती है। स्वयं तैरने और पार उतारने का कार्य तो काष्ठ की नाव ही कर सकती है। इसलिए कहा है **'तिरे सो तारणहार'**।

आचार्य भी तारण-तिरण की जहाज होते हैं। आत्मकल्याण के लिए स्वयं सांसारिक भोगों को त्यागकर मोक्ष मार्ग की साधना करते हैं। यहाँ उनका लक्ष्य स्वयं के कल्याण तक ही सीमित नहीं है। आपश्री जी पर-कल्याण का भी उतना ही लक्ष्य रखते हैं जितना स्व-कल्याण का। जिस सांसारिक दलदल से वे स्वयं निकल चुके हैं, उसी दलदल से अन्यों को निकालने का लक्ष्य सिर्फ परोपकार या पर-कल्याण की भावना से ही होता है।

तीर्थंकर भगवंतों ने मानव तो क्या जीवमात्र के कल्याण के सदा पक्षधर रहे हैं। भगवान महावीर इसी कल्याण की भावना से चण्डकौशिक की बाँबी तक पहुँच गए। भगवान की वाणी सुनकर चण्डकौशिक का वह भव ही नहीं, अपितु पर-भव भी सुधर गया। जो चण्डकौशिक दुर्गति में जाने वाला था, वह सद्गति में चला गया।

आचार्य भी इसी तरह परोपकारी होते हैं। वे कई आत्माओं को प्रतिबोधित करके उन्हें संयम पथ पर आरूढ़ कर पंचाचार का पालन करवाते हैं। इसी हुक्मी संघ में दीक्षाओं के कई अविस्मरणीय प्रसंग आए हैं। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के सान्निध्य में रतलाम में संपन्न हुआ पच्चीस दीक्षाओं का प्रसंग एवं बीकानेर में संपन्न इक्कीस दीक्षाओं का प्रसंग जिनशासन के लिए अविस्मरणीय बन गया। हाल ही में जावद में आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविंद से 10 दीक्षाएँ संपन्न हुई हैं। समय-समय पर अनेक बार दीक्षा प्रसंगों के ठाठ लगे हैं।

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविंद से अब तक 386 दीक्षाएँ संपन्न हो चुकी हैं। आज लगभग 465 चारित्रात्माएँ गुरु आज्ञानुसार देशभर में विचरण करके जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं।

पारस पत्थर के बारे में अनेक बार सुनने व पढ़ने में आया है कि वह अपने स्पर्श से लोहे को सोना बना देता है। पारस पत्थर सचमुच होता है या मात्र कल्पना है, पता नहीं। होता भी होगा तो उसकी क्षमता कितनी?

गुरु पारस से महान हैं, जो करे समर्पण कोय।
वो तो लोह कंचन करे, गुरु आप सरीखा होए।।

पारस अपने स्पर्श से लोहे को सोना अवश्य बना सकता है, अपने जैसा पारस नहीं बना सकता। लेकिन आचार्य भगवन् तो अपने सान्निध्य में आने वाली भव्यात्मा को आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा तक बना सकते हैं। इसके लिए आवश्यकता है तो केवल और केवल गुरुचरणों में समर्पण की।

वर्तमान आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. की शरण पाकर कितनी ही भव्यात्माओं ने अपना जीवन पावन बना लिया है। आप और हम भी आचार्य भगवन् के दिखाए मार्ग पर बढ़कर, उनके द्वारा प्रदत्त आयामों का अनुसरण कर अपना जीवन धन्य बनाएँ और जीवन को पावन करें।

> "तीर्थंकरों ने जिस परंपरा का प्रणयन किया है, वह आज तक अविच्छिन्न रूप से प्रवाहमान है। उसी धारा में आचार्य अपनी पूरी निष्ठा के साथ संघ-रक्षा के दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं। आचार्य ने जीवन का बलिदान दिया है, अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया है। संघ को, संघ के एक-एक सदस्य को ज्ञान, दर्शन और चारित्र से पल्लवित किया है। अब हमें भी जागृत हो संघ उत्थान की ओर कदम बढ़ाना चाहिए।
>
> **-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.**

भक्ति रस

अहो उल्लासित हैं दसों दिशाएँ

-संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

राम चमकते भानु समान्य

इधर दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर, संक्रांत हो रहे आदित्यराज।
मानो मिथ्यात्व से सम्यक्त्व में, प्रतिष्ठित हो रहे उनके प्राण।।

उधर अभिजीत नक्षत्र में स्वयं को जीतने, किसी ने थाम ली संयम की डोर।
उतार फेंकी अंधकार की मैली चादर, संयम की धवल चादर ली ओढ़।।

आओ! आओ! देखो!
बाईस जनवरी का सूर्य, अपने अलौकिक प्रकाश पुंज के साथ।
आज धरा पर उतरा, सहस्र रश्मियों का पकड़कर हाथ।।

शायद, साक्षी बनना था उसको भी, इतिहास बनाने वालों का।
प्रसंग था, दशरथ नंदन राम की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा का।।

दूसरी तरफ राम ही दशरथ बन, प्रतिष्ठित कर रहे दीक्षार्थियों में नव प्राण।
अहो! उल्लासित हैं दसों दिशाएँ! दसों प्राण में अलौकिक स्पंदन हो रहा।।

दीक्षार्थियों का करने अभिनंदन, सारा जहाँ जय-जय बोल रहा।
सहज ही सज गया, देखो न पूरा हिंदुस्तान।।

जगह-जगह तोरण सजे, बंध गए बंधनवार।
बाजे ढोल नगाड़े, गूँजे गली-गली मंगलगान।।

मानो देव उतर आए धरती पर, गाने दीक्षा का महिमा गान।
दीक्षा-दानेश्वर आचार्य राम की, कर रहे जय-जयकार।।

राम-राम, जय गुरुवर राम की धुन, कानों में मिसरी घोल रही।
पूरे विश्व की धड़कन में, दोनों राम की ही धुन गूँज रही।।

प्रत्यक्ष तो नहीं हूँ उन घटनाओं के समक्ष, आँखें बंद हैं भीग रहे हैं नयन।
रूह है मेरी कहीं, सिद्धाधिपति राम के आस-पास।
प्राण है मेरे, सिद्ध बनने की राह पर चल रहे जो राम।।

युद्ध सारे बंद हो गए जहाँ तन-मन के,
वह शख्स स्वयं 'अयोध्या' (अ+युद्ध) बन जाता है।
राम ही समा गए जिसके हृदय में, वह स्वयं राम बन जाता है।।

दस राही जो थाम रहे, शासन की बागडोर को।
लक्ष्मण बन लक्ष्य साध रहे, पकड़ संयम की डोर को।।

सीता सम बन चली बहिनें, सहनें कष्ट घनघोर जो।
राम की छत्रछाया में बने, धीर-वीर-गंभीर वो।।

हनुमान का जिक्र न आए तो, रामायण अधूरी रहती है।
गुरुभक्ति ही हनुमान को, तमस् से प्रकाश में लाती है।।

दसों ही मुमुक्षुओं का, एक पल में जीवन संवर गया।
पंच महाव्रत सिर धरते ही, जीवन का हर पल निखर गया।।

सत्ताईस गुणों को धारकर, दस मुंडन को स्वीकार कर।
निकल पड़े दसों ही महारथी, अपने ही नाम में राम को सजाकर।।

बाईस जनवरी मानो बाईस परीषहों को सहने तैयार हो गई।
जहाँ कभी युद्ध नहीं होते, ऐसी अयोध्या (मोक्ष) जाने की तैयारी हो गई।।
ऐसी अयोध्या जाने की तैयारी, देखो 'संध्या' आज हो गई।।

श्रमणोपासक के बाल पाठकों के लिए नववर्ष पर एक सुनहरा अवसर

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक में **'बालसुलभ भाव'** नाम से नवीन कॉलम की शुरुआत की जा रही है। इस हेतु बच्चों द्वारा स्वलिखित रचनाएँ उनके नाम के साथ प्रकाशित की जाएगी। यह क्रम प्रतिमाह के धार्मिक अंक में रहेगा। तो उठाइए अपनी कलम और गुरु, धर्म, संस्कार, समर्पण, संघ विषयक लेख, कविता, कहानी, रूपक हिंदी व अंग्रेजी भाषा में लिखकर हमें अतिशीघ्र ही वॉट्सएप नं. 9314055390 एवं ईमेल **news@sadhumargi.com** पर भिजवा दें।

–श्रमणोपासक टीम

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

दिसंबर 2023, परीक्षा परिणाम

प्रारंभिक जैन सिद्धांत भूषण

रोल नं. (भूषण 1/2/3/4- प्राप्तांक) 100 (2-89, 3-71), 713 (1-41), 740 (2-95), 754 (2-93) 763 (2-76), 770 (4-45), 773 (2-60), 777(1-65), 778 (1-95), 784 (1-82, 2-76)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत विभाकर

रोल नं. (विभाकर 1/2/3/4- प्राप्तांक) 712(4-49), 745(1-69), 753(2-63), 761(1-94, 4-92)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत विशारद

रोल नं. (विशारद 1/2/3/4- प्राप्तांक) 169 (4-65), 196 (2-49), 523 (3-71)

वैकल्पिक जैन स्तोक भूषण

रोल नं. (भूषण/कोविद-प्राप्तांक) भूषण 761 (90), कोविद 740 (82)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत कोविद

रोल नं. (कोविद 1/2/3/4- प्राप्तांक) 178 (1-72, 2-41), 534 (1-78, 3-81, 4-72), 591 (2-41), 712 (2-47, 3-41), 713 (2-26), 736 (2-26), 741 (3-47, 4-65), 752 (2-89), 759 (2-40, 3-61), 761 (3-93), 774 (2-74)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत मनीषी

रोल नं. (मनीषी 1/2/3/4- प्राप्तांक) 206 (1-90, 2-90, 4-96), 745 (2-94,3-63, 4-91)

वैकल्पिक जैन संस्कृत प्राकृत

रोल नं. (भूषण/विशारद - प्राप्तांक) भूषण 712 (63), विशारद 588 (88), मनीषी 588 (88)

॥ जय गुरु नाना॥ ॥ जय महावीर॥ ॥ जय गुरु राम॥

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

अंतर्गत श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334001 (राज.)

परीक्षा कार्यक्रम : जून, 2024 समय : दोपहर 12 से 4 बजे

प्रारंभिक व वैकल्पिक परीक्षाओं की समय सारिणी

दिनांक	परीक्षा का नाम	प्रश्न-पत्र
06/06/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	प्रथम-पत्र
08/06/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	द्वितीय-पत्र
10/06/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	तृतीय-पत्र
12/06/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	चतुर्थ-पत्र
14/06/2024	जैन आगम कंठस्थ भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
15/06/2024	राष्ट्रभाषा - भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
16/06/2024	जैन स्तोक - भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
17/06/2024	जैन संस्कृत - प्राकृत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-

नोट :- 1. आप सुविधानुसार परीक्षा केंद्र ले सकते हैं।

2. परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी अपना आवेदन समता भवन, बीकानेर कार्यालय में 15 मई, 2024 तक अनिवार्यत: जमा करावें।

3. अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - दिलीप राजपुरोहित (7231933008)

गादी गाँव जावद बना तीर्थधाम
दीक्षा प्रसंग से संपूर्ण माहौल हुआ राममय

गुरुचरण विहार

युग निर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में 10 दीक्षाएँ सोल्लास संपन्न, समवसरण-सा लगा ठाठ

बड़ी दीक्षा नयागाँव में, निम्बाहेड़ा में पाँच फरवरी को दीक्षा, होली चातुर्मास मंगलवाड़ चौराहा हेतु स्वीकृत, मुमुक्षु सौरभ संचेती की दीक्षा 9 जून के लिए घोषित

> संयम कायरों का नहीं, शूरवीरों का मार्ग है - आचार्य श्री रामेश
>
> हर पल हर क्षण आत्मा को साधते रहें - उपाध्याय प्रवर

गादी गाँव जावद।

ज्ञान और क्रिया का संगम, जिनशासन का तेज सितारा।
कलयुग में भी गुरु रामचरण में, सत्युग-सा है सदा नजारा।।

आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की क्रियोद्धारक स्थली गादी गाँव जावद में एक साथ दस दीक्षाओं का विराट आयोजन अलौकिक, अविस्मरणीय एवं अद्भुत रहा। समवसरण का अद्भुत दृश्य देखकर जैन-जैनेतर अभिभूत हो गए। द्वय महापुरुषों के पावन सान्निध्य में चारित्रात्माएँ मालवा के विभिन्न क्षेत्रों को निरंतर अपनी चरणरज से पवित्र कर रहे हैं।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा ने जावद से अठाणा, कनेरा, खोर आदि अनेक क्षेत्रों में धर्म का अलख जगाया। नवदीक्षित चारित्रात्माओं की बड़ी दीक्षा नयागाँव में संपन्न हुई। निम्बाहेड़ा में 05 फरवरी को मुमुक्षु बहिन मोक्षा जी भंडारी, रतलाम की जैन भागवती दीक्षा संभावित है। शासन दीपक श्री हर्षित मुनि जी म.सा. एवं श्री गगन मुनि जी म.सा. का केसुंदा की ओर, शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा. एवं श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. का बेगूँ की ओर, शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा., श्री अटल मुनि जी म.सा., श्री उदित मुनि जी म.सा. जावद में एवं साध्वीवर्याओं द्वारा निरंतर प्रभावी विचरण जारी है।

अच्छा कार्य तुरंत करें, पर बुरे कार्य को टालें

16 जनवरी 2024, आचार्य श्री हुक्मीचंद स्मृति भवन, जावद। प्रात:कालीन प्रार्थना की धर्म स्वर लहरी पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को भगवान महावीर की अमृतवाणी का रसपान कराते हुए परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *"संतों की संगत उच्च भावों में रमण कराती है। राजनीति एवं व्यापार के*

गुर तो कहीं भी मिल सकते हैं, लेकिन संतों की संगति मिलना आसान नहीं है। इससे समाधि आएगी, परमार्थ से परिचय होगा। सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना से मोक्ष प्राप्त होगा। अपनी पहचान के साथ जो ज्ञान होता है वह ज्ञान सम्यक् ज्ञान है। आत्मा के बोध के साथ ज्ञान की अनुभूति होनी चाहिए। मुझे आत्मा का बोध हो रहा है या नहीं, चिंतन अवश्य करें। संवेदना का बोध आत्मा ही कराती है। जिस शरीर से आत्मा निकल जाती है उस शरीर के सामने से कितने ही लोग निकल जाएँ, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। साधु को मुर्दे के समान हो जाना चाहिए। चाहे कोई गाली दे या प्रशंसा करे, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरा मन ऐसा हो जाए कि कोई प्रतिकूल स्थिति आ जाए तो भी कोई फर्क नहीं पड़े। मन को इतना मार लो कि उस पर किसी बात का कोई असर नहीं पड़े। मोक्ष के नजदीक पहुँचना है तो मन को मारना पड़ेगा। अच्छा काम सबसे पहले करना चाहिए और बुरे कार्य को सदैव ही टालते रहना चाहिए।''

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि समय का महत्त्व समझना चाहिए। नित्य नियम का पालन होना चाहिए। समय का निर्धारण करो और आज क्या अच्छा काम किया व क्या बुरा, इसका चिंतन अवश्य करना चाहिए। धर्म पर श्रद्धा मजबूत रखते हुए प्रत्येक अच्छे कार्य से पूर्व नवकार महामंत्र गिनने का लक्ष्य रखें।

साध्वी श्री भावना श्री जी म.सा. ने फरमाया कि अपूर्व ज्ञान, दर्शन, चारित्र के धनी राम गुरु पर हमें गर्व है। साध्वीवृंद ने **'ज्ञान की रोशनी देने वाले गुरुवर राम'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

आत्मबल की सक्रियता से कषाय कमजोर

17 जनवरी 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में प्रभु व गुरुभक्ति से जीवन धन्य बनाने के पश्चात् परमागम रहस्यज्ञाता आचार्यदेव के पावन सान्निध्य में विशाल धर्मसभा का आयोजन किया गया। आपश्री जी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए उपस्थित गुरुभक्तों को अपनी अमृतमय वाणी में फरमाया कि *''हमारी समर्पणा सुमतिनाथ भगवान के चरणों में हो। जिसकी मति अतृप्त रहती है, उसको कहीं भी तृप्ति नहीं होती। समुद्र में अथाह पानी होता है, किंतु कुएँ का पानी ही प्यास बुझा सकता है। मन में तृष्णा रहती है, क्योंकि इंद्रियों की तृप्ति नहीं होती है। वैसे ही शराबी की प्यास नहीं बुझती। जैसे ही समय होता है वह शराब की दुकान पर पहुँच जाता है। हमारी क्या स्थिति है? हमको आँख, नाक, कान मिले हैं, किंतु हमारी आँखें दर्पण के बिना हमें नहीं देख पाती। हमने खुद को देखा कि नहीं? हमने कितनी जगह जन्म लिया और कितनी जगह मृत्यु प्राप्त की? अनेकानेक बार जन्म व मृत्यु का क्रम चला है। जब हमारे मन में अच्छे विचार प्रविष्ट होते हैं तो बुरे विचार गायब हो जाते हैं। हमारा व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए कि हम बाहरी बातों एवं वस्तुओं से प्रभावित नहीं हों। यदि प्रभावित होते हैं तो हम अंतर में प्रवेश नहीं कर पाएँगे। रोग से मुकाबला कर सकते हैं, किंतु मौत से मुकाबला नहीं कर पाते। मन में भय नहीं होना चाहिए अपितु श्रद्धा मजबूत होनी चाहिए। अपने आप में स्थित होने का प्रयास करना चाहिए। जहाँ आत्मबल सक्रिय हो जाता है वहाँ कषायों का जोर नहीं चलता। भगवान के चरणों में अपने आपको समर्पित कर दो। जब आत्मा में दृढ़ विश्वास हो जाता है तो फिर बाहर की कोई वस्तु हमें प्रभावित नहीं कर पाती। आस्था गहरी और दृढ़ होगी तो भगवान की ऊर्जा हमारे भीतर आने लगेगी।''*

श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि ज्यादातर लोग यही सोचते रहते हैं कि लोग क्या कहेंगे। लोगों के बारे में सोचते-सोचते आदमी लोगो बनकर ही रह जाता है। सोच को बदलो तो सितारे बदल जाएँगे।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'आओ पधारो गुरुराज'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने **'राम राम जय गुरुवर राम'** भजन प्रस्तुत करते हुए अधिकाधिक सामायिक, संवर करने की प्रेरणा दी। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने महापुरुषों के सान्निध्य का लाभ उठाने व धर्म-ध्यान से जुड़ने की अपील की। स्कूलों में व्यसनमुक्ति के कार्यक्रम हुए।

शिक्षकों के मध्य श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आप जिस पद पर हैं, उस पद का ईमानदारी से निर्वहन करें। सत्य, अहिंसा, व्यसनमुक्ति व चारित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दें। साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा. ने बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कार देने व विनय, विवेक, नैतिकता, मानवता के गुणों से भरपूर करने की प्रेरणा दी। व्यसनमुक्ति के संकल्प हुए।

साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु जो कहें उसे स्वीकार कर लो। दोपहर में आचार्य भगवन् के सान्निध्य में आगम वाचनी, चर्चा आदि धार्मिक आयोजन हुए।

मोड़ी गाँव में उपाध्याय प्रवर ने अपनी मधुरवाणी में फरमाया कि **"हम क्या लक्ष्य लेकर चल रहे हैं? हम और कुछ न कर सकें तो कम से कम सुनने का लाभ लेवें। हमने कई प्रवचन सुने, तीर्थंकर प्रभु के दर्शन भी किए। नाना गुरु ने संवत्सरी के प्रवचन में छठे आरे का वर्णन सुनकर संयम जीवन अंगीकार करने का निर्णय कर लिया। लेकिन हमने क्या किया? जैन धर्म के तीन मुख्य सिद्धांत हैं- 1. सम्यक् ज्ञान, 2. सम्यक् दर्शन, 3. सम्यक् चारित्र। इनके अभाव में हमारा लक्ष्य सिद्ध या सार्थक नहीं हो सकता। एक व्यक्ति बाजार जाता है, तरह-तरह की चीजें देखता है, घूमता-फिरता है, फिर खाली हाथ लौट आता है और दूसरा व्यक्ति बाजार जाता है तो वहाँ न कुछ देखता है, न घूमता है, सिर्फ जो खरीदना है वह लेकर वापिस आ जाता है। हम सिर्फ देख रहे हैं या कुछ खरीद भी रहे हैं।"**

भोजन करने से पूर्व 'नमो अरिहंताणं' एवं भोजन करने के बाद 'नमो सिद्धाणं' बोलने के पच्चक्खाण कई भाई-बहिनों ने लिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा. आदि ठाणा धर्मसभा में सुशोभित थे। शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-8 का महावीर भवन में मंगल पदार्पण हुआ। आस-पास के अनेक स्थानों सहित स्थानीय गुरुभक्तों की अच्छी उपस्थिति थी।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा., श्री किशोर मुनि जी म.सा., श्री छत्रांक मुनि जी म.सा., श्री प्रणत मुनि जी म.सा., श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा., श्री निर्वाण मुनि जी म.सा., श्री इभ्यमुनि जी म.सा., श्री राजन मुनि जी म.सा., श्री नमन मुनि जी म.सा., श्री सौरभ मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-11 का मोड़ी से गादी गाँव जावद गुरुचरणों में पधारना हुआ। परम पूज्य आचार्य प्रवर आदि ठाणा-22 का सुसान्निध्य प्राप्त हुआ।

गुरु और वृद्ध की सेवा करने से एकांत सुख

18 जनवरी 2024। प्रात:काल दिन का शुभारंभ भक्ति एवं श्रद्धा से ओत-प्रोत प्रार्थना से हुआ। शास्त्रज्ञ, उत्क्रांति प्रदाता आचार्यदेव के पावन सान्निध्य में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आपश्री जी ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *"एकांत सुख का मार्ग कैसे प्राप्त किया जाए? इसका उपयोग कैसे किया जाए? चीज वही है, इसके उपयोग का तरीका आना चाहिए। गुरु और वृद्ध की सेवा करने से एकांत सुख मिल सकता है। नमना पड़ेगा, झुकना पड़ेगा। वर्तमान युग में कोई झुकना नहीं चाहता है। हमारी संस्कृति बड़ी सुंदर एवं सभ्य है। अरिहंत भगवान सिद्ध भगवान को इसलिए नमस्कार करते हैं कि मुझे आपका रास्ता मंजूर है।*

संबंध जोड़ने के लिए नमस्कार करते हैं। संबंध जुड़ेगा तो असर आएगा। संबंध जुड़ जाएगा तो उनके गुण हमारे भीतर आने शुरू हो जाएँगे। धर्म अच्छे ढंग से करेंगे तो उसका लाभ अवश्य मिलेगा। भावना जरूरी है। माता-पिता भी आशीर्वाद देने के लिए झुकते हैं। आशीर्वाद कभी खाली नहीं जाता। अपने आपको योग्य बनाना, पात्र बनाना। सुमतिनाथ भगवान के चरणों में अपने भाव अर्पण करो। गुरु सेवा में हर समय उपस्थित रहना चाहिए। कठिनाई के समय अपने सामर्थ्य को बढ़ाना चाहिए।''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जितनी सुविधाएँ बढ़ रही हैं, उतनी ही समस्याएँ व बीमारियाँ बढ़ रही हैं। सुख-सुविधाओं से मुख मोड़ना है और गुरु के पास जाकर कषायों से मुक्त होना है। गुरु केवल रास्ता दिखा सकते हैं, मंजिल की ओर हमें स्वयं चलना पड़ेगा।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने **'राम राम जय गुरुवर राम'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए धर्म क्रिया करने की प्रेरणा दी। साध्वी श्री काव्ययशा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि बुरे विचार मन में जल्दी आते हैं। सही सोचो, जिससे समाधि मिले। समाधि में रहना आवश्यक है। नकारात्मक सोच से दूर रहें। साधना का परिणाम गुरु में देखें। समाधि बनी रहेगी तो मोक्ष दूर नहीं है।

सबसे कठिन तपस्या है स्वार्थ त्याग

19 जनवरी 2024। धार्मिक दैनंदिनी में धार्मिक क्रियाओं के साथ प्रात:काल में अनेक कार्यक्रम संपादित हुए। तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने प्रवचन सभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए दिव्यवाणी में फरमाया कि *''गुरु-भगवंतों की सेवा से मोक्ष पाया जा सकता है। पर्युपासना कैसे की जाए? मन, वचन, काया का एकाकार होना चाहिए। उपासना का अर्थ है समीप में आसन लगाना। दिल से दूरी नहीं होनी चाहिए। गुरु की आराधना करने वाला चाहे 2000 किमी. दूर हो, लेकिन यदि पास में रहने वाला शिष्य पर्युपासना नहीं करता है तो दूर रहकर आराधना करने वाला शिष्य श्रेष्ठ है। सेवा कैसे करनी चाहिए? हमेशा निष्काम सेवा करनी चाहिए। निष्काम सेवा में कोई अपेक्षा नहीं होती है। जैसे विचार होंगे वैसा कार्य होगा। आत्मसमाधि से आत्मशांति मिलती है। प्रशंसा ऐसी भूतनी है जो जिसको लग जाए उसे अहंकार हो जाता है। प्रशंसा की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। आपसे पड़ोसी तो राजी हैं, पर घर के सदस्य आपसे कितने खुश हैं? मोक्ष की टिकट आसान नहीं है। माँगने से मोक्ष नहीं मिल जाता। माँगने से तो भीख मिल सकती है। मुझे साता मिलनी चाहिए, किंतु साता चाहने वाले को मोक्ष नहीं मिलेगा। दूसरों को साता पहुँचाओगे तो मोक्ष मिल सकता है। निष्काम भाव से कार्य करें। मासखमण करना सरल है, किंतु निष्काम सेवा कठिन है। सुख एक ही है। अव्याबाध सुख गुरु और वृद्ध की सेवा करने से प्राप्त होगा। निष्काम सेवा उच्च कोटि की साधना है। मान-अपमान में एक जैसा रहना चाहिए। अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। बिना किसी कारण और भावना के अपना धर्म निभाना चाहिए।''*

शासन दीपक श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जैसे सुबह, दोपहर, शाम एवं रात्रि है वैसे ही हमारे जीवन का क्रम चलता है। बचपन यानी सुबह का काल, जवानी यानी दोपहर का काल, बुढ़ापा यानी सायंकाल एवं मृत्यु अर्थात् रात्रिकाल। मृत्यु का प्रार्थी कोई नहीं। सभी यहाँ जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। यही हमारी भ्रांति है कि मृत्यु का ठिकाना नहीं है। वास्तव में जन्म के बाद मृत्यु निश्चित है, किंतु मृत्यु के बाद जन्म जरूरी नहीं है। जितना समय व्यतीत हो रहा है उतने ही हम मृत्यु के निकट जा रहे हैं। जन्म-मरण से छुटकारा मिले यही भावना भानी चाहिए।

साध्वी श्री निरामगंधा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि श्रद्धा हमारे भीतर में उतरी है या ऊपर-ऊपर तैर रही है? मन में मेरुपर्वत के समान श्रद्धा होनी चाहिए। हम गुरु राम के हृदय में बसें, ऐसा लक्ष्य रखें।

शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री वनीता श्री जी म.सा., साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'संत ना देखा, ऐसा संत ना देखा'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री अनाकार श्री जी म.सा. के 26 उपवास के अवसर पर साध्वीवृंद ने तपस्या गीत प्रस्तुत किया। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी दी।

आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. के 220वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भाई-बहिनों ने 5-5 सामायिक सहित धर्माराधना की। चित्तौड़गढ़ एवं ब्यावर संघ ने चातुर्मास एवं अन्य प्रसंगों तथा निम्बाहेड़ा संघ ने 05 फरवरी दीक्षा प्रसंग की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

प्रशंसा में नहीं, प्रसन्नता में जीएँ

20 जनवरी 2024। भोर के मंगलमय आगाज में प्रार्थना की मधुर स्वरलहरी से संपूर्ण वातावरण पावन बन गया। आचार्य श्री हुक्मीचंद स्मृति भवन में आयोजित विशाल धर्मसभा में प्रशांतमना आचार्यदेव ने उपस्थित ज्ञानपिपासुओं के हृदयों को आत्मतृप्त करते हुए अपनी पीयूषवर्षिणी वाणी में फरमाया कि *''गुरु और वृद्ध की सेवा सर्वोत्तम उपासना है। वृद्ध का अर्थ है अनुभवी। अनुभवी के पास बैठोगे तो ज्ञान के साथ-साथ अनुभव भी मिलेगा।*

ज्ञानी से ज्ञानी मिले, करे ज्ञान की बात।
मूरख से मूरख मिले, तो के घूँसा के लात।।

जैसी हमारी संगति होगी, जैसा हम आदर्श चुनेंगे, वैसा ही हमारा जीवन मुड़ता जाएगा। अरिहंत भगवान को नमस्कार इसलिए किया जाता है कि मेरे भीतर अर्हता, योग्यता प्रकट हो जाए और निकट समय में मोक्ष जाने की योग्यता प्रकट हो जाए। सिद्ध बनने की योग्यता भीतर प्रकट हो जाए तो कोई तनाव नहीं। व्यक्ति प्रशंसा चाहता है, पर ज्ञानीजन कहते हैं कि प्रशंसा मत चाहो, प्रशंसनीय बनो। यदि हम प्रसन्नता में जीते हैं तो प्रशंसनीय बन जाएँगे। हमें अपनी समीक्षा करनी होगी कि मैं प्रसन्नता में जीता हूँ या तनाव में। मान-अपमान के क्षणों में हमें समभाव रखना होगा। गुरु और वृद्ध की सेवा करके अपना जीवन वैसा ही ढाल लेना चाहिए। प्रसन्नता में जीने का मतलब है अपने दायित्व का निर्वाह किया है।''

श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने **'चरणों में वंदन हमारा, गुरु राम स्वीकारो'** भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हमें संसार अच्छा लगता है या संयम? संयम के संस्कार बच्चों को बचपन से दें। आज बाल-युवा पीढ़ी किधर जा रही है, पता ही नहीं। जीवन में सर्वश्रेष्ठ अगर है तो वह है संयम।

साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् गाँवों, नगरों में धर्म की अभूतपूर्व अलख जगा रहे हैं। सभी अपनी एक संतान गुरुचरणों में समर्पित करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने **'आगम ने जब आकार लिया, गुरु राम उसे तब नाम दिया'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। दीक्षा के पावन प्रसंग हेतु दीक्षार्थी भाई-बहिनों का मंगल पदार्पण हुआ। द्वय महापुरुषों के पावन सान्निध्य में दोपहर में आगम वाचनी एवं प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

युवती शक्ति सेमिनार में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने मार्गदर्शन प्रदान किया। अमेरिका से जीवन के. राज आदि ने गुरुदर्शन व सेवा का लाभ लिया। समता महिला मंडल एवं बहू मंडल, जावद द्वारा चौबीसी कार्यक्रम मांगलिक भवन में संपन्न हुआ।

संयम का मार्ग आत्मक्रांति का मार्ग है
10 मुमुक्षु भाई-बहिनों का भव्य वरघोड़ा
जन-जन स्वागत के लिए उमड़े

मनुष्य जन्म मिलना भाग्य है।
जिनशासन मिलना सौभाग्य है।
गुरु राम का सान्निध्य मिलना अहोभाग्य है।

वीर प्रभु के शासन में वीरता को पाएँगे।
राम गुरु के शासन में रामराज्य महकाएँगे।।
पुण्यभूमि जावद में आप चारित्र धर्म अपनाएँगे।
आपके दृढ़ तप की सदा जय-जय हम सब गाएँगे।।

21 जनवरी 2024। आचार्य श्री हुक्मीचंद स्मृति भवन में प्रात:काल से ही भक्तों का हुजूम उमड़ रहा था, क्योंकि आज रविवार होने के कारण रविवारीय समता शाखा के आयोजन में भाग लेकर हर कोई अपना जीवन धन्य बनाने को आतुर था। परम पूज्य आचार्य श्री रामेश द्वारा प्रदत्त इस विशेष आयाम की धूम देशभर में देखने को मिल रही है। रविवारीय समता शाखा में समता आराधना पश्चात् आचार्यदेव ने महती कृपा कर मंगलपाठ फरमाया।

कृषि उपज मंडी प्रांगण में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने गुरुभक्तों को जिनवाणी से पावन करते हुए अपनी अमृतवाणी में फरमाया कि *''ज्ञान, दर्शन, चारित्र से ही परम मंजिल मोक्ष की प्राप्ति संभव है। सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः। इस मार्ग पर चलना हर किसी के लिए संभव नहीं है। संयम का मार्ग निरभ्रांति से मोक्ष का मार्ग है। वहाँ कोई भ्रांति नहीं, बल्कि आत्म-क्रांति है। आत्मा का अंतराय कर्म क्षीण होता है तब संयम का उल्लास जागृत होता है और वह जीव उस मार्ग का राही बन जाता है। कल तक जो शरीर विषय-वासना में, काम-भोगों में, पाँचों इंद्रियों में रचा-पचा था, आज उसमें बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है। यदि हमारी हिम्मत होती है तो आत्मा को परमात्मा का सहारा मिलता है और हमारे भीतर परमात्म शक्ति जागृत हो जाती है।''*

'जय-जयवंत बनें हम हिम्मत हम धारें अंतर्भाव से' भजन के साथ आपश्री जी ने फरमाया कि *''आज दस मुमुक्षु भाई-बहिन हिम्मत को धारण कर संयम पथ पर बढ़ने के लिए तैयार हैं। संयम मार्ग कायरों का नहीं, शूरवीरों का मार्ग है। ये शरीर बल की नहीं, आत्मबल की बात है। इस मनुष्य जन्म को सार्थक करें।''*

साध्वी श्री यशस्वी श्री जी म.सा. ने **'राम गुरु का शरणा सुखकारी'** भजन प्रस्तुत करते हुए मंदसौर में विराजित महासतियाँ जी को पावन दर्शन प्रदान करने की भावभरी विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'आगम रा भंडार गुरु राम प्यारा'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। मुमुक्षु बहिनों ने **'संयम पाएँगे - संयम पाएँगे, दीक्षा लेकर राम गुरु चरण पाएँगे'** सुंदर भाव गीतिका प्रस्तुत की।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं स्थानीय संघ महामंत्री जी ने इस अवसर को स्वर्णिम अवसर बताया। जावद विधायक ओमप्रकाश जी संकलेचा सहित देश के कोने-कोने से आगत श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की पावन प्रेरणा से सरवानिया महाराज निवासी दिनेश जी खटीक ने पुरखों से चला आ रहा कसाई का धंधा पूर्णत: बंद करने एवं मांसाहार का त्याग करने का संकल्प ग्रहण कर जीवदया, अहिंसा, शाकाहार एवं व्यसनमुक्ति के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की। उपस्थित सभी गुरुभक्तों ने हर्ष-हर्ष, जय-जयकार से इनके इस शुभ संकल्प की अनुमोदना की। नगर परिषद् अध्यक्ष रूपेंद्र जी जैन एवं परम गुरुभक्त पंकज जी शाह का सहकार उल्लेखनीय रहा।

बड़ीसादड़ी संघ ने आगामी चातुर्मास एवं अन्य प्रसंगों का लाभ प्रदान करने एवं मंगलवाड़ संघ की ओर से संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने आगामी होली चातुर्मास, दीक्षा प्रसंग एवं अक्षय तृतीया की भावभरी विनती गुरुचरणों में समर्पित की।

दस मुमुक्षु भाई-बहिनों का भव्य वरघोड़ा व शानदार अभिनंदन एक गरिमामय समारोह में हजारों की जनमेदिनी की उपस्थिति में श्री साधुमार्गी जैन संघ, जावद के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया। नौ मुमुक्षु भाई-बहिन अपने परिजनों के साथ आकर्षक रथों पर सवार होकर और दीक्षार्थी बहिन कमला देवी चंडालिया पैदल चलकर सभी का अभिवादन स्वीकार कर रहे थे। शोभायात्रा के दौरान मार्ग के दोनों ओर अपार जनमेदिनी मुमुक्षुजनों के आदर्श त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रही थी।

शोभायात्रा में शामिल सैकड़ों गुरुभक्त **'महावीर का दिव्य संदेश जीओ और जीने दो'**, **'राम गुरु विराट हैं दीक्षाओं का ठाठ है'** एवं मुमुक्षु भाई-बहिनों की जय-जयकार से संपूर्ण मार्ग को गुंजायमान करते हुए चल रहे थे। यह वरघोड़ा कृषि उपज मंडी से प्रारंभ होकर शहर के अनेक मार्गों से होते हुए पुन: कृषि उपज मंडी पहुँचकर अभिनंदन समारोह में परिणित हो गया।

मुमुक्षु भाई-बहिनों का शानदार अभिनंदन

वीतरागता की ओर बढ़ रहे ये चरण।
धन्य-धन्य कह रहा है हर मन।।

टी.वी., मोबाइल, आधुनिक साधनों एवं भौतिकता की चकाचौंध को ठोकर मारकर कठोर संयम साधना के मार्ग पर बढ़ने वाले

1. वीर मुमुक्षु भाई सुनील जी गोखरू सुपुत्र स्व. श्री मनोहर सिंह जी-स्व. श्रीमती संतोष बाई गोखरू, भीलवाड़ा
2. मुमुक्षु हितेष जी कांकरिया सुपुत्र हेमकरण जी-ऊषा बेन कांकरिया, धामणगाँव रेलवे
3. मुमुक्षु भाई यश जी कोटड़िया सुपत्र दिनेश जी-जयश्री जी कोटड़िया, नंदुरबार
4. मुमुक्षु बहिन कमला देवी चंडालिया धर्मसहायिका स्व. श्री समरथमल जी चंडालिया, कपासन
5. मुमुक्षु बहिन सुश्री ट्विंकल जी कामदार सुपुत्री स्व. श्री गिरिश जी-श्वेता जी कामदार, आदिलाबाद
6. मुमुक्षु बहिन सुश्री अंकिता जी बाफना सुपुत्री अनिल जी-शोभा जी बाफना, शिरपुर
7. मुमुक्षु बहिन सुश्री काजल जी पितलिया सुपुत्री विजयेंद्र जी-संगीता जी पितलिया, हैदराबाद
8. मुमुक्षु बहिन सुश्री आर्ची जी नाहर सुपुत्री राजेश जी-सुषमा जी नाहर, बेगूँ
9. मुमुक्षु बहिन सुश्री प्रनिधि जी पारख सुपुत्री ललित जी-स्नेहा जी पारख, राजनांदगाँव
10. मुमुक्षु बहिन सुश्री रिया जी डागा सुपुत्री लालचंद जी-मधु जी डागा, कोलकाता

का जावद के श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता युवा संघ एवं श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, आरुग्गबोहिलाभं सहित अनेक संघों व संस्थाओं द्वारा भव्य समारोह में शानदार स्वागत एवं बहुमान किया गया। सभी मुमुक्षुओं के आदर्श त्याग की सराहना बरबस ही उत्कंठित हो रही थी।

कार्यक्रम के प्रारंभ में समता महिला मंडल एवं बहू मंडल द्वारा मंगलाचरण व स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया।

सभा का संयोजन करते हुए संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने कहा कि गादी गाँव में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की असीम कृपा से यह विराट दीक्षा महोत्सव आयोजित करने का सौभाग्य हमारे संघ को प्राप्त हुआ है। इस स्वर्णिम अवसर के लिए हम महापुरुषों के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। दीक्षार्थी भाई-बहिन एवं परिजनों व संघ पदाधिकारियों व सभी सदस्यों के प्रति हम आभारी हैं। सभी के सहयोग से गादी गाँव में नव इतिहास का सृजन हुआ है।

सभा में माननीय विधायक ओमप्रकाश जी संकलेचा, माननीय न्यायाधीश डॉ. कुलदीप जी जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सहित देश के कोने-कोने से पधारे हजारों श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहिनों की उपस्थिति थी। द्वय महापुरुषों के अतिशय एवं मुमुक्षुजनों का परिचय महेश नाहटा ने दिया। दीक्षार्थी भाई-बहिनों एवं वीर परिजनों व अतिथियों का स्वागत स्थानीय संघ अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जी एवं स्थानीय संघ मंत्री सहित संघ प्रमुखों ने तिलक, माल्यार्पण, शॉल आदि सहित भावभीना अभिनंदन किया।

अतिथियों ने अपने उद्गार में कहा कि त्यागी महापुरुषों के पुण्य प्रताप से भारतीय संस्कृति व जैन संस्कृति जीवंत है। जन-जन को मानवता, नैतिकता, श्रेष्ठ जीवन जीने की कला आप जैसे महापुरुषों से प्राप्त हो रही है। इस विराट आयोजन के लिए जावद संघ व सहयोगी संस्थाएँ बधाई के पात्र हैं।

मुमुक्षु भाई-बहिनों ने अपने उद्गार में कहा कि सच्चा सुख संसार में नहीं, अपितु अध्यात्म और संयम में है। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की पावन प्रेरणा व आशीर्वाद से आज हम वीतराग पद पर अग्रसर हो रहे हैं। आज हमारी खुशियों का पार नहीं है। अपनी खुशी को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह स्वागत भगवान महावीर व गुरु भगवंतों एवं त्याग, संयम, वैराग्य का है। **'आरुग्गबोहिलाभं'** में एक बार अपनी संतानों को अवश्य भेजने का लक्ष्य रखें।

कई संघों एवं संस्थाओं द्वारा मुमुक्षु भाई-बहिनों के अभिनंदन से संपूर्ण वातावरण संयममय बन गया। मुमुक्षु भाई-बहिनों एवं परिजनों के करकमलों से नवप्रकाशित साहित्य **'बिन श्रद्धा सब सून'** का विमोचन हुआ।

शाम को रतलाम संघ द्वारा नाटिका का शानदार प्रस्तुतिकरण हुआ। जावद पाठशाला के बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुति दी। प्रभु एवं गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किए गए।

विराट दीक्षा महोत्सव में हजारों लोगों ने की अनुमोदना

साधुमार्गी संघ के इतिहास में पहली बार सभी नवदीक्षितों का नवीन नामकरण 'राम' से प्रारंभ

साधुता सिद्धि का द्वार है - आचार्य भगवन्

अपने आपको वश में करना संयम है - उपाध्याय प्रवर

वीर की राह पर बढ़ रहे वीर बन।

वीरों को प्यारी ये संयम डगर।।

सिद्धों की आत्मा से मेरा तार मिल गया,
वो वीतराग भाव, वो वीतराग भाव।
उनके शुद्ध स्वभाव से मेरा तार मिल गया।।

22 जनवरी 2024, कृषि उपज मंडी, जावद। परमागम रहस्यज्ञाता, मोक्ष मार्ग के पथिकों के भाग्यविधाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में एक साथ 10 जैन भागवती दीक्षाओं का अनुपम ठाठ देखकर हर कोई त्याग के रंग में रंग गया। हजारों की जनमेदिनी में श्रावक-श्राविकाओं में श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा। भौतिक साधनों तथा असार संसार को छोड़कर आत्मज्योति जलाने के लिए संयम पथ के मंगलमय मार्ग की ओर कई भव्यात्माएँ जिनशासन में अग्रसर हो रही हैं।

इसी कड़ी में युगनिर्माता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर एक साथ 10 मुमुक्षु भाई-बहिनें उनके श्रीचरणों में समर्पित होने जा रही हैं। मुमुक्षु भाई सुनील जी गोखरू, भीलवाड़ा, मुमुक्षु भाई हितेष जी कांकरिया, धामणगाँव रेलवे, मुमुक्षु भाई यश जी कोटड़िया, नंदुरबार, मुमुक्षु बहिन कमला बाई चंडालिया, कपासन, मुमुक्षु बहिन ट्विंकल जी कामदार, आदिलाबाद, मुमुक्षु बहिन अंकिता जी बाफना, शिरपुर, मुमुक्षु बहिन काजल जी पितलिया, हैदराबाद, मुमुक्षु बहिन आर्ची जी नाहर, बेगूँ, मुमुक्षु बहिन प्रनिधि जी पारख, राजनांदगाँव, मुमुक्षु बहिन रिया जी डागा, कोलकाता ने संयम की राह पर आगे बढ़कर सभी के लिए आदर्श उपस्थित किया। समवसरण का अद्भुत दृश्य परिलक्षित हो रहा है।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए साधना के शिखर पुरुष, दिव्यमूर्ति आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *''परमात्मा से मिलने का मार्ग संयम है। बिना साधुता के सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। हमारी चाह यदि सिद्धि की हो तो हमें साधुता को स्वीकार करना होगा। संयम का सुख यदि हमने प्राप्त कर लिया होता तो संसार में कभी भी मन नहीं लगता। संसार के भोग-उपभोग आदि अहंकार एवं विष्टा के समान हैं। संयम का सुख राजभोग के समान है। संयम का सुख अतुल्य है, बेजोड़ है। साधु जीवन में सावद्य योगों का मन, वचन व काया से प्रत्याख्यान किया जाता है। संयम राग-द्वेष के बंधन को काटने के लिए है। ऐसे संयम पथ पर आज इस जावद शहर में दस-दस भव्यात्माएँ अग्रसर होने को तत्पर हैं।*

दीक्षा का यह मेला है, बड़ा अलबेला है।
आज है समझना कि, जीव तू अकेला है।।

कोई किसी के साथ जाने वाला नहीं है। साधु जीवन किसी बहकावे से नहीं लिया जाता, किसी के भड़काने से नहीं लिया जाता है। भीतर से जब भावना जागृत होती है तभी उस पर कदम आगे बढ़ सकता है।'' **'महावीर के हम सिपाही बनेंगे, जो रखा कदम तो फिर पीछे ना हटेंगे'** स्वरलहरी के साथ मुमुक्षु भाई-बहिनों के दृढ़ संयमी जीवन की सराहना की।

दोपहर 12:10 बजे उपाध्याय प्रवर ने दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए सर्वप्रथम दीक्षार्थी भाई-बहिनों से दीक्षा की तैयारी के विषय में पूछा तो सभी ने एक स्वर में कहा कि शीघ्र दीक्षा प्रदान करने की कृपा करें। उपस्थित जनमेदिनी से दीक्षा की स्वीकृति हेतु पूछने पर मुमुक्षु परिजनों सहित जावद संघ एवं श्री अ.भा.सा. जैन संघ के पदाकारियों व अपार जनमेदिनी ने अपने दोनों हाथ खड़े कर अनुमोदना की।

दोपहर 12:20 बजे आचार्य भगवन् ने करेमि भंते के पाठ से संपूर्ण पापकारी क्रियाओं का त्याग कराकर सभी मुमुक्षु भाई-बहिनों को नवकार महामंत्र के पंचम पद पर आरूढ़ किया। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने नवीन नामकरण की घोषणा इस प्रकार की-

• मुमुक्षु भाई सुनील जी गोखरू, भीलवाड़ा	नवदीक्षित संत श्री रामसुवर्ण मुनि जी म.सा.
• मुमुक्षु भाई हितेष जी कांकरिया, धामणगाँव रेलवे	नवदीक्षित संत श्री रामहृदय मुनि जी म.सा.
• मुमुक्षु भाई यश जी कोटड़िया, नंदुरबार	नवदीक्षित संत श्री रामयश मुनि जी म.सा.
• मुमुक्षु बहिन कमला बाई चंडालिया, कपासन	नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकला श्री जी म.सा.
• मुमुक्षु बहिन ट्विंकल जी कामदार, रतलाम	नवदीक्षिता साध्वी श्री रामध्वनि श्री जी म.सा.
• मुमुक्षु बहिन अंकिता जी बाफना, शिरपुर	नवदीक्षिता साध्वी श्री रामान्विता श्री जी म.सा.
• मुमुक्षु बहिन काजल जी पितलिया, हैदराबाद	नवदीक्षिता साध्वी श्री रामांजना श्री जी म.सा.
• मुमुक्षु बहिन आर्ची जी नाहर, बेगूँ	नवदीक्षिता साध्वी श्री रामार्चना श्री जी म.सा.
• मुमुक्षु बहिन प्रनिधि जी पारख, राजनांदगाँव	नवदीक्षिता साध्वी श्री रामनिधि श्री जी म.सा.
• मुमुक्षु बहिन रिया जी डागा, कोलकाता	नवदीक्षिता साध्वी श्री रामरया श्री जी म.सा.

नवीन नामकरण की घोषणा के साथ ही संपूर्ण पांडाल जय-जयकारों एवं जयवंता-जयवंता गीत से गूँज उठा। नवदीक्षित संतों के केशलुंचन का कार्य आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के करकमलों से एवं नवदीक्षित साध्वीवर्याओं के केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा. के करकमलों से संपन्न हुआ।

मुमुक्षु सौरभ जी संचेती, दुर्ग की जैन भागवती दीक्षा हेतु 09 जून के लिए घोषित की गई। 05 फरवरी की दीक्षा निम्बाहेड़ा के लिए तथा बड़ी दीक्षा नयागाँव के लिए स्वीकृति प्रदान की गई। मंगलवाड़ चौराहा को अहोभाग्य से होली चातुर्मास का सुप्रसंग प्राप्त हुआ।

उपाध्याय प्रवर ने ओजस्वी वाणी में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए फरमाया कि **"गुरु संयम का उपदेश देते हैं। संयम का अर्थ है अपने आपको वश में करना। दुनिया की हजारों प्रतिष्ठाओं से बड़ा भीतर में संयम का प्रतिस्थापन है। वह संयम प्रतिष्ठा ही हमारे भीतर सुख और शांति भरने वाली है। हमारी साधना आत्मा का लक्ष्य है। हर पल हर क्षण आत्मा के साथ रहें।"**

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अयोध्या का प्रसंग आज पूरे विश्व में छाया हुआ है और यहाँ पर साक्षात् राम विराजमान हैं। झोंपड़ी में राम आएँ या नहीं किंतु खोपड़ी में राम आने चाहिए। ये राम हर आत्मा को राम बनाने वाले हैं। बच्चा-बच्चा जहान का, भक्त है गुरु राम का। तुम भी ईश्वर बन सकते हो यह विश्वास गुरु राम दिलाने वाले हैं। एक-एक व्यक्ति को धर्म से जोड़ने वाले गुरु राम हैं।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् कहने में नहीं करने में विश्वास रखते हैं। ऐसे महान गुरु को पाना परम सौभाग्य है। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सदैव गुरु की प्रसन्नता रहे ऐसा कार्य हमें करना चाहिए। गुरु के आदेश-निर्देश का पालन ही सच्ची गुरुभक्ति है। साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हम सभी सौभाग्यशाली हैं जो हमें ऐसे पावन चरणों का सान्निध्य मिला है।

गुरुदेव आपकी शरण में आए, ये संयम लेने वाले हैं।
माँगी तो संजीवनी बूटी है, ये पर्वत उठाने वाले हैं।।
इन हनुमंतों को कम मत समझो।
राम के नाम पर ये पत्थर तिराने वाले हैं।।

शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'ओ मोक्ष के राही बन, तुम्हें कहीं और नजर न लगे'** संयम गीत प्रस्तुत किया।

श्री नीरज मुनि जी म.सा., श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री सौरभ मुनि जी म.सा. आदि संतरत्नों ने सुंदर भाव गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा, साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने **'आज मेरे मन खुशी का पार नहीं, उमंग बेशुमार है'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

मुमुक्षु सौरभ जी संचेती सुपुत्र ढेलाबाई-महावीर जी संचेती, दुर्ग की दीक्षा हेतु परिजनों ने अनुज्ञा-पत्र तथा मुमुक्षु भाई ने प्रतिज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित किया। जयवंता-जयवंता से पूरा माहौल गूँज उठा।

स्थानीय संघ मंत्री व महेश नाहटा ने इस दीक्षा महोत्सव को अलौकिक, अद्भुत, अविस्मरणीय बताया।

विधायक ओमप्रकाश जी संकलेचा, समंदर जी पटेल, स्थानीय एवं केंद्रीय संघ के पदाधिकारियों सहित देश-विदेश के श्रद्धालु जैन-जैनेतर भाई-बहिनों ने उपस्थित रहकर दीक्षा अनुमोदना कर कर्मनिर्जरा का अनुपम लाभ लिया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने सभी के सहकार के लिए अहोभाव व्यक्त किया। यह विराट दीक्षा महोत्सव जावद के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया।

हठाग्रही व्यक्ति उपदेश का पात्र नहीं

23 जनवरी 2024। प्रात: मंगल प्रार्थना में पंच परमेष्ठी की आराधना के पश्चात् धर्मसभा का आयोजन किया गया, जिसमें आगममर्मज्ञ आचार्य भगवन् ने आगम का नवनीत प्रदान करते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *''हठाग्रही (किसी बात को पकड़कर रखने वाला) हमेशा किसी बात को पकड़कर रखता है। वह यही सोचता है कि मैं जो समझ रहा हूँ वही सही है। ऐसे व्यक्ति उपदेश के पात्र नहीं होते, क्योंकि वे अपनी पकड़ को छोड़ने की इच्छा नहीं रखते। हठाग्रही का विचार होता है कि मैंने बहुत जान लिया है, इससे आगे और कुछ जानना बाकी नहीं है। हम कितना जानते हैं? समुद्र अर्थात् केवलज्ञान की एक बूँद जितना भी हम नहीं जान पाए। जिज्ञासु के जानने के द्वार हमेशा खुले रहते हैं। ज्ञान के लिए जिज्ञासा नहीं है तो कितना भी ज्ञान दे दिया जाए, वो ज्ञान भीतर उतरेगा नहीं। जैसे भूख होने पर ही भोजन की कीमत होती है, वैसे ही जिज्ञासा हो तो ज्ञान की कीमत है। विरमण = वि + रमण = उसमें रमना नहीं। अब मेरी रुचि उसमें नहीं है। क्या हिंसा हो रही है, देखो। यदि देखना शुरू किया तो हिंसा रुकेगी। मैं इन जीवों की हिंसा नहीं करना चाहता, यह भाव कब पैदा होगा? जब विरमण-विरक्ति भाव आएगा।''*

श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम यहाँ आचार्यश्री के दर्शन करने आते हैं या दर्शन देने वाले बनकर आते हैं, आत्मचिंतन करें। इस अवसर पर तपस्याएँ एवं अन्य कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा-समाधान आदि धार्मिक आयोजनों में अनेक जनों ने ज्ञानार्जन किया।

तपस्या के साथ स्वयं को शांत रखना बहुत बड़ी कसौटी

24 जनवरी 2024। प्रभु एवं गुरुभक्ति रूप प्रार्थना से भोर की पावन बेला में धर्म जागृति हुई। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अमृतवाणी रूप रस का पान कराते हुए अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि *''जिससे आत्मा शुद्ध होती है उसे तप कहते हैं। तप आत्म-गौरव, आत्म-प्रशंसा के लिए नहीं होता है। कषायों को जीतना भी तप है। साधु खाता है तो भी तपस्या है, साधु नहीं खाता है तो भी तपस्या*

है, क्योंकि साधु समभाव की प्रवृत्ति करता है। तपस्या के साथ स्वयं को शांत रखना बहुत बड़ी कसौटी है। भगवान महावीर के जीव ने दास के कानों में शीशा डाला, आज हमारे कानों में कोई शीशा डाले तो? कठोर, अप्रिय, कड़वी बात सुनाए तो? हमें यह सोचकर क्रोध नहीं करना है कि जिसके पास जो चीज है वही देगा। जिसने समभाव को साध लिया उसका मोक्ष निश्चित है।''

श्री हेमंत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सोए मन को जगाना है और मन को धन की अंधी दौड़ से हटाकर संयम की ओर लगाना है। साध्वी श्री तरुलता श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय भगवन्, भगवान महावीर और गौतम स्वामी के समान प्रतीत हो रहे हैं। आप द्वय महापुरुष संघ को निरंतर ऊँचाइयों पर ले जा रहे हैं। साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री अनाकार श्री जी म.सा. के मासखमण तप पर कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। समता एकेडमी में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

11 वर्षीय हेमंत जी चौधरी एवं 8 वर्षीय संयम चौधरी ने लोच करवाकर कायाक्लेश तप का लाभ लिया। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा आदि हुए।

स्वाध्याय के साथ चिंतन-मनन हो

25 जनवरी 2024। दिन की भक्तिमय शुरुआत प्रार्थना में पंच परमेष्ठी के गुणगान से हुई। प्रवचन सभा में विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने उपस्थित अपार जनमेदिनी को धर्मवाणी का श्रवण कराते हुए मधुर वचनों में फरमाया कि *''स्वाध्याय में रत रहें। स्वाध्याय अर्थात् जो आत्मा को जागृत करने में समर्थ है उन ग्रन्थों का अध्ययन। स्वाध्याय के बाद चिंतन-मनन होना चाहिए कि मैंने जो पढ़ा है उसका तात्पर्य क्या है और मेरे जीवन से उसका क्या संबंध है। पढ़ो ऐसा कि मानो दर्पण हो सामने। श्रमणोपासक अर्थात् श्रमणों का उपासक। जो साधक की रक्षा करता है उसे 'श्रमणोपासक' कहते हैं। हम किस भाव/विचारों के साथ म.सा. के पास आते हैं? आपके ये वे विचार/भाव उनकी साधना में विघ्न तो नहीं डाल रहे? हम अपने जीवन में धर्मभाव को गहरा करें। परेशानियाँ प्रेरणा देने वाली होती है। जो नया उत्साह, जोश जागृत करती हैं। धर्म जीवन में कब उतरेगा? जब स्वाध्याय का चिंतन-मनन करेंगे। मेरे भीतर क्या कमी है, उसे कैसे दूर करूँ, यह चिंतन आवश्यक है। हम एकांत का सेवन करें। 15 मिनट अकेले रहना है। मन को सब से दूर रखकर केवल आत्मा में रमण करते हुए परमात्मा से तार जोड़ने हैं। वे 15 मिनट हमारे जीवन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होंगे।''*

साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। जावद संघ ने आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास हेतु विनती प्रस्तुत की। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। चारित्रात्माओं का पावन सान्निध्य प्राप्त कर गादी गाँव जावद तथा आस-पास के क्षेत्र के धर्मप्रेमी भाई-बहिन निहाल हो गए।

आकांक्षा, अपेक्षा का कोई छोर नहीं

26 जनवरी 2024, समता भवन, खोर। आचार्य भगवन् के सान्निध्य में जावद को ऐतिहासिक दस दीक्षा महोत्सव का साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इससे जावद व आस-पास के क्षेत्रों सहित देश के अनेक स्थानों से पधारे गुरुभक्तों में अपूर्व उत्साह छा गया। आज प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् आचार्य भगवन् आदि ठाणा का आचार्य श्री हुक्मीचंद स्मृति भवन, जावद से खोर की दिशा में विहार हुआ। गादी गाँव

जावद के निवासियों ने नम आँखों से पुनरागमन हेतु भावभीनी विदाई दी। मार्गवर्ती क्षेत्रों में विहार यात्रा में गुरुदेव एवं चारित्रात्माओं की एक झलक देखने को लोग उमड़ रहे थे। हर कोई इस कड़कड़ाती ठंड में नँगे पाँव विहार कर रहे संतों को देखकर आश्चर्यपूर्वक नतमस्तक हो रहा था। आराध्यदेव का समता भवन, खोर में जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ।

मंगल प्रवेश पश्चात् यहाँ आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने संयम सार रूप अमृतवाणी से धर्मप्रेमी जनता को पावन करते हुए फरमाया कि *''भौतिक साधनों से मन कभी तृप्त नहीं होने वाला है। तृष्णा, आकांक्षा का कोई ओर-छोर नहीं है। सुख संतुष्टि में है। धर्म की आराधना करने से सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है। 'मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में' अर्थात् सच्चा सुख केवल और केवल भगवान के चरणों में ही मिल सकता है। प्रतिष्ठा, मान-सम्मान मिले इस आस में धर्म-ध्यान नहीं करना है।''*

श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सुख-दु:ख दोनों आते-जाते रहेंगे। हम हर हाल में मस्त रहें। खोर संघ मंत्री ने आचार्य भगवन् के आगमन को महान पुण्योदय का प्रभाव बताया। गाँव में रहते हुए दिन में एक बार समता भवन में जाने, 11 नवकार महामंत्र गिनने, 15 मिनट धर्माराधना करने एवं सामायिक करने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया।

श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. ने धर्म संस्कार के अंतर्गत बड़ों को प्रणाम और सभी को जय जिनेंद्र बोलने, मुँहपत्ती लगाकर 5 नवकार जाप करने, गुरुवंदन, प्रार्थना करने, चिंतनमणियों का स्वाध्याय, धर्मकथा, जैन सिद्धांत बत्तीसी का एक बोल याद करने, रामेश चालीसा पाठ करने आदि में से कोई भी एक नियम का प्रत्याख्यान लेने तथा मंगलपाठ श्रवण करने की प्रेरणा दी।

गाँव में रहते हुए दिन में एक बार समता भवन में जाने, 11 नवकार महामंत्र गिनने, 15 मिनट धर्माराधना करने एवं सामायिक करने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया।

समता विद्यालय में श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने अपने प्रेरक उद्बोधन में फरमाया कि हमारी संस्कृति हमें अच्छे संस्कार सिखाती है। जैसे-जैसे हमारी पढ़ाई बढ़ रही है वैसे-वैसे हमारा अहंकार बढ़ रहा है। राम के जीवन में विनय, धैर्य, जिज्ञासा, तकनीक, कष्टों को सहन करने की क्षमता, सकारात्मक सोच व कार्य जैसे अनेक प्रेरणीय प्रसंग है। झोंपड़ी के भाग नहीं खोपड़ी के भाग खुलने चाहिए। सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं करना चाहिए। महेश नाहटा ने व्यसनमुक्ति की प्रेरणा दी। छात्र-छात्राओं ने व्यसनमुक्त रहने, सत्साहित्य पढ़ने, टी.वी. एवं मोबाइल कम से कम उपयोग करने, विपरीत परिस्थितियों में भी आत्महत्या नहीं करने आदि कई संकल्प ग्रहण किए।

अपनी बुद्धि से सम्यक् निर्णय लें

27 जनवरी 2024। शुभ प्रभात बेला में मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। तत्पश्चात् समता भवन में आयोजित धर्मसभा में उपस्थित धर्मप्रेमी जनों को संबोधित करते हुए व्यसनमुक्ति प्रणेता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि *''बुद्धि को यदि सम्यक् निर्णायक के रूप में रखना है तो उसे तीर्थंकर देवों की वाणी से लाभान्वित करना होगा। जो बुद्धि तीर्थंकर भगवान की भक्ति से, वाणी से, सेवा से भावित होगी वह सम्यक् निर्णय कर पाएगी। सम्यक् निर्णय बहुत जरूरी है। निर्णय कुछ भी हो सकता है किंतु सम्यक् निर्णय अपना अलग ही*

महत्त्व रखता है। भगवान महावीर की वाणी सुनकर मेघकुमार भावित हुआ। बुद्धि भावित हुई तो उसने सम्यक् निर्णय लिया और अपने शरीर का ममत्व छोड़ दिया। उसने तुरंत विचार कर लिया कि अब मेरा सारा जीवन संतवृंद की सेवा के लिए तत्पर रहेगा। जो बुद्धि कुछ समय पहले अलग निर्णायक बन रही थी कि मैं इस परिवेश में नहीं रहूँगा। इस साधु समाज में मैं किसी की ठोकर नहीं सह सकता। अब उसकी बुद्धि इस निर्णय हेतु तत्पर हो गई कि मुझे अब साधु जीवन में ही रहना है। शरीर के ममत्व भाव को छेदन करना है। मन को यदि हमने ठीक रख लिया तो घर हो या स्थानक, जंगल हो या शहर, चाहे स्थानक हो, हमें कहीं पर पीड़ा नहीं होगी और यदि मन को अहंकार के हवाले कर दिया तो कहीं पर शांति नहीं मिलने वाली है। मन को पवित्र, पावन बनाने के लिए तीर्थंकर देवों की शरण, भक्ति, साधना ही एक एकमात्र उपाय है। भगवान ने साधुओं के लिए तो बहुत ही स्पष्ट कह दिया है कि उसको सुविधाभोगी नहीं होना चाहिए। शरीर को सुविधा देते रहोगे तो आत्मजागरण के भाव नहीं जगेंगे।''

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुषों के सान्निध्य को पाकर भीतर के सामर्थ्य को जगाएँ। नेगेटिव सोच की जगह पॉजिटिव सोच रखें।

स्थानीय संघ अध्यक्ष ने आचार्य भगवन् के चरणों में अधिकाधिक विराजने की विनती अर्पित की। प्रत्येक सप्ताह एक उपवास करने, रात्रिभोजन त्याग सहित अनेकानेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। मानसरोवर-जयपुर एवं गेवराई संघ ने चारित्रात्माओं के चातुर्मास हेतु विनती प्रस्तुत की।

धर्म के मर्म को जानें

28 जनवरी 2024। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना एवं दैनिक धर्म-ध्यान के पश्चात् दृढ़ संयम साधना के शिखर पुरुष आचार्य प्रवर का अपनी शिष्य मंडली सहित खोर से जय-जयकारों के साथ विहार हुआ। विहार क्षेत्र में गुरुभक्तों ने दर्शन लाभ लेकर अपना जीवन धन्य बनाया। आपश्री जी का विक्रम सीमेंट खोर के स्टाफ क्लब में मंगलमय पदार्पण हुआ। यहाँ पहुँचकर विहार यात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

धर्मसभा में जन-जन के भावों का मान रखते हुए सरलहृदय दयानिधि आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में संबोधित करते हुए '**धम्म सद्धा चालीसा**' की पंक्तियों के उच्चारण के साथ फरमाया कि-

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित्य करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

''धर्म की चर्चा करने वाले बहुत हैं, किंतु धर्म के मर्म को जानने वाले बहुत कम लोग हैं। धर्म की बात हम एक किनारे रखकर सिर्फ इतना ही जानने की कोशिश करें कि हम जी रहे हैं, किंतु हम अपने जीवन से कितने परिचित हैं। एक जीना आनंद लेते हुए होता है और एक जीना हाय-हाय करते हुए, दु:ख-कष्टों में विलाप करते हुए जीना होता है। हम कैसा जीवन जी रहे हैं, यह आप स्वयं सोचें। धर्म हमें जीवन जीने की कला देता है। सुखमय जीवन जीने की राह धर्म ही बताता है। निश्चय धर्म मन की शांति है, समाधि है। व्यवहार धर्म धार्मिक क्रियाओं को मान लेते हैं। धर्म का स्पर्श होगा तो हमारे जीवन में रूपांतरण आएगा। जिनेश्वर देवों ने जो कहा है वो ही सत्य है, ऐसा दृढ़ विश्वास होना चाहिए। समता में धर्म है और धर्म ही मेरा प्राण है। तन जाए तो जाए, किंतु सत्य धर्म नहीं जाना चाहिए। धर्म के प्रति हमारी दृढ़ आस्था होनी चाहिए।''

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र में निरंतर प्रगति करने की प्रेरणा दी। साध्वी श्री सरिश्मा श्री

जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय गुरुभक्तों ने आचार्य भगवन् के आगमन पर हर्ष व्यक्त किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। विभिन्न क्षेत्रों के दर्शनार्थियों सहित विक्रम सीमेंट यूनिट के हेड बृजेश जी मोहंती ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

29 जनवरी 2024, नयागाँव। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में धर्मप्रेमी जनों की अच्छी उपस्थिति रही। आचार्य भगवन् ईर्यासमिति का क्रमश: पालन करते हुए अपनी शिष्य संपदा सहित प्रत्येक भक्त की भावना को साकार कर रहे हैं। विहार के इसी क्रम में आपश्री जी का सान्निध्यवर्ती संतों सहित विक्रम नगर से विहार कर नयागाँव के सामुदायिक भवन में जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ मालवा, मेवाड़ सहित अनेक क्षेत्रों से आगत श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। ज्ञानचर्चा आदि धार्मिक कार्यक्रमों के पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा बरसाते हुए मंगलपाठ फरमाया।

जहाँ समता है वहाँ धर्म है

30 जनवरी 2024। मंगलमय प्रार्थना में प्रात:कालीन धर्मगंगा का प्रवाह सभी को आत्मतृप्त कर गया। सामुदायिक भवन, नयागाँव में आयोजित धर्मसभा में श्री राजन मुनि जी म.सा. ने **'आया कहाँ से कहाँ है जाना, ढूँढ़ ले ठिकाना चेतन ढूँढ़ ले ठिकाना'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि देव, गुरु, धर्म के प्रति हमारी श्रद्धा, आस्था गहरी होगी तो जो चाहें वह प्राप्त हो सकेगा। जहाँ समता है वहाँ धर्म है। जहाँ विषमता है वहाँ अधर्म है। हमें जिनशासन मिला है, ऐसे महान आचार्य यहाँ पधारे हुए हैं तो अब नयागाँव में नया शुभ कार्य करना है। आचार्य भगवन् निरंतर अमृतवर्षा कर रहे हैं। हमारा क्रोध शांत हो जाए, अहंकार, मान-माया, छल-कपट, लोभ-लालच दूर हो जाएँ तो आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य का लाभ उठाना सार्थक होगा।

श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार में रहते हुए भी संसार से ऊपर उठें। आसक्ति, लगाव से दूर हटकर दान, शील, तप की भावना को जीवन में प्रतिस्थापित करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद सभा में सुशोभित थे। स्थानीय गुरुभक्तों ने आचार्य प्रवर के आगमन को परम सौभाग्य का विषय निरूपित किया। प्रतिदिन नवकार महामंत्र का स्मरण करने, माह में चार दिन रात्रिभोजन का त्याग करने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा के पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ फरमाया।

नमस्कार से अहंकार का नाश होता है

31 जनवरी 2024। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में प्रभु महावीर का पावन स्मरण किया गया। धर्मसभा में अविरल प्रवचन धारा से आचार्य भगवन् ने उपस्थित धर्मप्रेमी जनों को धर्म का खजाना प्रदान किया। आपश्री जी ने अपनी अमृतमयी वाणी में फरमाया कि *''नमस्कार अनिवार्य तत्त्व है। इससे अहंकार खत्म होकर संबल व सरलता मिलते हैं। जैसी हमारी भक्ति होगी वैसा ही हमें फल मिलने वाला है। हमारी दृष्टि गुणपरक होनी चाहिए। छोटा-सा गुण बड़ा वृक्ष बन सकता है। जो संप कराए वह संपत्ति है, जो विग्रह कराए वह दुर्मति है। जिससे तृष्णा खत्म हो वह सुख है। नमस्कार महामंत्र में व्यक्ति की नहीं गुणों की पूजा की गई है।''*

श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा ही कर्ता और भोक्ता है। अच्छे कर्म का अच्छा फल और बुरे

कर्म का बुरा फल मिलना निश्चित है। हम जहाँ हैं वहीं न रहें, उससे कुछ आगे बढ़ें।

श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सही समझ से विवेक बढ़ता है। जिज्ञासा व जानने की ललक सदैव हमारे भीतर होनी चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री दिव्यप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री यशस्वी श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'पल पल गुरुदर्शन की आस लगाए'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

न्यायाधीश डॉ. कुलदीप जी जैन, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी सहित अनेक स्थानों से आए श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का अपूर्व लाभ लिया।

समता भवन, खोर में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **"प्रात: उठते ही सोचना 'मैं शांत हूँ। मुझे क्रोध नहीं आता है। मैं चिड़चिड़ा नहीं हूँ।' ए.आई. का जमाना है। जैसा सिखाओगे मन वैसा ही करेगा। आप अपने आप को जिस प्रकार देखते हैं वैसा ही आपका दिमाग कार्य करने लग जाता है। आप अपने 100 वर्ष पूरे होने पर अपने स्मारक के नीचे जो लिखवाना चाहते हो उस पर ध्यान दीजिए। जागते-सोते, खाते समय आप वैसा ही सोचें जैसा आप खुद को बनाना चाहते हो।"**

श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने श्रुत धर्म और चारित्र धर्म की व्याख्या फरमाई। इस अवसर पर वर्षभर में द्रव्य मर्यादा सहित विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान भाई-बहिनों ने ग्रहण किए।

मालवा की पावन धरा द्वय महापुरुषों सहित चारित्रात्माओं की चरणरज से निरंतर धन्य हो रही है। एक ही दिन में उपाध्याय प्रवर कनेरा से अठाना, हरमतिया होते हुए खोर में पधारे। खोर में दोपहर दो बजे से सवा तीन बजे तक प्रवचन व मांगलिक के बाद पुन: खोर से विहार कर सामुदायिक भवन, नयागाँव में आचार्य भगवन् की सेवा में पधारे। ऐसे महान उपाध्याय प्रवर की गुरु समर्पणा अनुमोदनीय है। आगामी चातुर्मास की पुरजोर विनतियों का दौर जारी है। अनेक स्थानों के संघों की ओर से गुरुचरणों में विनतियाँ समर्पित की जा रही है।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग	
30 उपवास	साध्वी श्री अनाकार श्री जी म.सा.
श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	फतेह सिंह जी सिंघवी-निम्बाहेड़ा, लक्ष्मीनारायण जी सोलंकी, बलवंत जी सोनी, प्रेम सिंह जी ठाकुर, अनिल जी टोडरवाल-चालीसगाँव, प्रवीण जी बोहरा-जामनेर, विजय जी-अलका जी कामदार-आदिलाबाद, नरेश जी शाह-आदिलाबाद, गिरधारीलाल जी वीरवाल जैन, भोपाल सिंह जी चंद्रावत, सुनील जी पंवार-बदनावर, अनिल जी-रीता जी गोखरू-भीलवाड़ा, शांतिलाल जी-सुंदरबाई नाहर, बेगूँ
उपवास	**100 उपवास पौषध सहित-** सुरेश जी चौरड़िया-बालाघाट, **21-** बगदीराम जी परमार
गाथा का स्वाध्याय	**एक लाख-** सुमन जी पारख-राजनांदगाँव, विमला देवी मालू-सूरत, अनिता जी कुचेरिया-धामणगाँव रेलवे, उर्मिला जी बोरूंदिया-धामणगाँव रेलवे

-महेश नाहटा

।।जय गुरु नाना।।

।।जय महावीर।।

।।जय गुरु राम।।

भव्यातिभव्य फाल्गुनी पर्व आराधना

महत्तम महोत्सव

शनिवार-होली-धुलंडी
23-24-25 मार्च 2024
स्थल : स्थानीय स्थानक भवन

चातुर्मासिक पर्व आराधना

रविवार, 24 मार्च 2024

● सुबह की शुरुआत समता आराधना से ● एक साथ 5 सामायिक का लक्ष्य ● भव्य आध्यात्मिक प्रवचन ● दोपहर में सभी के लिए विशेष कार्यक्रम ● सायं चातुर्मासिक प्रतिक्रमण ● रात्रि चौबीसी, आगम स्वाध्याय व धार्मिक समागम

लक्ष्य
3100
संवर/पौषध/दया
मेरा संघ
मेरी आराधना

अपने श्रीसंघ की आराधना रिपोर्ट को श्रमणोपासक में प्रकाशित करने के लिए भेजें।

गुरु भक्ति संध्या- शनिवार, 23 मार्च, चातुर्मासिक पर्व की पूर्व संध्या

फाल्गुनी पूर्णिमा चातुर्मासिक संधिकाल है। श्री आचारांग सूत्र में वर्णित है 'संधिं लोगस्स जाणित्ता' यानी लोक की संधि को जानकर सुअवसर का लाभ उठाने वाला बुद्धिमान एवं पंडित है। श्री उपासकदशांग सूत्र में श्रावक के लिए चातुर्मासिक संधिकाल में पौषध का वर्णन है। संधिकाल में पापों का प्रतिक्रमण व कृत दोषों की आलोचना की जाती है। हम आगमों के रहस्य को गहराई से समझें व अवसर का लाभ उठाएँ। इस आध्यात्मिक दिवस पर व्यापार, गृहकार्य, यात्रा आदि से पूर्ण निवृत्त होकर स्थानक में संवर, सामायिक, दया, पौषध में प्रवृत्त होने का लक्ष्य रखें।

आयोजक
स्थानीय जैन श्रावक संघ

राम चमकते भानु समान

संयोजक
समता प्रचार संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

संपर्क सूत्र - 7231866008, 9229191008 udaipur@sadhumargi.com

।। जय गुरु नाना ।।

राम चमकते भानु समाना

।। जय महावीर ।।

।। जय गुरु राम ।।

कार्यसमिति बैठक

25 मार्च 2024
मंगलवाड़ चौराहा (राज.)

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह-संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, आंचलिक प्रभारी, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

दोपहर 12.15 बजे से

लीडरशिप ओरियंटेशन प्रोग्राम

शाम 7:45 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

दोपहर 12.15 बजे से

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, सह संयोजिका, कार्यसमिति सदस्य एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

लीडरशीप ओरियंटेशन प्रोग्राम

दोपहर 2:30 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय प्रभारी, राष्ट्रीय एवं आँचलिक प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय संघ/शाखा अध्यक्ष, लीड मेम्बर एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

दोपहर 12.15 बजे से

25 मार्च 2024
सायं 4:30 बजे से

महत्तम 'शिखर'

WE CONNECT- WELL CONNECT

AN INTERACTIVE SESSION

Joint Session

– * निवेदक * –

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

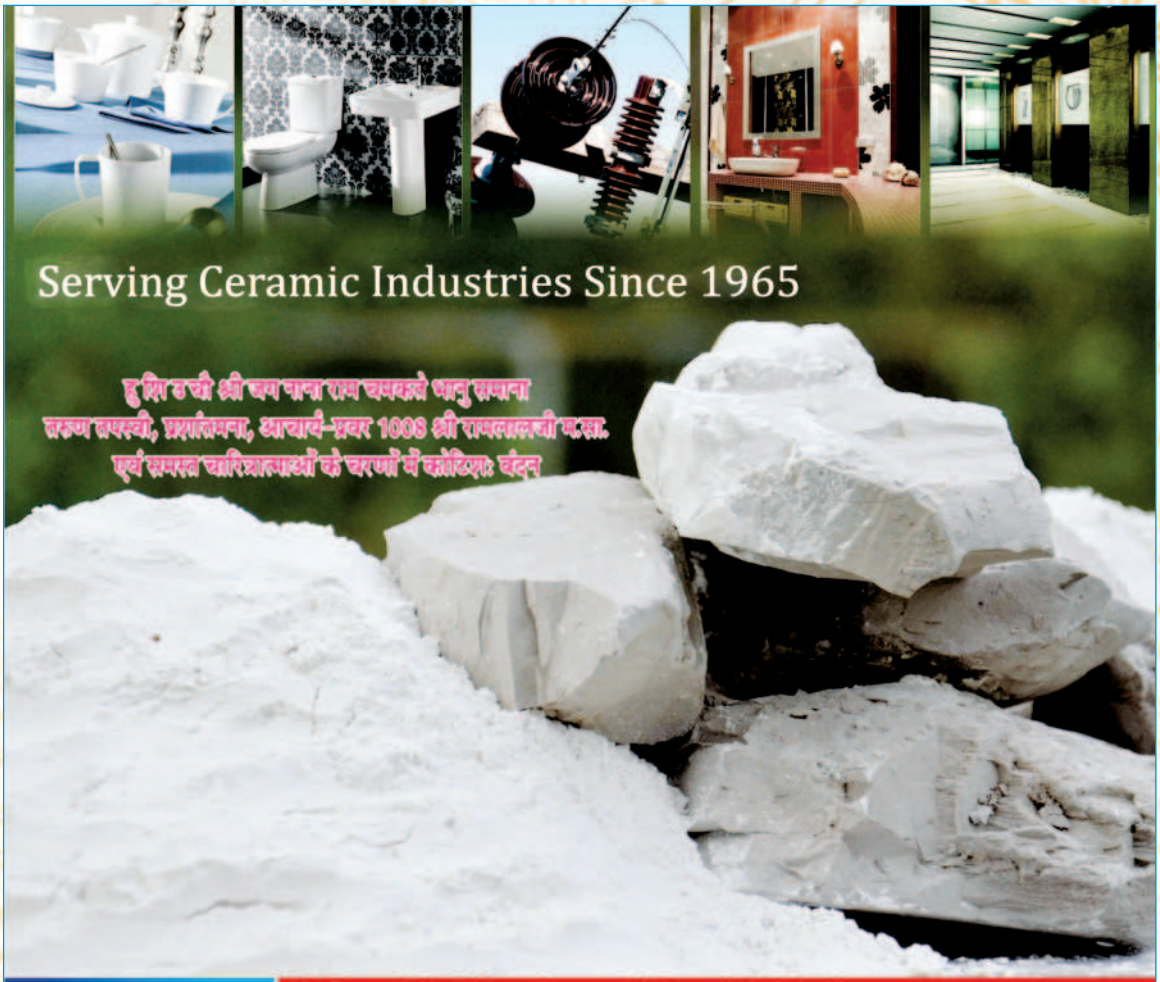

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT

PATIENT ROOM

RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)
वाचनालय हेतु (केवल भारत में)	
वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	news@sadhumargi.com
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond Duroflex

Diamond DUROLON

DURO RING

LEAK PROOF

NSF/ANSI/CAN 61 IAPMO

ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE

U STABILIZED

Now with new M.R.O. Technology Resists high impact

IS 15778 : 2007 ISI CM/L NO : 2526149

cftri CERTIFIED

LUCALOR FRANCE

www.shandgroup.com रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261